

# JAINA INSCRIPTIONS.

# JAINA INSCRIPTIONS.

*Containing Index of Places, glossary of names of Shrdvaka Castes and Gotras  
of Gaohhas and Acharyas with dates.*

---

- Collected & Compiled

BY

**Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,**

**Vakil, High Court ; Examiner, Calcutta University ; Member, Asiatic Society of  
Bengal ; Behar & Orissa Research Society ; Sahitya Parishad, Calcutta ;  
Jaina Shwetambar Education Board, Bombay ; &c. &c.**

---

**PART I.**

**( With plates )**

**CALCUTTA,  
1918**

**Price Rs. 5/-**

---

Printed by  
**PUNDIT KRISHNA GOPAL MISHRA**,  
at the  
**B L. PRESS**  
1-2, Machuabazar Street, Calcutta Except pp 1-62  
Printed by Ramdhn Singh at the Vishvavinode Press, Azimganj.  
**AND**  
Published by V. J JOSHI, Hony Manager,  
Jaina Vividha Sahitya Shastra Mala Office, Benares City.

---

# जैन लेख संग्रह ।

कल्पिय चित्र और आवश्यक तालिकायो से युक्त ।

## प्रथम खण्ड ।

---

संग्रहकर्ता

पूरुणचन्द्र नाहर, एम. ए., वि. एल.,  
वकील, हाईकोर्ट, रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक  
सोसायटी बंगाल, रिसार्च सोसाइटी विहार-उड़िसा आदि फे  
मेंबर; विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

---

कलकत्ता

---

वीएसवत् २४४४



# THE JAIN MANUSCRIPTS.

## जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही है। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हीं के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बातें शिलालेखसे जानी जा सकती हैं वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखफर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूँ ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखतेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्ग्रेजी जर्नेल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ-दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी धुल पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहां के लेख देखे बिना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि उसका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूँ। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूँ, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा खल्य प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से शीघ्र क्षय हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं:—

- १ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।  
 ३ । कुर्शिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।  
 ५ । आचार्योंके नाम, शिष्योंके नाम, पहावली ।  
 ६ । देश, नगर, ग्रामोंके नाम । ७ । कारिगरोके, खोदनेवालोंके नाम ।  
 ८ । राजाओंके, मंत्रियोंके नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरके विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संबन्ध, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुझ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरीतिसे पाया नहीं जाता है:—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि "ओसवाल" ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उवर्णश [४] ऊपश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओसवाल। लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक 'ओसवाल' हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्योंके नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें बिलकुल नहीं हैं। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसी बहुतसी कठिनाइयां मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख धिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नहीं गया है।

यह "लेख संग्रह" संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुझ पाठक समझ सकते हैं; "नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।" अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हैं वहांके जैन लेखोंको प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना।

कलकत्ता }  
 ३० स० १९१५ }

निवेदक—  
 पूरणचन्द नाहर।

# सूचीपत्र ।

पत्रांक

पत्रांक

## अजिमगंज [ मुर्शिदाबाद ]

## कलकत्ता

सुप्रतिनाथजीका मन्दिर	...	...	१
पद्मप्रभुजीका	...	...	३
नेमिनाथजीका	...	...	४
चिंतामणिजीका	...	...	५
संभवनाथजीका	...	...	६।२१
शांतिनाथजीका	...	...	७
सांबलीयाजीका	...	...	८
राय बुधसिंहजी का घर दे०	...	...	७

धर्मनाथ स्वामीका मंदिर	...	...	२२।६४
महावीर स्वामीका	...	...	२७
चंद्रप्रभुजीका	...	...	२८
शीतलनाथजीका	...	...	२६
माधोलालजीका घर दे० ( बड़तला )	...	...	३०
माधोलालजीका घर दे० ( मुर्गिहट्टा )	...	...	३१
जीवनदासजीका घर दे०	...	...	३१
पन्नालालजीका घर दे०	...	...	८५
आदिनाथजीका देरासर	...	...	३१।६३

## बालूचर [ मुर्शिदाबाद ]

## चंपापुरी [ भागलपुर ]

आदिनाथजीका मन्दिर	...	...	८
विमलनाथजीका	...	...	१०
संभवनाथजीका	...	...	१२
सांबलीयाजीका	...	...	१५
दादाजीकास्थान	...	...	१७
रायघनपतसिंहजीका घर दे०	...	...	१४
किरतचन्दजीका घर दे०	...	...	१५

वासुपूज्यजीका मंदिर	...	...	३२
---------------------	-----	-----	----

## नाथनगर ( भागलपुर )

सुखराजजीका घर देरासर	...	...	३०
भागलपुर	...	...	३८

## काकंदी [ विहार ]

सुविधिनाथजीका मंदिर	...	...	४१
---------------------	-----	-----	----

## क्षत्रिय कुंड [ विहार ]

महावीर स्वामीजीका मंदिर	...	...	३१
-------------------------	-----	-----	----

## गुणया [ विहार ]

श्रीमहावीरजीका मंदिर	...	...	४२
----------------------	-----	-----	----

## पावापुरी [ विहार ]

समवसरण	...	...	४४
जलमंदिर	...	...	४५
गांव मन्दिर	...	...	४५

## कठगोला [ मुर्शिदाबाद ]

आदिनाथजीका मन्दिर	...	...	१७
-------------------	-----	-----	----

## सहिमापुर [ मुर्शिदाबाद ]

नगत्शेठजीका मन्दिर	...	...	१८
--------------------	-----	-----	----

## कासिमबाजार [ मुर्शिदाबाद ]

नमिनाथजीका मंदिर	...	...	१९
------------------	-----	-----	----

## दस्तुरहाट [ मुर्शिदाबाद ]

जीर्ण मन्दिर	...	...	२१
--------------	-----	-----	----

विहार		पत्रांक	चिकागो [ अमेरीका ]	
भथियान महालाका मन्दिर	...	५२	डा० कुमार स्वामी ...	६६
चंद्रप्रभुजीका	...	५४	इङ्ग्लैण्ड	
आदिनाथजीका	...	५५	मे० लुवाट	५५
राजगृह			जयपुर [ राजपूताना ]	
पार्श्वनाथजीका मंदिर	...	५८	ज्यापारिभोंके पासकी मूर्तिपर	६७
विष्णुगिरि	...	६४	अजमेर [ राजपूताना ]	
रत्नगिरि	...	६५	बारलीं गाव से प्राप्त पत्थर	५५
हृदयगिरि	...	६६	बनारस [ काशी ]	
सूर्यगिरि	...	६७	सुतदोला का मंदिर	६८
बैमार गिरि	...	५५	बहुजीका	६६
कुंडलपुर			पटनीटोलेका	५५
आदिनाथजीका मंदिर	...	७०	सुखीजीका	५५
पटना			रामचन्द्रजीका	१००
पार्श्वनाथजीका मंदिर	...	७१	प्रतापसिंहजीका	१०२
दादाबाड़ी	...	८३	कुशलाजीका	१०९
स्थूलभद्रजीका मंदिर	...	८२	सिंहपुरी [ बनारस ]	
शेठ सुदर्शनजीका	...	८३	कुशलाजीका मंदिर	१०३
समेत शिखर			मिर्जापुर	
भद्रजुवालुका	...	८४	पद्मायती मंदिर	५५
मधुवन	...	५५	धनसुखदासजीका	१०५
दोंकके चरणों पर	...	८६	दिल्ली	
तेजपुर [ आसाम ]			बैलपुरीका मंदिर	१०६
रायमेघर/जजी का मंदिर	...	६३	नवघरेका	१०८
म्युनिक [ जर्मनी ]			बिरेखानेका	११६
जादुघर	...	६६	छोटे दादाजीका	१२३
			हजारामलजीका घर वै०	१२५

पत्रांक

पत्रांक

लैंजमेंट ।

शत्रुंजय पर्वत ।

शौही पार्श्वनाथजी का मन्दिर	...	...	१२४
सम्भवनाथजी का	...	...	१२७
दीदाजीकी छत्री	...	...	१३३

सांकरचन्द प्रेमचन्दकी टुंफ	...	...	१६३
प्रेमामाई हेमामाईकी	...	...	१६१
प्रेमचन्द मोदीकी	...	...	१६३
शेठ घावहामाईको	...	...	१६३
शेठ मोतीशाको	...	...	१६४
मूल ( आदिश्वरकी )	...	...	१६

जयपुर ।

यति श्यामलालजीके पास मूर्तियों पर	...	...	१३४
यति किशमचन्दजीके पास मूर्तियों पर	...	...	१३५

राणकपुर ।

जोधपुर ।

महोवीर स्वामीजीका मन्दिर	...	...	१३६
केसरीयानाथजीका	...	...	१४१
मुनिब्रत स्वामीजीका	...	...	१४३
धर्मनाथजीका	...	...	१४४

आदिनाथजीका मन्दिर	...	...	१६५
-------------------	-----	-----	-----

सादही ।

दिनाजपुर ।

चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर	...	...	१४६
-----------------------------	-----	-----	-----

पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	...	१७२
-----------------------	-----	-----	-----

धुलैवा रिखभदेव ( मेवाड )

केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	...	१४६
दादाजीकी छत्री	...	...	१५१
पंगलीयाजी	...	...	१५१

जैनमन्दिर	...	...	१७
-----------	-----	-----	----

बालोतरा ।

पालीताणा ( काठियावाड )

मोतीसुखीयाजीका मन्दिर	...	...	१५२
शेठ नरसिंह केशवजीका	...	...	१५३
शेठ नरसिंह नाथाका	...	...	१५४
शेठ कस्तुरचन्दजीका	...	...	१५४
गोडी पार्श्वनाथजीका	...	...	१५५
यति करमचन्द हेमचन्दका	...	...	१५६
बड़ा मन्दिर ( गांवमें )	...	...	१५६
दिगम्बरीका पञ्चायती	...	...	१६३

शीतलनाथजीका मन्दिर	...	...	१७४
--------------------	-----	-----	-----

केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	...	१७६
-----------------------	-----	-----	-----

वाड़मेड़ ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका	...	...	१७६
-------------------------------	-----	-----	-----

यति इन्द्रचन्दजीका उपाश्रय	...	...	१७७
----------------------------	-----	-----	-----

गोपीका	...	...	१७७
--------	-----	-----	-----

मेहता ।

आदिनाथजीको मन्दिर	...	...	१८७
-------------------	-----	-----	-----

पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	...	१८९
-----------------------	-----	-----	-----

घासुपूज्यस्वामीका	...	...	१८९
-------------------	-----	-----	-----

धर्मनाथजीका	...	...	१८९
-------------	-----	-----	-----

आदिश्वरजीका मन्दिर	...	...	१८९
--------------------	-----	-----	-----

	पत्रांक		पत्रांक
चिन्तामणिपार्श्वनाथका ,,	१८७	केकिंद ।	
कडलाजीका ,,	१८६	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	२२२
महावीरजीका ,,	१८९	सेवाडी ।	
तपगच्छका उपाश्रय	१८९	महावीरजीका मन्दिर	२२६
<b>ओसिया ।</b>		सांडेराव ।	
महावीर स्वामीका मन्दिर	१६२	शान्तिनाथजीका मन्दिर	२२६
सच्चियाय माताका ,,	१६८	नाना ।	
हुंगरीके चरण पर	१६६	जैन मन्दिर	२२६
<b>पाली ।</b>		लालराई ।	
नौलखा मन्दिर	२०४	जैन मन्दिर	२३१
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	२०५	हटुंदी	
लोढारो वासका ,,	२०५	महावीरजीका मन्दिर	२३३
शान्तिनाथजीका ,,	२०५	माताजीका ,,	२३३
सोमनाथजीका ,,	२०५	खण्डरमें मिला हुआ पत्थर पर	२३४
<b>नाडोल ।</b>		जालोर ।	
आदिनाथजीका मन्दिर	२०६	महावीरजीका मन्दिर	२४१
ताम्र शासनमें	२०८	चोमुखजीका ,,	२४३
<b>नाडलाई ।</b>		तोपखानामें	२३८
अदिनाथजीका मन्दिर	२१२	हरजी ।	
नेमिनाथजीका ,,	२१७	जैन मन्दिर	२४३
<b>कोट खोलंकी ।</b>		जून ।	
जैन मन्दिर	२१८	जून बेडा ।	२४५
<b>घाणेराव ।</b>		जून बेडा ।	२४५
जैन मन्दिर	२१९	नगर गांव ।	२४७
<b>बेलार ।</b>		जैन मन्दिर	२४७
आदिनाथाजीका मन्दिर	२१९	जैन मन्दिर	२४७
<b>फलोदी ।</b>		जैन मन्दिर	२४७
बड़ा जैन मन्दिर	२२१		

पत्रांक				पत्रांक			
जैन मंदिर	सांचोर	...	२४८	जैन मन्दिर	वधीणा	...	२६७
जैन मंदिर	रत्नपुर	...	२४८	जैन मन्दिर	लाज-नीतोडा	...	२६७
जैन मंदिर	बिलाडा	...	२५०	जैन मंदिर	नोदिया	...	२६६
जैन मंदिर	बोहिया (भारवाड़)	...	२५०	जैन मंदिर	कोटरा	...	२६६
जैन मन्दिर	कोटार [ गोड़वाड़ ]	...	२५१	जैन मन्दिर	वश्माण	...	२६८
कुमारपालका जीर्ण मन्दिर	किराडू	...	२५१	जैन मन्दिर	लोटाना	...	२६६
जैन मन्दिर	सुंधा पहाड़ी	...	२५३	जैन मन्दिर	माकरोरा	...	२६६
जैन मन्दिर	घटियाला	...	२५६	जैन मन्दिर	धवली	...	२७०
जैन मन्दिर	पिंडवाडा	...	२६२	जैन मन्दिर	सीवेरा	...	२७०
जैन मन्दिर	वीरवाडा	...	२६५	जैन मन्दिर	जीरावल पार्श्वनाथ	...	२७०
जैन मन्दिर	बसंतगढ़	...	२६५	जैन मन्दिर	अंजारा पार्श्वनाथ	...	२७३
जैन मन्दिर	पालडी	...	२६५	जैन मन्दिर	कापडा पार्श्वनाथ	...	२७३
जैन मन्दिर	कालाजर	...	२६६	जैन मन्दिर	अलवर	...	२७४
जैन मन्दिर	कामडा	...	२६६	जैन मन्दिर	पटना म्युज्यम	...	२७७
जैन मन्दिर	उधमा	...	२६६	पाषाणके वरणी पर		...	२७७

## प्रतिष्ठा स्थान ।

				लेखांक					लेखांक
अजमेर	...	...	...	५६६	कलागर ( कालाजर )...	...	...	...	६५६
अजिमगञ्ज ( मुर्शिदाबाद )	...	...	...	८५।७६।१४२	कार्कादी	...	...	...	१७३
अतरी	...	...	...	४०	काकर	...	...	...	४८१
अलवर	...	...	...	१०००	कायषा	...	...	...	४७१
अष्टार	...	...	...	५३२	कालघरी	...	...	...	६४
अहमदाबाद	...	...	...	६६।७१।११२।३५।३६।३६।०।३।७।२।३।८२	कालुपुर	...	...	...	६६७
				४४४।५२६	कास्माबजार ( मुर्शिदाबाद )	...	...	...	८१।८४
अहिलाणी	...	...	...	४४८	कीराट कूप	...	...	...	६४२
आगरा	...	...	...	२९५।३०७।३०।६।३।१०।३।११	कोठारा	...	...	...	६५२
				३२२।४३३।५०६	कोरडा	...	...	...	१०६
आमेण	...	...	...	१२५	कहेडा	...	...	...	८९६
आरामपुर	...	...	...	३२७	खुदीमपुर	...	...	...	२२१
आचरणी	...	...	...	७६८	गणवाड़ा	...	...	...	६४७
आसलपुर	...	...	...	८५६	गंधार	...	...	...	३९१।६०८।६५३।७६६
इडर	...	...	...	६२७	गुनशिला	...	...	...	१७७।२७८।१७६।१८०
इन्द्रप्रस्थ ( दिल्ली )	...	...	...	५२६	गुल्वर ग्राम ( बड़गाँव )	...	...	...	२७१
उदयगिरि ( राजगृह )	...	...	...	२५३।२५४।२५५	ग्रेहडी	...	...	...	३
उदयपुर	...	...	...	६४५।७४४	गोरईया	...	...	...	५५४
उन्नतनगर	...	...	...	६८७	गोलकुंडा	...	...	...	७७२
उपकेश ( ओसिया )	...	...	...	१३४	गोलीषा	...	...	...	४७६
उमापुर	...	...	...	४८९	चंपकदुर्ग	...	...	...	८५०
अजुवालुका	...	...	...	३३६	चंपकनर	...	...	...	४८४
कड़ी	...	...	...	३५	चंपानगर	...	...	...	१४३।१६५
कमलमेरु	...	...	...	४८३	चंपापुरी	...	...	...	१३७।१४६।१५८
कर्पटहेटक	...	...	...	६८१	चिमणीया	...	...	...	५१०
कलकत्ता	...	...	...	८७	चुपरा ग्राम	...	...	...	६२४
कलचर्मा	...	...	...	६७४।६७५।६७६	जयनगर	...	...	...	१६३
					जलवाह	...	...	...	२७९
					जवाच	...	...	...	१६



लेखांक			लेखांक		
जाणोधारा	...	२८३	नन्दियाक ( नोंदिया )	...	६६३
जालोर	...	८३७।६०५	नल	...	२८१
जावरनगर	...	७१५	नलीतपुर	...	६५४।६५५
जावालीपुर	...	८६६।६००	नागपुर	...	५८०।६१३
जीरावला पार्श्वनाथ	...	६७३।६७६	नाणा	...	८६०
जीर्णदुर्ग	...	६७७	नापलीया	...	६
जैनगर	...	५१६	पत्तन	...	२१।५१।५४।२१।१५।५
जोधपुर	...	६१२।८२।८।८३।८		...	५०४।५४०।५५६।५६८।८।५१
झुझपू	...	१२१	पाटण	...	७१६
डिंडिला ग्राम	...	९६६	पल्लिका	...	८०६।८१३।८१४।८५।८३२
ढेढेया	...	५६८	पालिका	...	८३०
तिजारा	...	४२१	पाली	...	८२५।८२६।८२७
ईतराई	...	७४	पल्यपद्र	...	६०६
दधालीया	...	४६६	पाटलिपुत्र	...	३०५
दिल्लि	...	५२७	पाटलिपुर	...	३२०।३२८।३३०
दिवसा	...	६२४	पाडली	...	३२८
द्विपबन्दर	...	१३०	पाडलीपुर	...	३१३।३१४
देवक पसन	...	६६६।६७०	पडलीपुर	...	२७३
धंधू का	...	४	पटना	...	३१५
धमडका ( कच्छ )	...	१२३	पाटझलि ( पालड़ी )	...	९५५
धांदू	...	४२३	पाटरी	...	४२२
धार	...	६२१	पानविहार	...	३६
धुलेवा	...	६२७ ६५६	पावापुरी	...	१८४।१९०।१९२।१९७।२०६।२१०
नडुल	...	८३७।८३६।८४५।८६२	पींडरवाड़ा	...	७३।६४५।६४६।६४८
नहल	...	६४३।६४४	पीडवाड़ा	...	६४६।६५०।६५१
नडूल डानिका	...	८४१।८४३।८४६।८५७	प्रयाग	...	१४५
नडुलाइ	...	८४०।८५४।८५६।८५८	फलवर्जिका	...	८७०।८७१
नाडलाई	...	८४७			
नन्दकुलवती	...	८५२			

				लेखांक					लेखांक
बम्बई	...	...	...	३७०, ३७४	मानपुर	...	...	...	३००
बरागाम	...	...	...	२१७	मालवक	...	...	...	११
बहादुरपुर	...	...	...	४८५	माल्यवन	...	...	...	१५२
बहुविध	...	...	...	६३९	माल्हेणसू	...	...	...	१२२
बालुचर ( मुर्शिदाबाद )	...	३१, ३२, ४५, ४६, ३३८	...	...	मिथिला	...	...	...	१६६, १६८
बाहडमेर	...	...	...	६०८	मिरजापुर	...	...	...	२३३
बौकानेर	...	...	...	१३८	मुंजिगपुर	...	...	...	८४६
बीलाडा	...	...	...	९३७	मुर्शिदाबाद	...	५६, ६७, १३८, १४७, ६९६	...	...
बूचूयाणा	...	...	...	१११	मेरता ( मेडता )	...	४५५, ५४३, ७५०, ७५४, ७८३, ७८४, ७८७, ८२६, ८२६, ९०६,	...	...
बेगमपुर ( पटना )	...	...	...	३३२, ३३३	मेलीपुर	...	...	...	६६५
भट्टनगर	...	...	...	५७	मोड़	...	...	...	७६५
भरतपुर	...	...	...	६६२	मोरकरा	...	...	...	८४२
भाणावट	...	...	...	७७१	रणसण	...	...	...	५७४
भारठा	...	...	...	६६८	रतनगिरि ( राजगृह )	...	२४६, २५०, २५१, २५२	...	...
भिन्नमाल	...	...	...	५४१	रत्नपुर	...	...	...	६३५, ६३६
मिहमाल	...	...	...	६५७	राजगृह	...	...	...	५४०
मुडपह	...	...	...	६३८	राजपुर	...	...	...	५३६
मेया	...	...	...	१०४	राणपुर	...	...	७००, ७१३, ७१४, ७१६	...
मंडपदुर्ग	...	...	...	११८	रोहिन्सकूप	...	...	...	६४५
मंडपाचल	...	...	...	७०७	लच्छवाड	...	...	...	१७४
मंडोवर	...	...	...	६४५	लींवाडी	...	...	...	१८, २८५
मंडुपे	...	...	...	४२०	वंगुद्रा	...	...	...	११७
मनेर	...	...	...	३२१	वघणोर	...	...	...	२९४
माफ्रोडा	...	...	...	६७७	वडनगर	...	...	...	५७७
माडपा	...	...	...	६४१	वरजा	...	...	...	१३२
मानंदपुर	...	...	...	१६६	वलहरा	...	...	...	५६१

लेखांक					लेखांक				
बलहारी	...	...	...	६६३	सनीपुर	...	...	...	६३८
बसंतनगर	...	...	...	३६६	सद्रंछलिया	...	...	...	४३२
बसंतपुर	...	...	...	६५४	सम्मेदशिखर	...	...	३५५, ३६६, ४५६	
बहडा	...	...	...	६२३, ६२५	स्वर्णगिरि ( जालोर )	...	...	६०३, ६०४	
बाकपत्राकानगर	...	...	...	७४३	सह्याला	...	...	६६०	
बाघसीण ( बघीणा )	...	...	...	६५९	स्तंभतीर्थ	२५, ११४, ६०५, ६५०, ७१०, ७११, ७६६			
बाराणसी	...	...	...	३३५, ३४५	सांवोसण	...	...	७७	
बासहड	...	...	...	८८०	स्याहजानाबाद ( दिल्ली )	...	...	५२७	
बिक्रमनगर	...	...	...	७६५	सिरुत्रा	...	...	१५	
बिक्रमपुर	...	...	...	६२७	मिचना	...	...	४८३	
बिपुलगिरि ( राजगृह )	...	...	...	२४५	सिंहपुर	...	...	४२५	
बिपुलाचल ( राजगृह )	...	२३६, २४६, २४७, २४६	...	२४६	सीणोत	...	...	१२६	
बीजापुर	...	...	...	६०१	सीणुरा	...	...	२८०, ४८४, ५५६	
बीरमग्राम	...	...	...	८४६	सीतामढी ( मिथिला )	...	...	१६६	
बीरमपुर	...	...	७२३, ७२४, ८२२	सीवेरा	...	...	८७२		
बीरपल्ली	...	...	...	६६६	सीरोही	...	...	११८	
बीरवाडा	...	...	...	६५३	सेरपुर ( ढाका )	...	...	३२६	
बीसलनगर	...	...	...	६४६, ६७७	हस्थिकुंडि ( हथुंडि )	...	...	८६७, ८६८	
बीसाडा	...	...	...	८३३, ८३४	क्षत्रियकुंड	...	...	२०८, २०९	
बुमुज	...	...	...	२४					
बेदर	...	...	...	१०५					
बैभारगिरि ( राजगृह )	...	२५७, २५८, २६०, २६३	...	२६४, २६५, २६६, २६७					
ब्यवहारगिरि ( राजगृह )	...	२६१, २६२, ५२५	...	७४५					
शंडली	...	...	...	८७६, ८६४, ८६५					
शमीपाटी	...	...	...	८४१					
शीलवंदडी	...	...	...	८८१, ८८२, ८८३, ८८४					
षंढेरक	...	...	...	६३२					
सत्यपुर	...	...	...						

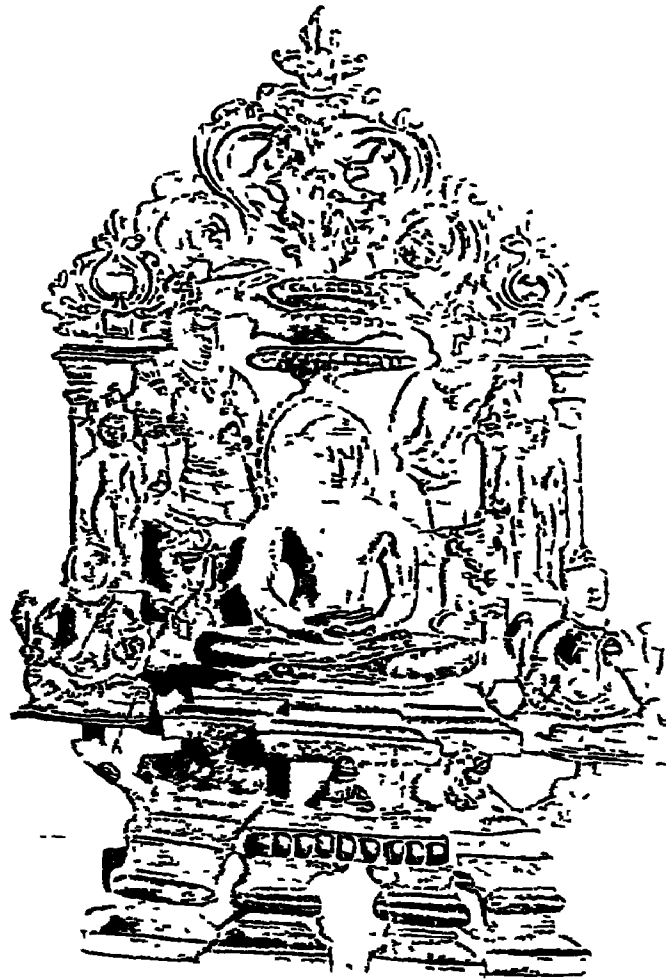
लेखांक

लेखांक

बम्बई	...	...	...	३७०, ३७४
बरागाम	...	...	...	२१७
बहादुरपुर	...	...	...	४८५
बहुविध	...	...	...	६३९
बालुचर ( मुर्शिदाबाद )	...	३१, ३२, ४५, ४६, ३३८	...	
बाहडमेर	...	...	...	६०८
बीकानेर	...	...	...	१३८
बीलाडा	...	...	...	९३७
बूवूयाणा	...	...	...	१११
बेगमपुर ( पटना )	...	...	...	३३२, ३३३
भट्टनगर	...	...	...	५७
भरतपुर	...	...	...	६६२
भाणावट	...	...	...	७७१
भारठा	...	...	...	६६८
भिक्षमाल	...	...	...	५४१
भिल्लमाल	...	...	...	६५७
भुडपत्र	...	...	...	६३८
भैया	...	...	...	१०४
भंडपदुर्ग	...	...	...	११८
भंडपाचल	...	...	...	७०७
भंडोवर	...	...	...	६४५
भंडुपे	...	...	...	४२०
भनेर	...	...	...	३२१
भाफोडा	...	...	...	६७०
भाडपा	...	...	...	६४१
भानंदपुर	...	...	...	१६६

मानपुर	...	...	...	३००
मालवक	...	...	...	११
माल्यवन	...	...	...	१५२
माल्हेणसू	...	...	...	६२२
मिथिला	...	...	...	१३६, १६८
मिरजापुर	...	...	...	२३३
मुंजिगपुर	...	...	...	८४६
मुर्शिदाबाद	...	५६, ६७, १३८, १४७, ६९६	...	
मेरुता ( मेडता )	...	४५५, ५४३, ७५०, ७५४, ७८३, ७८४, ७८७, ८२६, ८२६, ९०६	...	
मेलीपुर	...	...	...	६६५
मोड	...	...	...	७६५
मोरकरा	...	...	...	८४२
रणसण	...	...	...	५७४
रतनगिरि ( राजगृह )	...	२४६, २५०, २५१, २५२	...	
रत्नपुर	...	...	...	६३५, ६३६
राजगृह	...	...	...	५४०
राजपुर	...	...	...	५३६
राणपुर	...	७००, ७१३, ७१४, ७१६	...	
रोहिन्सकूप	...	...	...	६४५
लच्छवाड	...	...	...	१७४
लीवही	...	...	...	१८, २८५
वशुद्रा	...	...	...	११७
वघणोर	...	...	...	२८४
वडनगर	...	...	...	५७०
वरजा	...	...	...	१३२
वलहरा	...	...	...	५६१

लेखांक					लेखांक				
बलहारो	...	...	...	६६३	सनीपुर	...	...	...	६३८
बसंतनगर	...	...	...	३६६	सद्रंछलिया	...	...	...	४३२
बसंतपुर	...	...	...	६५४	सम्मोदशिखर	...	...	३५५, ३६६, ४४६	
बहडा	...	...	...	६२३, ६२५	स्वर्णगिरि ( जालोर )	...	...	६०३, ६०४	
बाकपत्राकानगर	...	...	...	७४३	सहयाला	...	...	...	६६०
बाघसीण ( बाघीणा )	...	...	...	६५९	स्तंभतीर्थ	२५, ११४, ६०५, ६५०, ७१०, ७११, ७६६			
बाराणसी	...	...	...	३३५, ३४५	सांवीसण	...	...	...	७०
बासहड	...	...	...	८८०	स्याहजानाबाद ( दिल्ली )	...	...	...	५२७
बिक्रमनगर	...	...	...	७६५	सिखत्रा	...	...	...	१५
बिक्रमपुर	...	...	...	६२७	सिखना	...	...	...	४८३
बिपुलगिरि ( राजगृह )	...	...	...	२४५	सिंहपुर	...	...	...	४२५
बिपुलाचल ( राजगृह )	...	२३६, २४६, २४७, २४६			सीणोत	...	...	...	१२६
बीजापुर	...	...	...	६०१	सीणुरा	...	...	२८०, ४८४, ५५६	
बीरमग्राम	...	...	...	८४६	सीतामढी ( मिथिला )	...	...	...	१६६
बीरमपुर	...	...	७२३, ७२४, ८२२		सीवेरा	...	...	...	९७२
बीरपल्ली	...	...	...	६६६	सीरोही	...	...	...	११८
बीरवाडा	...	...	...	६५३	सीरपुर ( ढाका )	...	...	...	३२६
बीसलनगर	...	...	...	६४६, ६७७	हस्थिकुंडि ( हथुंडि )	...	...	...	८६७, ८६८
बीसाडा	...	...	...	८३३, ८३४	क्षत्रियकुंड	...	...	...	२०८, २०९
बुमुज	...	...	...	२४					
बेदर	...	...	...	१०५					
बैभारगिरि ( राजगृह )	...	२५७, २५८, २६०, २६३							
		२६४, २६५, २६६, २६७							
ब्यवहारगिरि ( राजगृह )	...	२६१, २६२, ५२५							
शंडली	...	...	...	७४५					
शमीपाटी	...	...	८७६, ८६४, ८६५						
शीलवंदडी	...	...	...	८४१					
पंडेरक	...	...	८८१, ८८२, ८८३, ८८४						
सत्यपुर	...	...	...	६३२					



ಶ್ರೀ ಶಿವಲಿಂಗವೇಂದ್ರ  
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿಸಿದ  
ವಿಷ್ಣುವೇಂದ್ರ

Metal Image (Ardha Padmāsana) with inscription in Southern Character (back), in possession of the Author.

# JAIN INSCRIPTIONS



## जैन लेख संग्रह ।

प्रान्त - पूर्व ।

जिला मुर्शिदाबाद । स्थान अजिमगञ्ज ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर \* ।

धातुर्यों के मूर्ति पर ।

[ 1 ]

ॐ ॥ श्री सरवाह गच्छे असामूकेन कारित ॥ संतु १११० × ।

\* नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है । स्वर्गीया श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलालचन्दजी तत्पुत्र संग्रह कर्त्ताके परम पूज्य पिता राय सेताबचन्द नाहार बाहादुर हैं । पूर्व मन्दिर गङ्गास्रोतसे नष्ट हो जानेसे आप यह नवीन चैत्य संवत् १९५४ में निर्माण करवाया है । प्रथम मन्दिरका लेख- ॥ श्री ॥ सं १९१३ मिति वैशाख सुदि ५ शुक्रवासरे श्री जिन भक्ति सूरि साखायां उ० श्री आनन्द बल्लभ गणि । तत् शिष्य पं । प्र । सदालाभ मुनि उपदेशात् श्री अजिम- गञ्ज वास्तव्य नाहर श्री खड्गार्सिंहजी तत्पुत्र श्री उत्तमचन्दजी तत्भार्या श्री मयाकुमर एषः श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संघाय समर्पितश्च विधिना सतां ॥ जं । यु । प्र । श्री जिन सौभाग्य सूरिजीं विजय राज्ये ॥ श्री रस्तुः ॥ कल्याणमस्तुः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ १ ॥

× यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्तिके पीछे खुदा भया है, अक्षर बहोत प्राचीन हैं । मुसल्मानोंने चित्तोर दरुल करनेके पूर्वमें यह मूर्ति वहां पर थी ।

[ 2 ]

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गढे प्रग्वाट ज्ञातीय व्य० उदा चार्था-  
चत्त तत्पुत्र जोला नार्या डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मूंडनेन श्री गहेश श्री मेरुतुंग सूरिणासुप-  
देशेन ज्ञाता श्रेयोर्थ श्री पार्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ।

[ 3 ]

संबत १४७९ वर्षे पोष वदि ५ शुक्रे मेहनी वास्तव्य श्रीमाल ज्ञाती श्रे० प्रतापसींह  
ज्ञा० सोहगदे सुत झुदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विंबं कारितं पूर्णिमा गहं  
प्रतिष्ठितं श्री सूरि जिनबल्लज सूरि ।

[ 4 ] <sup>(अ. १२५)</sup>  
अशुभदाव २

सं० १५१० व० फा० शु० १२ उकेश बंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रजला सु०  
साजण ज्ञा० जइसिरि पु० बेढा ज्ञा० कणसिरि बेता ज्ञा० लषमसिरि पुत्र ३ काढु खेमधर  
देवराज ज्ञा० चांडू सा० हापाकेन ज्ञा० ३ गूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे  
श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पदः कारितः तथा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिजिः प्रतिष्ठितः ।

[ 5 ] <sup>(अ. १२५)</sup>  
अशुभदाव २

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञाती नाहर गोत्रे सा० लेला पु० लाघा ज्ञा०  
सोहिगि पु० चांपा साधू लादा सहितैः पितु श्रेयसे श्री श्रेयांस नाथ विंबं का० प्रति० श्री  
धर्मघोष ग० श्री विजयचंद्र सूरि पदे ज० श्री साधू रत्नसूरिजिः ।

[ 6 ] <sup>(अ. १२५)</sup>  
अशुभदाव २

संबत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० व्यव० आका नार्या रातखदे  
सुत लांवाकेन ज्ञा० नानू नापा निमि । श्री शांतिनाथ विंबं कारा० प्र० पिप्फ० श्री मुनि सिंधु  
सूरि पदे श्री अमरचंद्र सूरिजिः ॥ नापलिया ग्रामे ।



संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे । सी० श्री राजा चा० रजमलदे पु० दोसा ठाकुर धना  
हाथी लीवा हाथा चा० हरषमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतैः श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं  
पितं श्री संडेर गळे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० दोमासुंदर पडे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

✓ [ 8 ] कृष्णनाथ ( गुरुदेवता ) ३

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे उकेश वंशे लूणीया गोत्रे साः शीमा पुत्र साः  
संधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनचक्र  
सूरिजिः खरतर गळे ।

[ 9 ]

संवत् १५१९ वर्षे बैशाख शु० ३ श्रीलाल ज्ञातीय सा० लाईयाकेन चार्या गांगी पुत्र  
हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रमाई श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गळे  
श्री रत्नशेखर सूरि पडे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । धंधूका बास्तव्य ॥

✓ [ 10 ]

संवत् १५५० वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ ओकेश ज्ञातीय चारडा सुत मेहा चार्या पदमाई  
श्रेयसे जणसाळी पताकेन श्रीवासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्रीजिनहंस सूरिजिः ।

[ 11 ]

संवत् १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्तमाने मालवक देस ॥ उपकेस ज्ञातौ सा० देवसी  
चा० देसा पु० सा० सागा चा० रूपणं पुत्र जसपाल चा० लक्ष्मी पुत्र रत्ना विंबं प्रतिष्ठितं ।  
तपा गळे श्री हेमवल ( विमल ) सूरिजिः ॥

संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर  
जहारक गणेश ज्ञा । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर ज्ञा श्री जिन सौजाग्य सूरिभिः कारितं च  
श्रीमाल बंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य जार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थ ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

संवत् १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल झाती खिगा गोत्रे समदडीया उडकेण  
सुहडा ज्ञा सुहागदे पु० कम्भाकेन ज्ञा कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन  
स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गणेश श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक  
सूरिभिः ।

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ उंसवाल झाती कटारीया गोत्रे सा० सरवण  
ज्ञा राणी सुत सा० सिंघा ज्ञा सोमसिरि सु० सा० आडु नाझा जार्या विरणि सुत सा०  
पुनपाल सा० सोनवाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सुदि ७ प्राग्वाट झाण व्यव० षेता जार्या 'मदी सुत' व्य०  
जोजाकेन ज्ञा राजू प्रातृ राजः रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंबं  
का० प्र० तपागठे श्री हेमविजल सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः सिद्धा वास्तव्य ।

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० जामे जवाळ वास्तव्य हुवड झातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

दो० स० हेमाकेन ज्ञा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्री तैजरत्न सूरिनिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[ 17 ] अक्षरान्त ५

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उशवाल ज्ञातीय जण्फारी गोत्रे सा० गेढहा पु० सो० पी ज्ञा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अजिनंदन विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गण्डे ज्ञा० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिनिः ।

[ 18 ]

संवत् १५२५ वर्षे वै० व० ११ बुधे लांवडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० बीमसी ज्ञा० वानू पुत्र व्य० गणमा ज्ञा० वाबू पुत्र व्य० केढहाकेन ज्ञा० मानू बृद्ध ज्ञा० घूघा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुब्रत स्वामी चतुर्दशति पट्टे कारितः प्रतिष्ठितः ॥ \* वज्रगत चांइ सगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंबदणीक \* गण्डे प्रतिष्ठा कारिता । \* ( अक्षर अस्पष्ट है ) ।

[ 19 ]

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रिं दली० वंश दुह्वह गोत्रे उ० पाट्टणमीकेन पु० उ० कर्णसी उ० उजयचंद उ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ विंबं कारितं श्री खरतर गण्डे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सुरयस्तपट्टे श्री जिनहर्ष सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

[ 20 ] अक्षरान्त ५

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० बटा ज्ञा० बालहदे सु० कृदा ज्ञा० पट्टे सु० तिरा तिरा आंवा सह लषा युतेन श्री पद्मप्रभु विंबं कारितं उकेश गण्डे ककुदा चार्थ संताने ज्ञा० श्री देवगुप्त सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥

( ६ ) .

[ 21 ]

संबत १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य साण सांडा जार्या लषमाइ सुत वीर पालेन जार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गहाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिश्वरं नंदतात् ।

[ 22 ]

॥ रौप्य के मूर्ति पर ॥ .

संबत १७३३ का जैष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिर्थीका उस वंशे दुधे-  
डिया गोत्रे बाबु हर्षचंद तत्पुत्र बाबु बिसनचंडेन कारितं पुनमिया विजय गळे श्री शांति  
सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री संजवनाथजी का मंदिर ॥

[ 23 ]

संबत १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुण ३ गुरौ दिने जण ज्ञातीय श्री वरलक्ष गोत्रे नाथु संताने  
राजा जार्या राजलदे सुत सह सावलू राणा हुदा श्री मल्लयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र  
प्रज स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहज्जणे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि  
पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिजिः शुभं ॥

[ 24 ]

संबत १५४६ वर्षे माघ सुण १० रवौ श्री श्रीमाल ज्ञाण संण चूजच जार्या संण जरमादे  
सुत संण समरसी जार्या धनाइ सुण राण अर्जन केन जार्या अहिवदे पुण संण राणा शाणा  
प्रण कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंबं कारिण प्रतिण श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर  
सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिजिः । वुयज आम ॥

( ७ )

[ 25 ]

संबत १५६३ वर्षे माह बदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघु शाषायां । व्य०  
केसव जा० जरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । त्रा० व्य० आसाकेन चार्या अमरादे जातृ  
व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सुरिजिः श्री  
स्तम्भ तीर्थे । कृतवपुर बास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

[ 26 ] शुभदाव ७

संबत १५७७ वर्षे बैशाख सुदि ७ सोमे जस्वाल ज्ञातीय सूरणा गोत्रे साह शिवदास  
जिनदासकेन गृहे चार्या नाई नारिग सुत जातृ राजपाल सहितेन मातृ नारिग श्रेयोर्थ श्री  
कुंथुनाथ विंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारापित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गह्वे नंदिवर्द्धन  
सुरि पदे नयचंद सुरिजिः ॥

[ 27 ]

संबत १७०० वर्षे फागुण सु० १२. — — — — — गह्वे चट्टारक शुभकीर्ति उपदे-  
सात् अत्ताल ज्ञाती गोपल गोत्रे सं । दोर राज चार्या सेदल पुत्र सं० चेरह राज चार्या जीरी  
पुत्र बालूमणी निलं प्रणमंति ॥

[ 28 ]

॥ श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ॥

संबत १५१० वर्षे पौ० सु० १५ शुके उपकेश ज्ञातीय फ० शिवा जा० प्रीमखदे सुत फ०  
रामाकेन जा० आसु प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री तपा  
गह्वे नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सुरिजिः ॥

[ 29 ]

शुभदाव ७

॥ राय बुधसिंहजी दुधेड़िया का घरदेरासर ॥

संबत १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश बंशे सेठि गोत्रे श्रे० सीधरेण जा०

बिरी सुब्रूणी पु० चावरसिंह । जटादि युतेनं स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंशं का० प्र० श्री खर  
तर गङ्गे श्री जिनचंद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ।

॥ श्री सांवलियाजी का मंदिर - रामबाग ॥

[ 30 ] मुर्शिदाबाद १४

संबत १५४६ माघ बदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाख सु० सा० दासू चा० छाडो  
नाम्न्या पु० सिवराज चार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री  
अजितनाथ विंशं का० प्र० उपकेश गङ्गे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिजिः ॥

जिला - मुर्शिदाबाद । स्थान - बालूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[ 31 ] <sup>बालूचर</sup> (मुर्शिदाबाद) ४

पत्थरों परका लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत्त्रिक्रमादित्य राज्यात् संबत १७४५ मिते । श्री शाखिवाहन  
शकाब्दाष्टके १७१० प्रवर्त्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे  
श्री तपगङ्गाधिराज चट्टारक श्री विजय जैनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुरं वास्तव्य  
तंजलानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धम्मचार धुरंधर साहजी श्री केशरी  
सिंहजी तस्यचार्या धर्म कर्मणि रता बीबी सरूपोजी पं । श्री चावविजय गणिरुपदेशात् ।  
खगृह जिन विंशं स्थापनार्थं ॥ बालोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं चाव  
विजय पं गंजीर विजय गणिजिः । यावत्वरासुमेरोद्दि । यावन्नैलोक्य चाखरं । तावत्तिष्ठतु  
प्रासादं निर्विघ्नन्तु सुनिश्चलं ॥ १ ॥ क्षिपिकृतं पं चूपविजयेन ।

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुजांवर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर विज-  
योर्द्धित ज्ञान लक्ष्मीः ॥ यस्योपदेश वचनाय्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो वञ्चूव  
१ ॥ तत्पद्वे क्रमतोरवीव विजय जैनेन्द्र सूरिश्वर । स्तद्भ्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो वालोचरे  
डंगके ॥ श्री संघेश सहायता शुजरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज चक्ति  
वशतः कारापिनोयं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरिश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम  
श्रुमान्यः श्री रुद्धि विजयोन्नवत् ॥ ३ ॥ तच्छिव्य जाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्यं  
प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुजतः ॥ ४ ॥ जडं जवतु संघस्य जडं प्रासाद कारके  
तथा जडं तपा गङ्गे जडं जवतु धर्मिणां ॥

॥ धातुर्योपरफा लेख ॥

संवत् १४९० बैशाख सुदि ५ जार उडिया गोत्रे । सा० जौदा सुत । सा० पदाकेन पु०  
फासु रजनादि सहितेन स्वचार्या पदम श्री पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंबं श्रीहेमहंस सूरिजिः

संवत् १५१३ बै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत महीया श्रेयसे  
त्रातृ हीराकेन त्रातृज कुकूया सुतेन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रति० बृद्ध तपा पक्षे श्री  
रत्नसिंह सूरिजिः ॥

संवत् १५२० वर्षे माघ वदि ५ गुरौ ऊपकेश ज्ञातीय श्रे० तेजा जा० तेजलदे पुत्र जूव  
जा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयोर्थ संजवनाथ  
विंबं का० श्री साधू पुर्षिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्र० श्री विजयजड सूरिणा  
कडी वास्तव्यः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शुभं ३ दिने सा० अरसी जार्या रामू पुत्र सा० लूणाकेन जार्या टीसू  
अमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी  
सागर सुरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा  
सहजा सीहा जा० होरुं श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्र० श्री कारंट गच्छे श्री — सुरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमाखान्वये डण्डा गोत्रे साह श्री चंद्र  
पुत्र चौताढ्ण अजय राजा रायमल्ल आसधीर आजा जार्या केळी पुत्र सा० योगा इह्हा  
शकतन पासो नरपाल साह सहसमल्ल पुत्र जिः कीर्त्तिसिंह साह रायमल्ल पुत्र हेमा गजपति  
ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इह्हा जार्या इह्हाणदे पुत्र सहसमल्ल सीहमल्ल साह  
आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राधा शकतन जा० शकतादे पुत्र बेता जइतमल्ल । बेता  
पुत्र जैरोदास जइतमलेन राधा शकतन पुष्यार्थं, श्री शांतिनाथ चडवीस पट्ट कारित प्र०  
श्री धर्मघोष गच्छे श्री साधुरत्न सुरि पट्टे श्री कमलप्रज सुरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सुरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ बदि ५ शनि० डुगड गोत्रे सा० धीढा पु० डाडा पुत्र साटा  
हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रूढ्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं  
प्र० बृहज्ज्ठीय श्री अमरप्रज सुरिजिः ॥ शुभं जवतुः ।

संवत् १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०



कर्म सीहैन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 41 ] : काठवर ( मूर्तिदाल ) ॥

सं० १५५१ वर्षे बैशाख सुदि १३ दिने श्री लकेश वंशे सखवाल् गोत्र सा० लाला जा० लखतादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला खीला रामपाल जार्या आंदू पुत्र लोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[ 42 ]

सं० संबत १५७६ वर्षे श्री खरतर गढ जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पादह सा० लकू जा० नीप्पा रा-सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 43 ]

सं० १६५७ वर्षे वै० श्रु० ५ जौमे श्रीमाल झातीय ढोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदाल जार्या वा० ईद्राणी तांच्यां पूष्यार्थ श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्र० खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः । श्री जिनचानु सूरिणामुपदेशेन । अजाईः ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[ 44 ]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं० १६९० मि । आसोज सुदि ९ तिथो बुधवारे कू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र खडमीपत्त चि । धनपत्त उत्रसिंघ श्री आदिजिन विंवं कारापितं वा० सदासाज प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, वीर जिनं पञ्चतिर्थी । मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

संवत् १५३४ वर्षे -- शुभ ३ दिने साण अरसी जार्या रानूं पुत्र साण लूणाकेन जार्या टीसू  
प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गळे श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे साण कोहा जाण सोनी पुण साह सीहा  
सहजा सीहा जाण हीरुं श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्रण श्री कारंट गळे श्री -- सूरिजिः ।

संवत् १५९० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमाखान्वये डडडा गोत्रे साह श्री चंद्र  
पुत्र चौताडहण अजय राजा रायमह्व आसधीर आजा जार्या केखी पुत्र साण योगा इडहा  
शकतन पासा नरपाल साह सहसमह्व पुत्र चिः कीर्तिसिंह साह रायमह्व पुत्र हेमा गजपति  
ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठाण इडहा जार्या इडहणदे पुत्र सहसमह्व सीहमह्व साह  
आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जाण शकतादे पुत्र बेता जइतमह्व । बेता  
पुत्र जैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्रण  
श्री धर्मघोष गळे श्री साधुरतन सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सूरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४०३ वर्षे ज्येष्ठ बदि ५ शनिण डुगड गोत्रे साण धीढा पुण डाडा पुत्र साटा  
हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य साण रूडहा पुण रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं  
प्रण वृहज्ज्हीय श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥ शुभं जवतुः ।

संवत् १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट साण आसा जाण संसारी पुत्र साण

( ११ )

कर्म सीद्देन जा० सारू सुत गोश्व गोपा हापादि कुटुंब युतेन चातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवा का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशंखर सूरिजिः ॥

[ ४१ ]: कर्कवर ( मूर्तिपार ) ॥

सं० १५५२ वर्षे जेशाख सुदि १३ दिने श्री लकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० खाला जा० खलतादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला खीला रामपाल जार्या आंदू पुत्र खोदंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत विंवा कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गळे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[ ४२ ]

सं० संबत १५७६ वर्षे श्री खरतर गळे जाडीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पादह सा० खकू जा० नीप्पा रा—सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ विंवा का० ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ ४३ ]

सं १६५७ वर्षे वै० श्रु० ५ जौमे श्रीमाल ज्ञातीय ठोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदास जार्या वा० ईजाणी ताज्यां पूष्यार्थ श्री शांतिनाथ विंवा कारितं प्र० खरतर गळे श्री जिनचंद्र सूरिजिः । श्री जिनचानु सूरिणामुपदेशेन । अजाईः ४१ वर्षे श्री अकवर राज्ये ।

[ ४४ ]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९१० मि । आसोज सुदि ९ तिथो बुधवारे नू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र खडमीपत्त चि । धनपत्त बत्रसिंघ श्री आदिजिन विंवा कारापितं वा० सदाखाज प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिथी । मिः मिगसर सुद १ ॥ श्रीः ॥

संवत् १५३४ वर्षे -- शुभ ३ दिने सा० अरसी जार्या रानू पुत्र सा० लूणाकेन जार्या टीसु प्रमुख छुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गळे श्री लक्ष्मी सागर सुरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० होरुं श्रेयोर्य श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्र० श्री कारंट गळे श्री -- सुरिजिः ।

संवत् १५९० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमाखान्वये डडडा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौतादहण अजय राजा रायमह्व आसधीर आजा जार्या केखी पुत्र सा० योगा इह्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमह्व पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमह्व पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इह्हा जार्या इह्हाणदे पुत्र सहसमह्व सीहमह्व साह आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र षेता जश्तमख । षेता पुत्र जैरोदास जश्तमखेन राया शकतन पुण्यार्थ; श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गळे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सुरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ बदि ५ शनि० डुगड गोत्रे सा० धीढा पु० डाडा पुत्र साटा हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रूढहा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० बृहज्ज्ठीय श्री अमरप्रज सुरिजिः ॥ शुभं नवतुः ।

संवत् १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीद्देन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[ 41 ] लखनऊ ( मूर्तिदास ) ॥

सं० १५५१ वर्षे बेशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० लाला जा० लखतादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला लीला रामपाल चार्या आंबू पुत्र लोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[ 42 ]

ते संबत १५७६ वर्षे श्री खरतर गढे जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पादह सा० धकू जा० नीष्णा रा-सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० प्र० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 43 ]

सं १६५७ वर्षे वै० श्रु० ५ जौमे श्रीमाल झातीय ढोर गोत्रे सा० भरमगज चार्या बीरू सुत सा० सतीदास चार्या वा० ईझाणी ताज्यां पूष्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः । श्री जिनचानु सूरिणासुपदेशेन । अजाईः ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[ 44 ]

॥ शैष्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि । आसोज सुदि ९ तिथो बुधवारे नू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र धममीपत्त चि । धनपत्त ठत्रसिंघ श्री आदिजिन बिंबं कारापितं वा० सदासाज प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिथी । मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शुभ ३ दिने सा० अरसी जार्या रानू पुत्र सा० लूणाकेन जार्या टीसू प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० होरुं श्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्र० श्री कारंट गच्छे श्री — सूरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि ३ रवौ श्री श्रीमालान्वये डण्डा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौताढ्ण अजय राजा रायमह्य आसधीर आजा जार्या केळी पुत्र सा० योगा इह्हा शकतन पाला नरपाल साह सहसमह्य पुत्र चिः कीर्त्तिर्सिंह साह रायमह्य पुत्र हेमा गजपति उकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इह्हा जार्या इह्हाणदे पुत्र सहसमह्य सीहमह्य साह आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र बेता जइतमह्य । बेता पुत्र जैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थः श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सूरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीढा पु० डाडा पुत्र साटा हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रूढ्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० वृहज्जीय श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥ शुभं जवतुः ।

संवत् १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीद्देन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंबं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिनिः ॥

[ 41 ] : बाबूचर ( मूर्तिनाथ ) ॥

सं० १५५२ वर्षे बैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल् गोत्र सा० लाला ना० लखतादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला लीला रामपाल जार्या आंबू पुत्र सोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिनिः ॥

[ 42 ]

उं संबंत १५७६ वर्षे श्री खरतर गढे जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पादह सा० लकू जा० नीप्पा रा-सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० ज० श्री जिनहंस सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ 43 ]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ जौमे श्रीमाल झातीय ढोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदास जार्या वा० ईजाणी ताज्यां पूष्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरिनिः । श्री जिनजानु सूरिणामुपदेशेन । अजार्हः ४१ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[ 44 ]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १७२० मि । आसोज सुदि ९ तिथो बुधवारे नू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र खडमीपत्त चि । धनपत्त उत्रसिंघ श्री आदिजिन बिंबं कारापितं वा० सदाखात्र प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिथी । मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पञ्चरोपरका लेख ॥

[ 45 ]

संवत् १७४४ मिते वैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचर पुरे । ज० श्री जिनचंद्र सूरि जी  
विजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० हमाकल्याण गणिः । तच्च कुमारदि  
युतानामुपदेशतः श्री मकसूदादाद वास्तव्य समस्त श्री सङ्गेन श्री सम्भव जिन प्रासादः  
कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण बृध्यर्थम् ॥

[ 46 ]

अथ चेत्य वर्णनं । निधान कल्पैर्नवजिर्मनोरमै । विशुद्ध हेन्नः कलशैर्विराजितं ॥  
सुचारु घंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चलत्पताका प्रकरैः  
प्रकाम । माकारयन्नूनमंनिन्ध्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टबुद्धीन् । पापात्मनश्चततः  
कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीनि । ज्ञेव्यात्मजिर्चुरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्ये  
प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोके मूर्त्तिपर ।

[ 47 ] नाथ १२ / बालूचर पुरे १७४४

उं संवत् १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ उकेश बंशे ठीक गोत्रे म० सिवा ज्ञा० हर्षु पु०  
म० हीराकेण ज्ञा० रङ्गादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रज विवं कारितं श्री  
स्वरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिनिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[ 48 ]

सं १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठ० दाधू ज्ञार्या धर्मिणि पुत्र स० अचल  
दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल बीरसेन पहिराजादि युतेन स्वश्रेः



यसे श्री आदिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पढे श्री जिन  
सुन्दर सूरि पढाखकार श्री जिनहर्ष सूरिवरैः ॥ श्री ॥

[ 49 ]

सं १५३३ वर्षे वैशाख षदि ४ शुभे श्री उपकेश वंशे स० देवहा चार्या इवहादे पुत्र वसुध  
सुश्रावकेण चार्या मेघू पुत्र जयजइता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अश्वल गछेश्वर श्री जय  
केसरि सूरिणाशुपदेशेन श्री सञ्जयनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[ 50 ] (सुप्रदीपना) ११०० १३

सं १५३४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १० शुके उपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर  
पुत्र स० कालण जा० कपूरी पुत्र स० हेमपाल जा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन जातु पास  
वत्त देवदत्त चार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रअन्न चतुर्विंशति पदः कारितः प्रतिष्ठितः  
श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक सूरिनिः श्री जहनगरे ॥

[ 51 ]

सं १५३५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुके उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा जा० कपूरी पु० सा०  
आसा जा० नाऊं पु० हर्षा जा० मनी जा० साइआ रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी नमि०  
श्री वासुपूज्य विंश उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० ज० श्री सिद्ध सूरिनिः ॥

[ 52 ]

उं संवत् १५३७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय शु० गांगा शु० मुजा पुत्र कु  
महिराज जा० रमाइ आविकया श्री वासुपूज्य विंश कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर  
सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पढराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिनिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कळ्याणं चूयात

[ 53 ] ११००

सं १५३४ वर्षे उपकेश ज्ञातीय बाँज गोत्रे सखी जाटा जा० जयतलदे पु० माणिक

अगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि  
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 54 ]

सं १५९१ वर्षे बैशाख वदि ६ शुक्ले प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाट्टहा पुत्र म० पांचा जार्या  
बाइ देऊ पुत्र म० नाथा जार्या आ० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज  
जीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
कृतव पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपट्टे श्री सौजाग्य नन्दि सूरिजिः श्री पत्तन वास्तव्यः ॥

[ 55 ]

सं० १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जेठा जा० मट्टहाई पुत्र  
सोनाकर जा० वाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूषिमा पट्टे श्री मुनि रत्न सूरिणा-  
मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्त्तिपर ॥

[ 56 ]

संवत् १९०३ शाके १९६७ प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां शृगौ वासरे श्री मङ्गुदावादे  
वास्तव्य उंसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां साह निहालचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ  
जिन विंवं कारापितं । खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । तप्या सागर गच्छे ।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[ 57 ]

सं० १९१० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ जार्या महताव कुंवर चंद्रप्रज पञ्च-  
तीर्थीका । उ । सदा वात्सेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९४९ आषाढ़ शुक्ल १६  
आत्मनः कल्याणार्थं ।

किरतचन्दजी सेठिया का घरदेरासर - चावलगोला ।

[ 58 ]

सं० १५३३ वैशाख बदि ४ प्राग्वाट वयं अथा जा० आदडी पुत्र वयं जरतीहिन ता०  
पह पु- सादहादि कुटुंब युतेन स्वभ्रंयसे श्री बासुपूज्य विंवं का० प्र० तथा रत्नशेखर सूरि  
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

श्री सांखियाजी का मन्दिर - कीरतनाग ।

[ 59 ] श्रीश्रीराम (जापूचर) 15

पाषाण के मूर्तियोंपर ।

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गह्वे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-  
जीत्कानामुपदेशेन । उंस वंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी तत्पुत्र सा० उदय  
चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा उंस वं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फतेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ  
आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री मत्पार्श्वनाथ विंवं कारापितं । प्रतिष्ठितश्च वि०  
सूरिजिः श्री जानुचंदेणति आचंद्रार्कचिरं नन्दतात्त्रजं श्रूयाश्चश्रियं ।

[ 60 ]

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्रे श्री पार्श्वचंद्र गह्वे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र  
जीत्कानामुपदेशेन उंस वं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी  
तत्धर्मपत्नी तथा उंस वंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फतेचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द  
चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री बासुपूज्य विंवं कारापितं । प्र० सूरि श्री जानुचंदेणति चंद्र  
श्रूयाश्चिं सदा ॥

[ 61 ]

पाषाणके चरणोंपर ।

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रवासरे उंस वंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द्र जी तन्नार्या वाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्धद्विज गण-  
धर पाडुका कारावितं ।

[ 62 ] वासुचर ( गुरीयावद ) 16

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०  
श्री उदयचंद्र जी तत्धर्मपत्नी वाइ अजबोजीकेन श्री वासुपूज्य प्रथम सुश्रुम गणधर  
पाडुका कारावितं ।

[ 63 ]

सं० १७६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवातरे चंद्र कुसाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां चरण  
स्थापनं श्री लहाग्रहंण श्री जिनहर्ष सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[ 64 ]

धातुके मूर्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द जा० राजू पुत्र नाथू जार्या रूपिणि  
जातृ - माइहा केन जार्या लीळू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री सोमकुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्येः ठ ॥ कावधरी ॥

[ 65 ]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरू रजीथ्याण गोत्रे हुवड़ जातीय दोसी ठाकुर सी जा०  
नाइ हूसी सुत दोसी वाइहाकेन हरपाल दासा पौगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं  
कारितं हुवड़ गळे श्री सिंघइत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीलकुञ्जर गणि ।

[ 66 ]

सं० १५३१ वर्षे वेशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाख जा० सा० गोश्या जा० जाऊ सु०  
सा० साऊण जा० मदीधरि सु० सा० लटकष जा० गुराइ सु० सा० सोम सा० पासा

सं १५७९ वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश झाती बलहि गोत्रे राका शास्त्रायां सा०  
पासड जा० हापू पु० पेचाकेन जा० जीका पु० ३ देपा झुदादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ  
श्री पद्मप्रज्ञ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने ज० श्री सिद्ध  
सूरिजिः दन्तराज्ञ वास्तव्यः ।

✓ [ 75 ]

स्फटिक के विं व पर । मुरशिदाबाद जिला १९

सं १७१० व० ज्येष्ठ सु० १ श्री स्तम्म तीर्थ वा० उकेश झा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति  
जा० शिवा श्री कुन्धुनाथ विं वं प्र० श्री विजयानन्द सूरिजिः । तप ( नय ) करण ।

[ 76 ]

रौप्यके मूर्ति पर ।

सं० १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथौ । उंसवाल बंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक चन्दजी स्वधर्म  
पत्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन विं वं चिरं जयसात् ॥ श्रेयोस्तः ॥  
जड प्रवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमबजार ॥

[ 77 ]

धातुयोंके मूर्तिपर ।

सं० १४०० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपकेश झातीय आयचणाग गोत्रे सा० आसा प्रा०  
वाहि पु० राजू नाहू जा० रूपी पु० खेमा ताडहा सावड़ श्री नमीनाथ विं वं का० पूर्वतलि०  
पु० आरमा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ।

सं० १५३९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाल बंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्म पुत्र सा० पासा ज्ञा० पूनादे पुत्र साना पाश्नादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विं वं स्वपु ष्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सुरि पढे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ॥

पाषाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे बैशाख सुदि ९ श्री मुखसङ्घे चहारक जी श्री जिनचंद्र देव साहू जीवराज पापड़ीवाल --- ।

॥ सं० १९५९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० बीरदास पुत्र लक्ष्मीपतिकेन ।

सम्बत् १९७० वर्षे मिती माह वदि ३ बार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिचंद्र गण्डि वरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गण्डिजिः --- कास्माबाजार --- ।

सं० १९७१ मिति आषाढ शुक्ल १० तिथौ शनिबारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

सं० १७२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी जगगतः । श्री पार्श्वचंद्र सुरि गढे ।

॥ सम्बत १९६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ऐं शुजदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सङ्घेन । कास्मावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्ज्वलैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जिः १ ॥

॥ श्री सम्जवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

पापाणकी विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री बीर गताब्दा २४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ शाखिवाहन १७९७ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने बङ्गदेशे मधुदावादांतर्गताजिमगञ्ज वासी बृहत शोस बंशे छुंपक गङ्गे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तज्ञार्या महताव कुमर्य तत् बृहत पुत्र राय छद्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाता राय धनपतिसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतिसिंह नरपतिसिंह सपरिवारेन श्री सम्जवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महाबीर जी परिकर सहित कारापितं त्रिकुटुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सुरिजिः ॥

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ जगवते नमः ॥ सम्बत अष्टारह सै ग्यारह ( १७११ ) कृष्ण द्वादसी श्रृगु वैशाख । उंसवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मल्लौन धर्मकी साख ॥ सजाचन्द के अमरचन्द सुत तिन सुत मुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह जागीरथी तीर विश्राम ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री भर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका देख ।

[ 87 ]

श्री ॥ सम्बत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १७७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि ऋशी  
१७३९ । संख्ये प्रवर्तमाने माघ मासे धवलषष्टि तिथौ बुधवासरे श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राणां  
प्रासादोद्यम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्गेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर  
महेश जहारक श्री जिनहर्ष सुरिन्निः । श्रीरस्तु ॥

[ 88 ]

धात्यों के मूर्त्तिपर ।

सम्बत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रज्ञ सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो ——— ।

[ 89 ]

सं० ११५९ वैशाख सु० ३ बुधे सौ० जेहड़ सुत सा० बहुदेव हीर जद्राज्यां मातृ राज  
श्री श्रेयोर्ध श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सुरिन्निः ।

[ 90 ]

सम्बत १३४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० महं० सादा सुत महं० राजा  
श्रेयसे लसुत महं० माखहिनि श्री आदिनाथ दिवं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[ 91 ]

सं० १३७५ प्राग्वाट क्वातीय श्रे० आमचंद्र जार्या रत्नादेवी पुत्र सङ्गा श्री शान्ति-  
नाथ का० श्री हेमप्रज्ञ सुरिन्निः प्र० महाहृदाय ।



( ३३ )

[ ७२ ] कलकत्ता १३ अक्टूबर

सं० १४३४ वर्षे ज्यैष्ठ्य बदि २ गुरौ वरदुडिया गोत्रे सा० जोजदेव पुत्र मु० सरसति श्रयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं प्र० देवाचार्य सं० -- सुरिजिः ।

[ ७३ ] कलकत्ता १२ अक्टूबर

सम्बत १४४९ आषाढ सुदि २ गुरौ श्री अञ्जल गङ्गे उकेश बंशे गोखरु गोत्रे सा० नाल्मण चार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितञ्च श्री सुरिजिः ।

[ ७४ ]

सं० १४५९ वर्षे ज्यैष्ठ्य बदि २३ शनौ प्राग्वाट झातीय श्रेष्ठ रवना चार्या लल्लदादे पुत्र सोगाकेन पित्रो श्रयसे श्री आदिनाथ विंवं कारि प्र० श्री -- ।

[ ७५ ]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत बदि १ उवएस झातीय व्य० देवराज चार्या जस्मादे पुत्र वृषा चा० धल्लुणादे सहितेन पित्रो जातु रामसी श्रयसे श्री पद्मप्रज विंवं कारितं प्र० ब्रह्माणीय गङ्गे श्री उदयानन्द सुरिजिः ।

[ ७६ ]

स्वस्ति ॥ सम्बत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीमाल महरोल गोत्रे सा० ईदा सुत सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विंवं प्र० श्री विजयप्रज सुरिजिः ॥

[ ७७ ] कलकत्ता २३

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ ओस बंशे काकस्या गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० साखिग चार्या पद्मार्शना शान्तिनाथ विंवं कारि प्र० प्रतिष्ठितं कृष्णवीथ श्री नयचंद्र सुरिजिः ।

( २४ )

[ 98 ] अल्कता २५

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ उंस बंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाइवेव जा० करण पुत्र  
सामल जार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुष्यार्थ श्री श्रेयांस विंव का० प्र० — — विं  
गहे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

[ 99 ]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश बंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा०  
चंजी पुत्र श्रीरङ्गेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंव का० प्र० श्री कृष्णि  
गहे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

[ 100 ] अल्कता १६ २५

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्ले श्री श्रीमाल हातीय ठकुर धरणी जार्या बाई गाङ्गी  
सुत ठकुर मारुण जार्या बाई अरघू तेन खकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विंव कारितं प्रति-  
ष्ठितं आगम गहे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कल्याण ॥

[ 101 ] अल्कता २५

सम्बत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ उंसवाल हातीय बहुरा गोत्रे सा० खीमा पुत्र  
बरषा जा० वालहदे सं० जातृ रब्हा श्री विमलनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल  
गहे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

[ 102 ]

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने वपुङ्गाणा गोत्रे तुंगिला गोत्रे सुत देवराजेन पु०  
पहगज दुते विंव का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[ 103 ]

सं० १५१९ वर्षे आषा० सुदि १० मंदिदक्षीय श्री काणा गोत्रे ठ० लाघू जा० धर्मिणि

पु० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन महिराजादि  
युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनचंद्र सूरि पद्वे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 104 ]

सम्बत १५१९ वर्षे कार्तिक वदि ४ गुरु श्रीमाखी ज्ञातीय मंत्रि देवाचार्या सहिजू सुत  
धरजांगकेन जातृ जेसा नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयार्थं श्री अजितनाथादि चतु-  
विंशति पद्वे कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गढे श्री मुनिचंद्र सूरि पद्वे श्री वीर सूरिजिः ॥  
श्रेया वास्तव्यः श्री शुभं जवतु ॥ श्रीः ॥

[ 105 ]

सं० १५२४ वै० शु० १० उकेश वेदर वासि स० महिराज चार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन  
जगिनी पद्माई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ विं० का० प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सूरि  
सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 106 ]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता जा० बाबू पुत्र जोगाकेन जा० जावडि पु० रामदास  
जातृ अर्जुन जा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ विं० का० प्र० श्री सोमसुन्दर  
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[ 107 ] न।ए। 107 अतस्त

सं० १५३२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री उकेश वंशे आचू सन्ताने ज० जोजा पुत्र नखाता  
इता ज० जोड्हा नारदाच्यां श्री अजिनन्दन जिन विं० कारितं प्र० श्री खरतर गढे श्री  
जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 108 ] न।ए। 25 व. 108

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सु० १० शुके श्री उग्रश वंशे जोर गोत्रे सा० सरवण जा०

कादही पुत्र सा० सीद्दा सुश्रावकेण जा० सूहविदे पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाज्ञ रव शिवदास  
पौत्र सिद्धपाल प्रमुख कुटुम्ब युनेन श्री अश्वल गहेश श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशन  
मातृ पुष्यार्थ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्गेन ॥

[ 109 ]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ जामे लपकेश ज्ञातीय ठ० धरणी जा० जली सु० देठाला  
जा० कुंती कनसू जतृ आत्म श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंब का० प्रति० श्री नाणवाल गह श्री  
धनेश्वर सूरिजिः । कारडा वास्तव्यः ।

[ 110 ]

सम्बत १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुके श्रीमाल ज्ञातीय माथलपूरा गोत्रे म० हसराज  
जा० हासखदे पु० सा० षेढा जा० धीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंब कारापित श्री धम  
घोष गह ज० कमलप्रज सूरि तत्पदे ज० श्री पुष्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[ 111 ]

सम्बत १५९५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि लारुण जार्या अजी  
सुत वासण रुढा जेलिंग हूडा जा० रमादे खपितृ मातृ श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंब कारितं  
श्री आगम गह श्रीमुनिरत्न सूरि पदे श्री आनन्दरत्न सूरिजिः प्रतिष्ठितं ब्रूयाणा वास्तव्यः ॥

[ 112 ]

सं० १५९७ वर्षे फागुण सु० ए बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तज्ञार्या श्री मरु  
देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ बिंब का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मक्षयार्थ श्रेयोस्तु शुभं जवतु ॥

[ 113 ]

सं० १६५७ वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य उंसवाल  
ज्ञातीय । सा० घोघा जार्या कडहा सुत सा० राजा जार्या अदक सुत सा० जयतमाल । जार्या

जीवादे सुत सा० ठाकुर नान्ना जातृ सा० पुण्यपाल सा० नाकर खजार्या गमतादे सुत लालजी वीरजी प्रमुख कुटुम्ब युतेन खश्रेयसं श्री सञ्जवनाथ विंवं कारितं प्र० श्री तपा गछे महादृप प्रतिबोधक ज० श्री हीरविजय सूरि तत्पह प्रजावक सुत्रिहित ज० श्री विजयसेन सूरिनिः आचार्य श्री ५ श्री विजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणविजय गणि प्रमुख परिवृतैः ॥

[ 114 ]

सम्बत १६९७ बर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य वृद्ध शास्त्रायां उपकेश ज्ञातीय सा० लक्ष्मीधर जार्या वाई लखमादे पुत्री वा० कहे वाई नाम्न्या स्वमानु सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख युतया श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठापितं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपा गछाधिराज जट्टारक श्री विजयसेन मूरीश्वर पट्टालङ्कार श्री विजयदेव सूरिश्चर पट्टप्रजाकराचार्य श्री श्री विजयसिंह सूरिनिः ॥

॥ श्री महावीरस्वामी का मन्दिर — माणिकतला ॥

[ 115 ]

सं० १३४० बर्षे — — — — — जयसवाल ज्ञातीय सा० लाखणा श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं माता चापल श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ विंवं कुमर सिंहेन आत्म पुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ जार्या लखमादेवी श्रेयोर्थ श्री महावीर विंवं सुत खेतसिंह पुण्यार्थ श्री नेमिनाथ विंवं कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गछे श्री नन्न सूरि सन्ताने श्री कक सूरि पट्टे श्री सर्वदेव सूरिनिः ।

[ 116 ]

सं० १४०४ बर्षे श्री श्रीमाल बंशे सा० लामा सा० हापा सुश्रावकेण पुत्र आदा सहितेन स्वपुण्यार्थ श्री वर्द्धमान विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिनिः ॥

सं० १५११ वर्षे पोष वदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांझ्या  
जा० राणा सु० वस्ता जा० अलवेसरि नाम्न्या खजर्तु श्रे० श्री कुन्धुनाथ वि० प्र० श्री  
बिमल सूरिजिः । बगुडा वास्तव्यः ॥

[ 118 ] कलकत्ता २४

सं० १५३३ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ श्री जावकार गढे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे  
व्य० मीमण जा० हलू पु० सादा जा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — जातृ नेमा पुण्यार्थ  
समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य  
सन्ताने ज० श्री जावदेव सूरिजिः ॥ सीरोही वास्तव्यः शुजम्जवतु ॥

[ 119 ]

सम्बत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीवंशे सा० अदा जा० धर्मिणि पुत्र सा०  
वस्ता सा० तेजा सा० भीमा सा० तेजा चार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थ श्री शान्ति-  
नाथ विंवं श्री अंचल गणेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री पत्तन नगरे श्री सङ्गेन ॥ श्रीः ॥

✓ [ 120 ] सं. जादर २४ | कलकत्ता | १ लादर

सं० १६६७ व० उ० ज्ञा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० चूपतिना  
श्री त्रिमलनाथ विंवं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तथा गहेंद्र ज० श्री  
त्रिजयसेन सूरिजिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[ 121 ]

सं० १५११ वर्षे आषाढ वदि ९ रागा उकेश ज्ञातीय सा० जौसिंग जा० चंजी पुत्रेण

सा० बीदाकेन ज्ञा० नषी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरः  
तर गङ्गे श्री जिनजङ्ग सूरिभिः ॥ श्री जूँजण् वास्तव्य ।

[ 122 ]

सं० १५१६ कार्तिक बदि २ रबौ श्री जणस वंशे लोढा गोत्रे सा० ठाजू ज्ञा० पीमिणि  
पु० सा० गजसी ज्ञा० चूराइ पु० सा० धना ज्ञा० धर्मादे पु० सा० समधरेण ज्ञा० सूहवदे  
सहितेन बृहज्जातृ नरपति संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र  
पत्नीय गङ्गे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[ 123 ]

सम्बत १५२२ वर्षे कार्तिक बदि ५ गुरौ श्री जणस वंशे । स० घड़ीया ज्ञार्या कपूरी  
पुत्र स० गोवल ज्ञा० लखमादे पुत्र खेताकेन ज्ञातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगङ्गा-  
धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरिणामुपदेशेन श्री चंद्रप्रज्ञ स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री  
सङ्गेन ॥ कञ्चदेशे धमङ्का ग्रामे ॥ श्री ॥

[ 124 ]

सं० १६३४ वर्षे फा० श्रु० - शः पत्तने सं० माङ्गणना समस्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस  
नाथ विं० का० प्र० श्री बृहत्तपा गङ्गाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[ 125 ]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख बदि १ रबौ श्री श्रीमाल श्रेष्ठि श्रवण ज्ञा० काठं सु० पितृ बीरा  
मातृ नाणादे श्रेयोर्य सुत काहाकेन श्री नेमिनाथ विंवं कारितं श्री - पू - ण - रत्नसूरि पदे  
श्री साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितो विधिना श्री सङ्गेना ग्रामेण वास्तव्यः ।

सम्बत १५५७ वर्षे माघ बदि १२ बुधे प्राण साण गेला चाण चाडू सुत साण राजा वना  
तपा हरपाल चाण जीवेषी सुण हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्थुनाथ  
बिंबं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणोत नगरि गोत्र लीवां ।

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल झातीय दोण शिवा चाण सिरियादे शृङ्गारदे  
सुत दोण धनसिंहेन चाण जांविहा साण कुंअरि चाण देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे  
श्री शान्ति विंबं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

सं० १५६२ वर्षे वै० सु० १० रवौ श्री तातहरू गोत्रे स० जेठू चार्या जिषूहो पुत्र० ३  
साण आहू साण बुडू साण बाहड़ तन्मध्यात् साण बाहरू चार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे  
स्वपुण्यार्थं च श्री सुमतिनाथ विंबं काण प्र० श्री उपकेश गळे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त  
सूरिजिः ॥

माधोलालजी दुगड़ का घरदेरासर — बड़तला ।

✓ [ 129 ] ११६५/३०/ ११/११/११

उं सं० १५१५ वर्षे आषाढ बदि २ श्री उकेश बंशे बरड़ा गोत्रे साण हरिपाल सुत चाण  
आसा साणू तत्पुत्र सं मरुलिक सुश्रावकेण चार्या सं रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सप-  
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गळे श्री  
जिनराज सूरि पदे श्री जिनजद्र सूरिजिः ।

माधोलाल बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री द्वीप बंदिर वास्तव्य श्री उकेश



सम्बत १५५७ वर्षे माघ बदि १२ बुधे प्रा० सा० गेला जा० चाडू सुत सा० राजा वना  
तपा हरपाल जा० जीवणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्धुनाथ  
विंवं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणोत नगरि गोत्र लीवां ।

[ 127 ]

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० शिवा जा० सिरियादे शृङ्गारदे  
सुत दो० धनसिंहेन जा० जांविहा सा० कुंअरि जा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे  
श्री शान्ति विंवं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 128 ]

सं० १५६२ वर्षे बै० सु० १० रवौ श्री तातहरु गोत्रे स० जेठू जार्या जिषूहो पुत्र० ३  
सा० आहू सा० बुडू सा० बाहडू तन्मध्यात् सा० बाहरु जार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे  
स्वपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री उपकेश गळे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त  
सूरिजिः ॥

माधोलाखजी डुगडू का घरदेरासर — बडूतला ।

✓ [ 129 ] जा० ३० का० ३० ✓

उं सं० १५१५ वर्षे आषाढ बदि २ श्री उकेश वंशे बरडा गोत्रे सा० हरिपाल सुत जा०  
आसा साधू तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण जार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सप-  
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गळे श्री  
जिनराज सूरि पदे श्री जिनजडू सूरिजिः ।

माधोलाख बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

[ 130 ]

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री द्वीप बंदिर बास्तव्य श्री उकेश

सम्बत १५५७ वर्षे माघ बदि १२ बुधे प्रा० सा० गेला जा० चाडू सुत सा० राजा वना  
तपा हरपाल जा० जीवेणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्थुनाथ  
बिंबं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणोत नगरि गोत्र बीवां ।

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल झ्वातीय दो० शिवा जा० सिरियादे शृङ्गारदे  
सुत दो० धनसिंहेन जा० जांविहा सा० कुंअरि जा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे  
श्री शान्ति बिंबं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

सं० १५६२ वर्षे वै० सु० १० रवौ श्री तातदरु गोत्रे स० जेठू जार्या जिषूहो पुत्र० ३  
सा० आडू सा० बुडू सा० बाहडू तन्मध्यात् सा० बाहक जार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे  
स्वपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त  
सूरिजिः ॥

माधोलालजी डुगड का घरदेरासर — बड़तला ।

उं सं० १५१५ वर्षे आषाढ बदि ३ श्री उकेश वंशे बरडा गोत्रे सा० हरिपाल सुत जा०  
आसा सा० तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण जार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सप-  
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गछे श्री  
जिनराज सूरि पदे श्री जिनजड सूरिजिः ।

माधोलाल बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री द्वीप बंदिर वास्तव्य श्री उकेश

ज्ञातीय बृद्ध शाखायां सा० श्री करण चार्या श्री सिरा आदि सुत सा० सोणसी चार्या श्री  
संपुराई पुत्र रत्न सा० शवराज नाम्ना श्री आदिनाथ विंवं कारितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं  
प्रतिष्ठितं तपा गङ्गे ज्ञ० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[ 131 ]

सं १४७५ वर्षे जै० ब० ११ रबौ श्रे० धणरी चार्या मच्च सुत सा० ठ० वराकेन स्वजगिनी  
श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागङ्गमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[ 132 ]

सं १५७७ ब० बैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाली श्रे० बहजा ज्ञा० वहजलदे पु० सा०  
करणसी ज्ञा० जीवादे काना सहितेन श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० पूर्विमा पक्षे श्री मुनि  
चन्द्र सूरिजिः बरजा बा० ॥

[ 133 ]

सं १६०४ वर्षे बैशाख बदि ५ सोमे श्री जसवाल ज्ञातीय सा० देवदास चार्या वा० देव  
लदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाल ज्ञा० वा० रतनादे सपरने सा० जावड़ ज्ञा० वा० ज्ञासलदे तस  
पुत्री वा० जीवण श्री धरमनाथ श्रा० — जिदास परिवार बृत्तैः ।

४० न० ईण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतला ।

श्री रत्नप्रभ सूरि प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध उपकेश (ओसियां) नगर की श्री महावीर स्वामीके मन्दिरके  
पार्श्वमें धर्मशालाकी नींव खोदनेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्तिके परकरके पश्चातका लेख ।

[ 134 ]

उं संवत् १०११ चैत्र सुदि ६ श्री कक्काचार्य्य शिष्य देवदत्त गुरुणा उपकेशीय चेत्य एहे  
अखयुज् चैत्र पष्ठयां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिवाहिका चासुख प्रतिमा इति ।

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेहा गोत्रे --  
-- श्राविकया कारि ॥

( १ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । बिमलनाथ -- -- अजयराजेन श्रेयोर्थ । )

[ 143 ]

॥ सं । १७५६ फाल्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व  
सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[ 144 ]

॥ संबत । १७५६ बैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाण्डुके ।  
प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थ ।

[ 145 ]

संबत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गह्वे पुत्कर गणे दोहा-  
चार्यान्नाथ जहारक श्री जगत्कीर्ति सदान्नाथ अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर  
वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र कृष्णदास पुत्र सन्नूलाल -- -- अग्रवाल प्रजा सा  
-- श्री पन्नप्रज -- -- प्रतिष्ठा कारिता ।

[ 146 ] १५५५ ( १७१२ ) ३५

सं १७७७ आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ बिंवं प्रतिष्ठितं बृहत् -- -- सूरिजिः  
कारितं च डूगड़ सरूपचंद त्रातृ करमचंद हुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयोर्थ ।

[ 147 ]

संबत १७७७ वर्षे मिः फाल्गुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ बिंवं कारितं मकसुदावाद  
वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पहालझार ज । श्री जिन  
सौजाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे ।

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेष्ठा गोत्रे --  
 -- श्राविकया कारि ॥

( १ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रज्ज ४ । विमलनाथ -- -- अजयराजेन श्रेयोर्थं । )

[143]

॥ सं । १७५६ फाद्युण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व  
 सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संबत । १७५६ बैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाडुके ।  
 प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थं ।

[145]

संबत १७७२ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माधुर गढे पुत्कर गणे लोहा-  
 चार्यान्नाय जहारक श्री जगत्कीर्ति सदान्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर  
 वास्तव्य सा० क श्री हीराखाल पुत्र कृष्णदास पुत्र सबूलाल -- -- अग्रवाल प्रजा सा  
 -- श्री पद्मप्रज -- -- प्रतिष्ठा कारिता ।

[146] ज्येष्ठ ( १७७२ ) ३५

सं १७७७ आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ विंवं प्रतिष्ठितं बृहत् -- -- सूरिजिः  
 कारितं च दूगड़ सरूपचंद त्रातृ करमचंद हुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयोर्थं ।

[147]

संबत १७७७ वर्षे मिः फाद्युण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं मकसुदावाद  
 वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार ज । श्री जिन  
 सौजाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गढे ।

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेष्ठा गोत्रे — —  
 — — श्राविकया कारि ॥  
 ( १ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । बिमलनाथ — — — अन्नयराजेन श्रेयर्थं । )

[ 143 ]

॥ सं । १७५६ फाट्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व  
 सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[ 144 ]

॥ संबत । १७५६ बैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पादुके ।  
 प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयर्थं ।

[ 145 ]

संबत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गह्वे पुत्कर गणे लोहा-  
 चार्याम्नाय जट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदाभाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर  
 वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र कृष्णदास पुत्र सन्नूलाल — — — अग्रवाल प्रजा सा  
 — — श्री पद्मप्रभु — — — प्रतिष्ठा कारिता ।

[ 146 ] चाण्डूरी ( १७६१ ) ३५

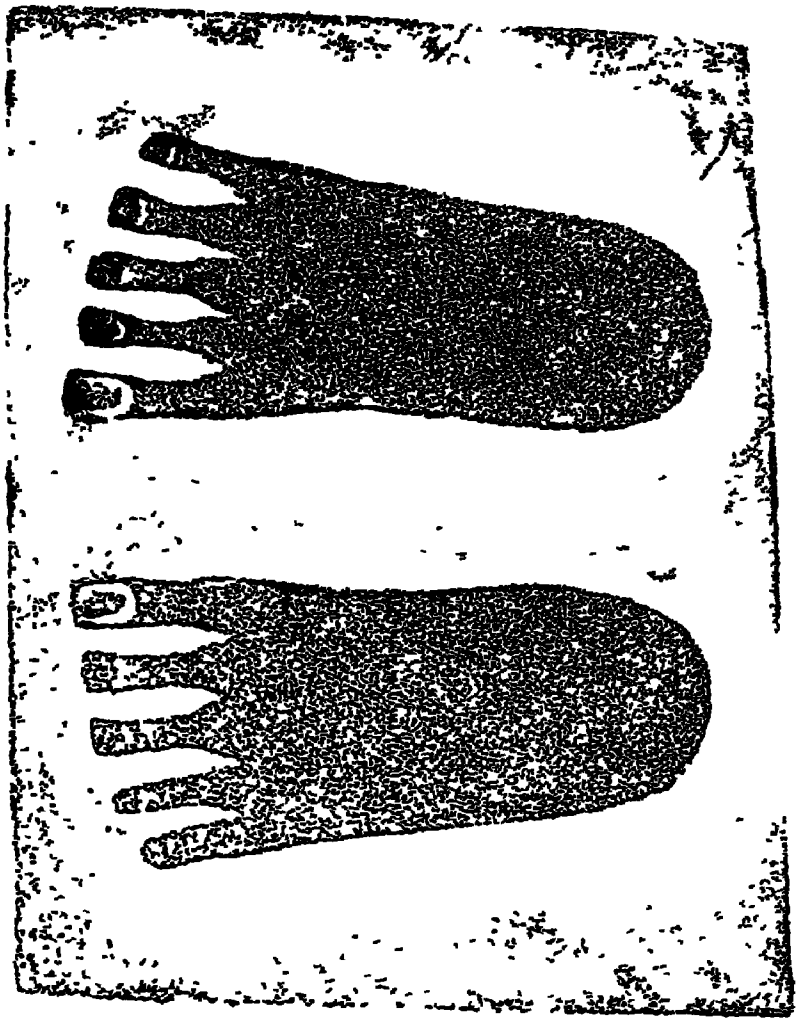
सं १७७७ आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बृहत् — — — सूरिजिः  
 कारितं च डूगड़ सरूपचंद्र त्राट्ट करमचंद्र हुलासचंद्र जननी प्राण बीबी श्रेयर्थं ।

[ 147 ]

संबत १७७७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं मकसुदावाद्  
 वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार ज । श्री जिन  
 सौजाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गह्वे ।

गरमक्ष ॥

सर्वस्वरिषिःकारितासर्वसद्येनाचंपान



॥ शोण्यदफाच्युएकस्रवतिपत्तिथोर्णा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सं १९१० मि । फा० कृष्ण २ बुध — — डूगड़ प्रताप — — —

[ 149 ] ————— ३५

॥ संवत् १९१५ मिति जेष्ठ शुक्ल द्वितीया तिथौ रवीवारे डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तन्नार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंह बहादुर तत् लघुज्जाता राय धनपत्तसिंह बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं । जं । यु० ज० श्री जिनहंस सूरिजी बिजेराज ॥ उ० श्री आणन्दबल्लुच गणि तत् शिष्य उ० श्री सदादाच गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द सूरि वृंषक गढे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवपदजी श्री चंपा प्रोजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[ 150 ] ————— ३५

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९१५ मिः फा० गुन कृष्ण ५ तिथौ । डूगड़ श्री प्रतापसिंहजी तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंह बहादुर तत्रात्र श्री धनपत्तसिंह बहादुर कारापितं जं० । यु० । प्र० । ज० । श्री जिनहंस सूरिजी बिजेराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभं भूयात् ।

[ 151 ]

धातुयोके मूर्त्तिपर ।

सं १५०९ वर्षे ज्येष्ठ सु० — रवौ रंगू जा० रमाई — — हेमा हापा बापा पु० साहस जा० लक्ष्मीरूपिणि पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ विं० का० प्र० श्री संदेर गढे श्री शांति सूरिजिः ॥ श्रीः

[ 152 ]

संवत् १५१९ वर्षे माघ ब० १ सोमे प्रा० सं० धारा जा० सलषू सुतेन सा० वेळा वंधुना



सं वनाकेन ज्ञा० सीत्रू प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ माध्यमन ग्रामे ॥

[ 153 ]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं - - - ।

[ 154 ] ना६८ | ३४ | जन्म५८

सं १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरू उकेश बंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा ज्ञा० राजं  
पु० सा० जोला ज्ञा० लहिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कादू सा०  
काजा ज्ञा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पद्ये का०  
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पद्ये श्री जिनसुन्दर सूरि पद्ये श्री पूज्य श्री जिन  
हर्ष सूरिभिः ॥

[ 155 ]

संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १० शुक्ले श्री प्राग्वाट ज्ञा० बृद्धशाखायां व्य० सहिसा  
सु० व्य० समधर ज्ञा० बड़धू सुत व्य० हेमा चार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा बर्द्धमान  
एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रजावक श्री आणंदसागर सूरिभिः ॥ श्री शान्तिनाथ विंवं श्री  
रस्तु श्री पतन नगरे ॥

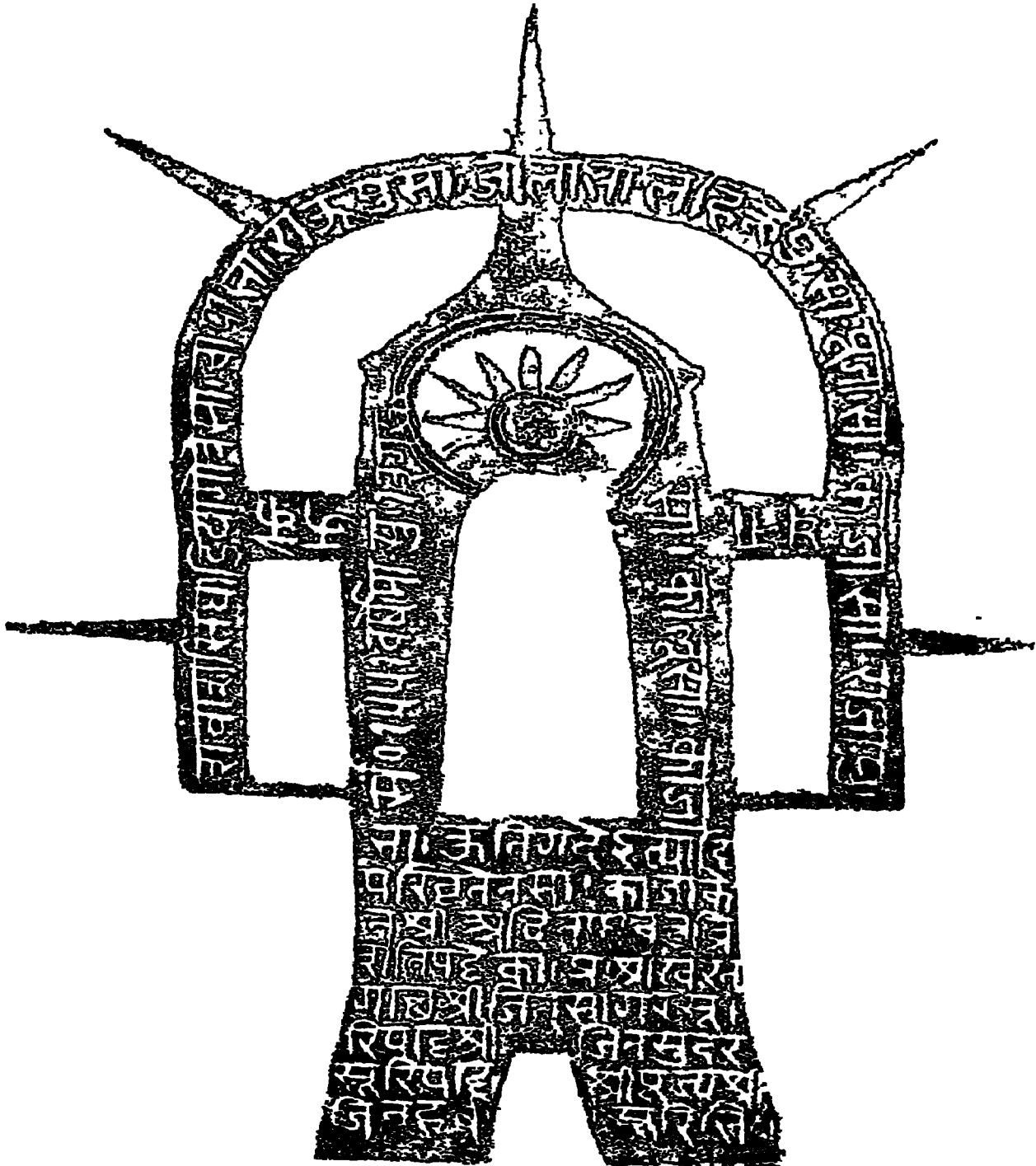
[ 156 ] ना६९ | ३६ | जन्म५९

संवत् १५७५ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल ज्ञातीय आश्चणी गोत्रे चोर  
वेड़ीया शाखायं सं० जइता चार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा चार्या जूरी सुत ऊधरण बंड  
पाल आत्म श्रेयैर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री उपकेश गच्छे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति  
ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिभिः । - - - -

[ 157 ]

संवत् १६०३ वर्षे माघशिर सुद ३ शुक्ले प्रा० ज्ञा - - वास्तव्य - - ज्ञा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champapur Temple, dated S. 1551 (1494 A.D.)



( ३७ )

सूर्य ज्ञान सूरमादे साण श्री रङ्ग सदारङ्ग अमीपलादि कुटुम्ब युतेन साह सण चवीरेण श्री  
सुमनिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गङ्गे श्री विशालसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५—२  
सूरिजः ।

[ 158 ]

झींकार यंत्रपर ।

सम्बत १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गङ्गे बलः  
त्कार गणेश चंपापूरी नगर शुभस्थाने — — —

[ 159 ]

सम्बत १६८३ वर्षे मूलसंघे ज्ञान श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपाण श्री जयकीर्ति प्रतिष्ठितं  
ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर

पाषाणके मूर्तिपर ।

[ 160 ] न १६५३७ चम्पावती

सं० १८९९ माघ सुदि १३ बुधे ओस बंशे कठारा गोत्रीय लाला जमनादास तन्नार्या  
आसकुवर तथा श्री वासुपूज्य जिन विंवं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत्  
खरतर गङ्गीय श्री जिन — — — ।

पञ्चतीर्थीयो पर ।

[ 161 ]

सं० १९१९ — — — मंत्रिदलीय श्री काणागोत्र ठण दाधू ज्ञान धर्मिणि पुण सण

अचल दासेन पु० लघुसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ विं०  
का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पदे श्री जिनहर्ष सूरिजिः ।

[ 162 ]

सम्बत १५९१ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ मिधूज गोत्रे । स० इम ज०  
— — सुश्रावकेण जा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिल प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ  
विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे ॥ श्री जिनरत्न सूरिजिः ॥

छींकारके यंत्रपर ।

[ 163 ]

सम्बत १०५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं  
श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्री मालान्वये  
जरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रोसनराय बृद्धिचन्द खुस्यालचन्द सरूपचन्द  
मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयोर्थ ॥

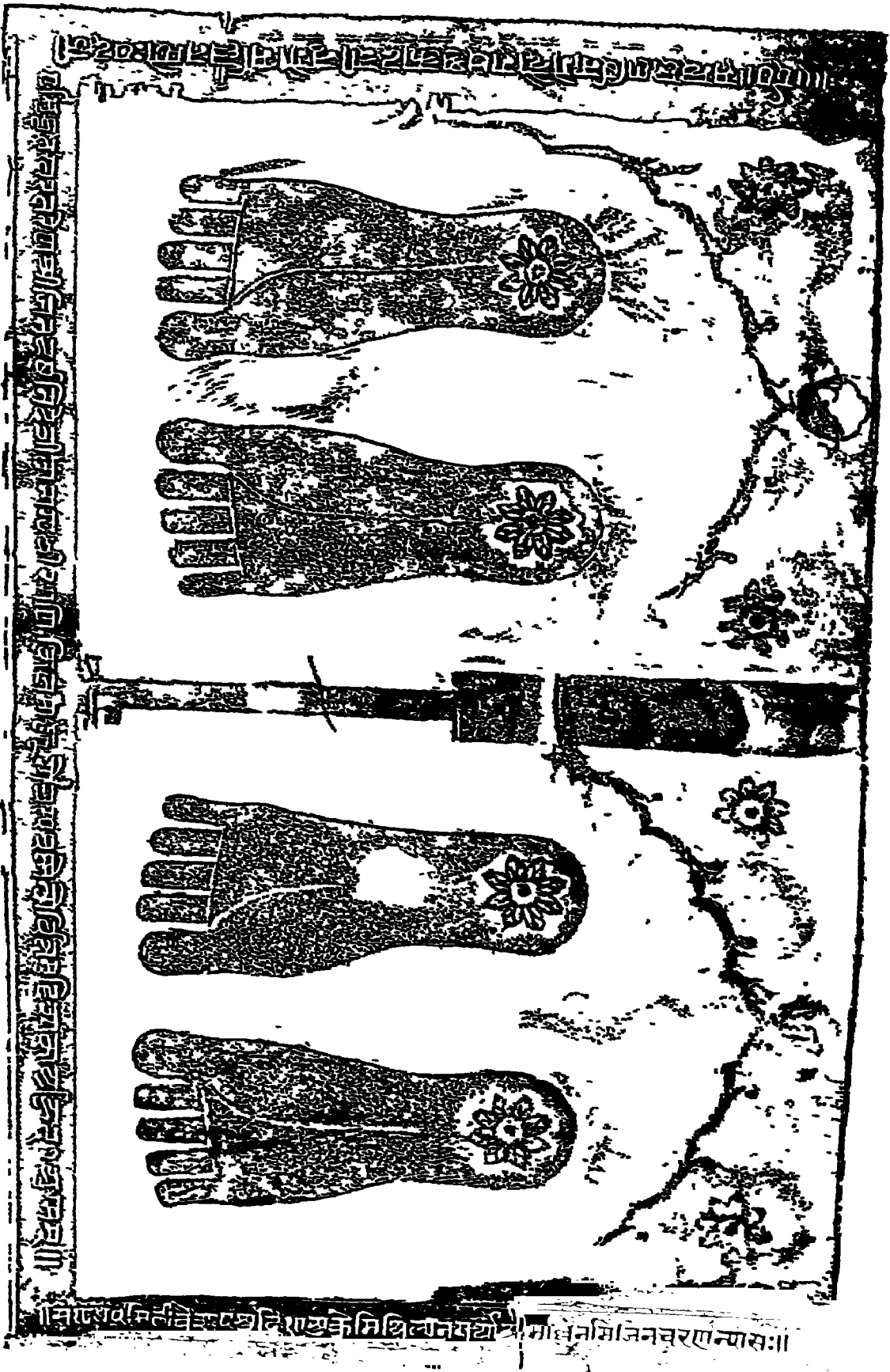
स्थान — जागलपुर ।

श्री बासुपूज्यजी का मन्दिर ( धर्मशाखामे )

पाषाणपर ।

[ 164 ] भाग ५२ ३४

॥ शुभ सं० वीर गतावदा २४०५ विक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयो-  
दश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री बासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक चूम्युपरि ओश बंशे डूगड़ गोत्रे  
वृ।शा।बा। श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ बधूः महताबकुमरी स्वजव  
सफल करणार्थ इष्टा कृतासिच कालवशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्म प्राप्तस्य  
मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर



Footprints from Muthia, dated S. 1875 (1818 A.D.)

निष्पत्तिवैश्वानरायकेमिथिलानयथा मधिनमिजिनचरणान्यासः॥

तेन द्रव्येण धर्मशाला जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वं सूरिभिः श्रीसंघ च संज्ञात्सी श्री  
संघ माहिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री चीकटरीया इमत्रेश राज्ये पूटाब्द १७७९ ।

पाषाणके चरणों पर ।

[ 165 ] भागल्यु ( ३७ )

( १ ) च्यवन ( २ ) जन्म ( ३ ) दीक्षा ( ४ ) केवल ( ५ ) निर्वाण कल्याणक पाण्डुका ॥  
साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु  
पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंवा नगरे थोशवाल वृ । शा । डूगड़ गोत्रे वा । श्री  
बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्चार्या महतावकुमर बीवी तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मी  
पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभिः श्री संघस्य शुभचवतु ॥

[ 166 ] भागल्यु ( ३७ )

॥ ए ए ० ॥ सम्बद्धानि नागेन्दौ राध शुक्लादशी भृगौ महि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत  
खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा चाग्यधीर गणि किल मादहू गोत्रस्य प्रणेन्दोर्वित्तमुद्दिश्य  
काय्यकृत २ युग्मम् ॥ सं० १७७५ मितौ बैशाख सुदि १० शुके मिथिला नगर्या \* श्री महि  
जिन चरणन्यासः ॥

[ 167 ]

सं० १९३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य ( अजितनाथ, सम्भवनाथ ) जिन

\* यह चरण दरभङ्गा लैन में सीतामढी हिसनके पास मिथिला नगरी से उठाकर लाया गया है । वहां इस  
समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थङ्कर श्री महिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ मां श्री नामि  
नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये धं । श्री महिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीकी कुमरी  
थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरके विजय राजा और चिप्रा  
रानीके पुत्र श्री नामिनाथ स्वामीका जन्म श्रावण वदी ८, दीक्षा आषाढ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सु० ११  
के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें " मिथिला " के स्थानमें " मथुरा " नगरी भी देखनेमें आया है । सत्या-  
सत्य ज्ञानीगम्य है । चरन तीर्थङ्कर महावीर भगवानक भी ६ चौमासा यहां भयाथा ।

बिंबं ओस बंशे डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं ।  
मखधार पूर्णिमा श्री मद्धिजय गढे जहारक श्री जिन शांतिसागर सूरिजिः ॥

[ 168 ] भाग ८५८ ५०

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मद्धिजिन बिंबमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश  
बंशीय लुंपक गणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु  
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागड्डीयेन ॥  
श्री मिथिलापुरवरे ।

[ 169 ] भाग ८५८ ५०

सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन बिंबमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश  
बंशीय लुंपकगणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु  
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागड्डीयेन  
सीतामढी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[ 170 ] भाग ८५८ ५०

॥ सं० १५ आषाढादि ए६ वर्षे आषाढ शु० ११ दिनेः रा० जण्णारी गोत्रे जं० सिवा  
जा० रत्नादे पु० ज० हेमराज बेला जा० बालहरे पु० पता — — बिंबं कारापितं पुण्यार्थं श्री  
संकेर गढे ज० श्री साल सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।





## तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । मृगशीर बदि ५ जन्म, मृगशीर बदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकन्दी जी यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लठवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौविशमां तीर्थकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

मूर्तियों पर ।

[ 171 ]

संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए महतिथाण बंशे मुंरतोड़ गोत्रे । सं० महणसी पुत्र सं० देपाल जार्या मू० माहिणि खकुंडवेन ज्ञाता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र —  
— श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुचशील गणित्तिः — — — ।

[ 172 ]

संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतिथाण बंशे मुंरतोड़ गोत्रे । सं० — — राजपुत्र सं० महादेपाल ज० माहिणि पुत्र सं० सिवाई ।

चरण पर ।

[ 173 ]

ओं नमः । संवत् १८२२ वर्षे बैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिन-  
धर चरण कमले शुभे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संवेन  
जीयोंद्वारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः ।

पाषाण पर ।

[174] काशी (बरेल) 42

मकशूदावाद अजीमगञ्ज वास्तव्य झूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तझार्या महताव कुंवर तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तत्त्वधु सहोदर राय धनपतासिंह बहादुरेण न्याय द्रव्यण व्यय बार प्रचू का जिनालय करापितः लठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं । सं० १९३० मिति वैशाख वदी ३ चन्द्रे --- ।

## श्री गुनायाजी ।

नवादा ( गया लाईन ) छेसनसे १॥ मार्शल पर यह स्थान है । इसका नाम शास्त्रमें "शुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थकर श्री महाबीर स्वामीका १४ चौमासा जयाथा । स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तालाव वा विचमें मन्दिर है ।

धातूके मूर्तिपर ।

[175]

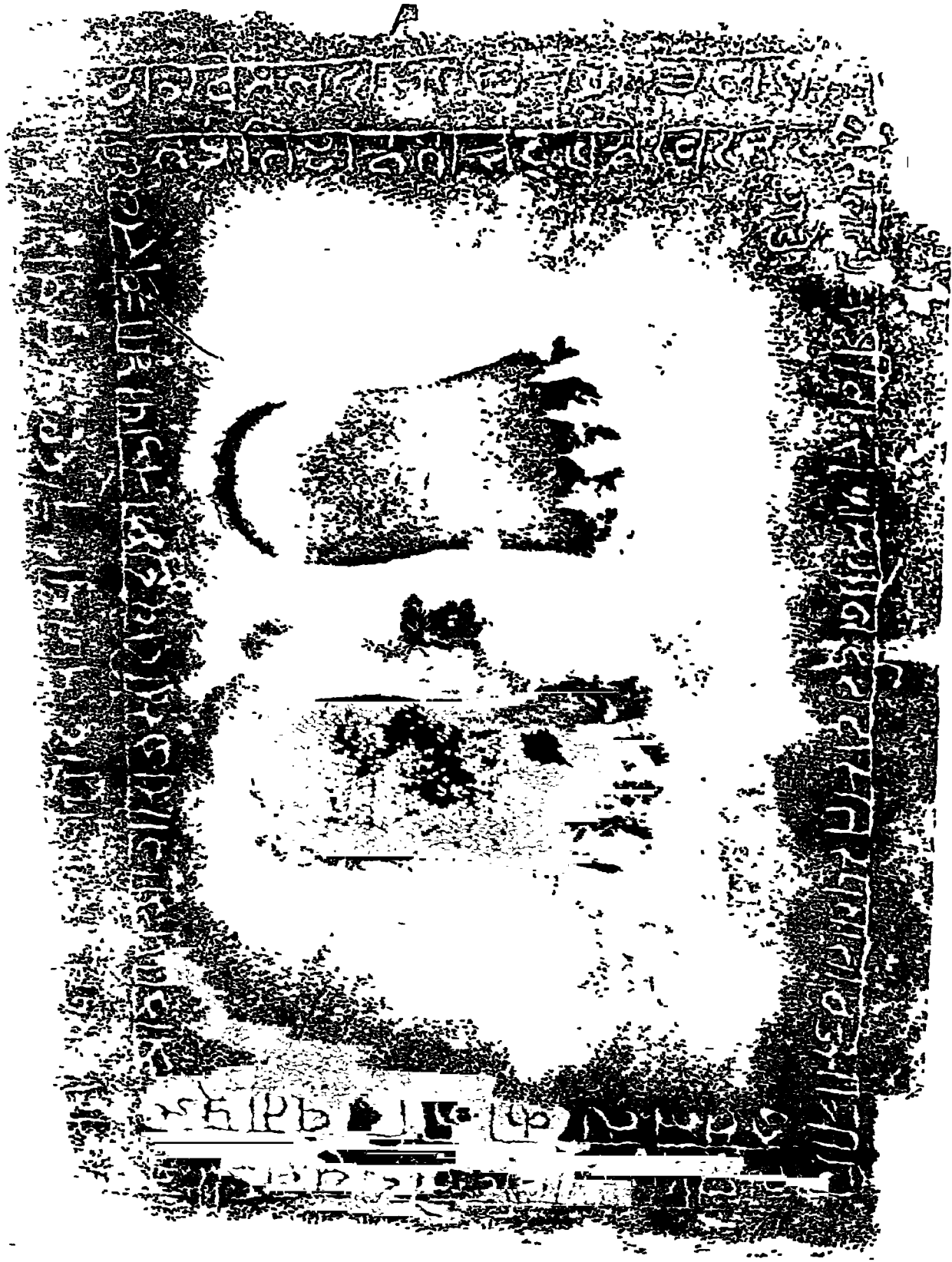
संवत् १५१० वर्षे फागुण बदि १२ उसवालान्वये मूधाला गोत्रे स० — मीला ज्ञा० बीदहू पुत्र सा० तोदहा ज्ञा० पर्ई नाम्न्या स्वपुण्यार्थ पद्मप्रज्ञ विंवां कारितं प्र० श्री पद्मानंद सुरिनिः ।

पाषाणके चरणोंपर ।

[176] गुनायाजी (बरेल) 42

संवत् १६०० वर्षे वैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल बंसे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालों तत्पु० चार्या ठकुरेटी यु० ज० श्री जिनकुसल सुरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज सुरि विद्यमाने उपाध्याय अज्ञय धर्ममेंन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लझे खरतर गळे ।

Footprints, Gunashila (Gunawa) Temple, dated S 1688 (1631 A. D.)



संवत् १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ त्रैमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री डूगड़ प्रतापसिंह  
 बीस्कानां चार्या महताव कुंवर तत्कुक्षितोत्पन्न कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर  
 नाम्ना स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्वाण  
 धामतया श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनचक्रि सूरि शाखायां उ० सदा  
 धाम गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

सं० १९३० माघ शुभ ५ सकल संघेन श्री धीर पादुका कारापित स्थापितं श्री गुण;  
 शील्य चैत्ये आत्महिताय ॥

वाषाण पर ।

[ 179 ] अनाथाजी १९२१ ५३

सं० १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ त्रैमे गुणशीले चैत्ये डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी  
 तत्चार्या महताव कुंवर तत्पुत्र चिरू राय बहादुर तत् प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साफद्वय  
 कारापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आणंद बह्मज गणि तत्तशिष्य उ० श्री सागरचंद गणि उ०  
 देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूयात् ।

वाषाण पर ।

— । श्री जिनेंद्र जयती । स्वस्ती श्री मह धीरजिनेंद्र सं० २४३९ वि० सं० १९५९  
 वर्षे वै० वद० उ कुवदारे श्री तपा गछामनाथ धारक सुभाषक दत्ता श्रीनाथ झातीये सा०  
 रूपचन्द रंगीछदास देवचन्द पाटनवाछा हाथ मुकाम येवला मुंढई ये बनना स्मर्त्तार्थं तंत्  
 पन्धु चपुर चन्द दुत्त देव चन्द दाब चन्द आग चन्द जष = ३ ये ॥ श्री गुणशील चैत्य आ

धर्मशास्त्रा चंदावीठे तथा देरासरमा पवासणो गोखलाओ दरवाजो जमतीनी देरी = ४ सहीत सरवे थारसनु काम तथा तक्षावनी चीत तथा रीपेर बीगरे जीनोंछार करावोठे श्री शुजं चवतु सदा । सखाट चाइचंद जगजीवन मीछी पाखीताणा वाखा -- ।

## तीर्थ श्री पावापूरी ।

शासन नायक श्री महावीर स्वामीका यहू निर्बाण कल्याणक का स्थान जैनीयोंका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है । ३४ मां तीर्थकर के समवसरण की रचना और उनका भोक्त यहाँ जये हैं । समवसरण के स्थानमें १ स्तंभ बर्तमान है कोई लेख नहीं है । वहाँसे प्राचीन चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तक्षावके पाड़ पर बिराजमान हुये हैं । अश्लिसंस्कार की जगह तालाब और मंदिर है । प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ खेताश्वरी और १ दिगम्बरी उस तालाब के पाड़में बनाहै और कई धर्मसालायें है ।

समवसरणजी के प्राचीन चरणों पर ।

[ 181 ]

उं सं० १६४५ वर्षे बैशाख सुदि ३ गुरो श्री ----- कनकविजय मखिजि: --- ।  
( अक्षर घस जानेके कारण पढ़ा नहीं जाता )

जलमंदिर — पावापूरीजी  
श्री गोतमस्वामीजीके चरणोंपर ।

[ 182 ]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इंद गोतम गणधर पाडुकां कारापितं उसवांछ चोरनिया

गोत्रे नानकचंद जीवनदास प्र० बृ० । ज० । श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पयः  
जय उपदेशात् ।

श्री सुधर्मा स्वामीजीके चरणोंपर ।

[ 183 ]

५५५/५५५/५५

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं पाण्डुका श्री सुधर्मा स्वामी कारापितं शोलाजाल ज्ञातों  
धाड़ेवा गोत्रे - न सुख प्रतिष्ठितं बृ० ज० श्री जिन नंदीवर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पयजय  
उपदेशात् ।

बामे तर्फकी गुमटीमें १६ चरणोंपर ।

[ 184 ]

संवत् १९३१ का मित्ती माघ शुक्ल १० तिस्रो चंद्रवारे श्री बृहत् गुजराती लुंका गढें  
श्री पूज्याचार्य श्रीश्री १०० श्रीश्री अक्षयराज सूरि तत्पट्टालङ्कार श्री अजयराज सूरि  
चरण प्रतिष्ठितं सुश्रावक बाबू श्री प्रताप सिंघजी राय धनपत सिंघजी हूगड़ गोत्रीयेण  
पोड़श महासती चरण कारापितं ॥ श्री शुभंचूयात् ॥ पावापुरीमें - स्थापितं ॥

दाहिने तर्फकी गुमटीमें चरणपर ।

[ 185 ]

॥ संवत् १९५३ वर्षे आषाढ शुदि पञ्चमि दिने गणि दीप विजयणा पाण्डुका० ॥

गांव मंदिर - पावापुरी ।

पंचतीर्थोंपर ।

[ 186 ]

सं० १५१९ आषाढ वदि १० मंत्रिदलिय श्री उलियड़ गोत्रे स० मेधराज सु० जिणदास

शा० करगिणि पुत्रेण स० शुचकरण चा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन हावू जनन्याः श्रेयोर्थ  
श्रीःसंचवनाथ विं वं का० श्री खरतर श्री जिनचंद्र सूरि पद्वे श्री जिनचंद्र सूरिचिः प्रति-  
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[ 187 ]

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीमाख झातीय गोत्रे मौठिप्पा सा० रणमल्ल पुत्र  
झा० दीपचंद्र चार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गड्डे जहारिक श्री जिनचंद्र सूरि गुरुष्यो  
नमः ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथ विं वं कारितं ॥

वाषाणके चरण पर ।

[ 188 ]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ --- रूपचंद्र पुत्र जसराज इव्येण चार्या ---  
श्री वर्द्धमान जिनस्थेयं पाडुका कारा --- ।

[ 189 ]

॥ संवत् १९९३ वर्षे भाद्र सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरक चरण कमल पाडुके  
--- !

मध्यके चरणपर ।

[ 190 ] ५१०५० ४६

॥ पं० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलाच्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोवन्धिः ॥ संवत् १६९७  
वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री बिहार नगर वास्तव्य श्री कृषक जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री  
चरत चक्रवर्त्ति राजान मुख्य मंत्रिदल संतानीय महतीयाण झाती मुख्य चोपड़ा गोत्रीय  
संघनायक सं० संग्राम । राहदिआ गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री वृहत खरतर गड्डीय  
हरमणि जस्मित चाखस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित श्री  
वीर जिन निर्वाण चूमि श्री पावापुरी समीपवर्त्ति धरविमानानुकार श्री वीर जिन प्रासाद





प्रा० करगिणि पुत्रेण स० शुचकरण चा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन ह्यलू जनन्याः श्रेयोर्थ  
श्रीःसंचवनाथ विंशं का० श्री खरतर श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिचिः प्रति-  
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[ 187 ]

सं० १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय गोत्रे मौठिप्पा सा० रणमल्ल पुत्र  
छा० दीपचंद चार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गच्छे जट्टारिक श्री जिनचंद्रस सूरि गुरुप्यो  
नमः ॥ प्रतिमा श्री शान्तिनाथ विंशं कारितं ॥

वाषाणके चरण पर ।

[ 188 ]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ --- रूपचंद पुत्र जसराज इत्येण चार्या ---  
श्री वर्द्धमान जिनस्थेयं पाडुका कारा --- ।

[ 189 ]

॥ संवत् १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरक चरण कमल पाडुके  
--- !

मध्यके चरणपर ।

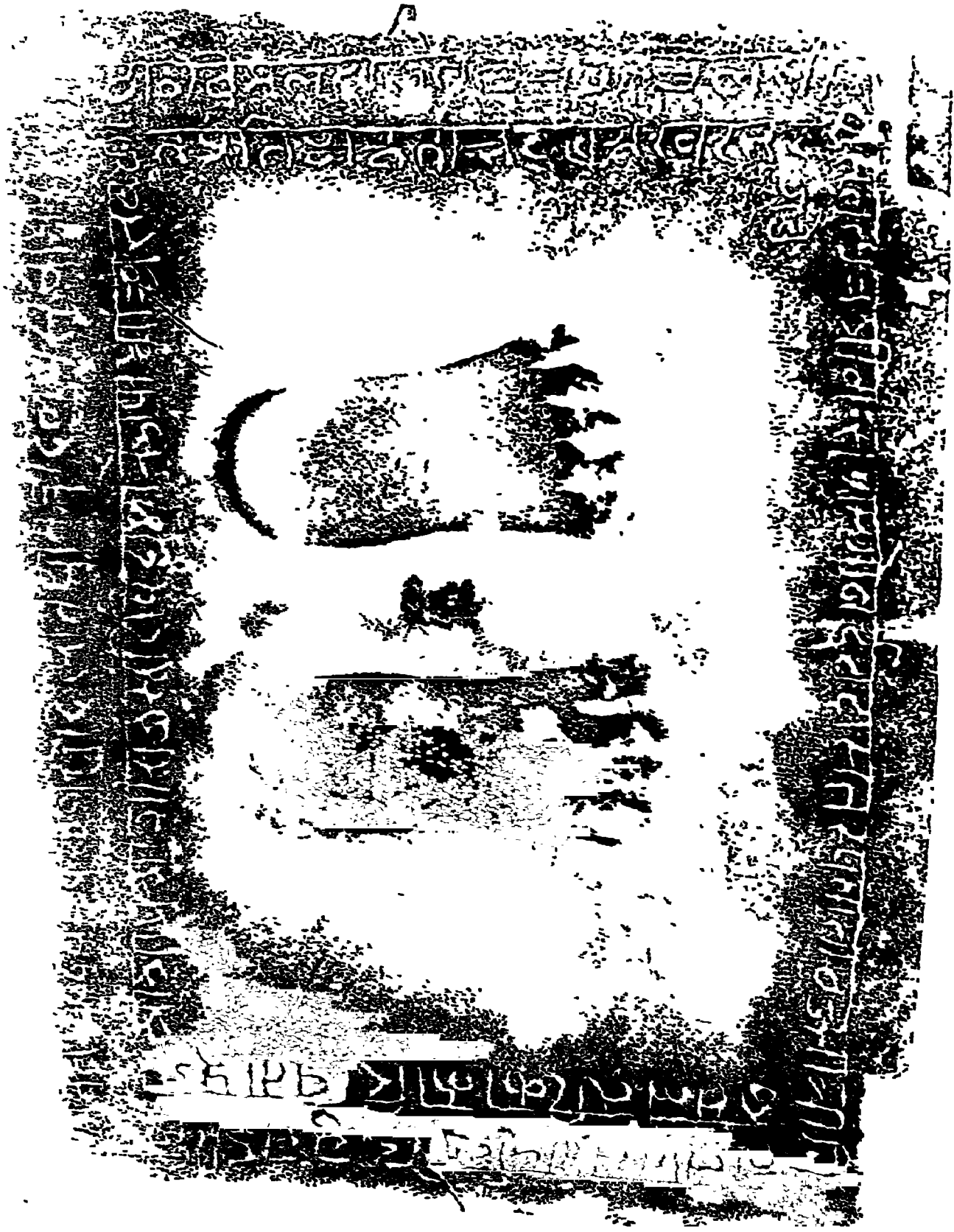
[ 190 ] ५१०५० ४६

॥ पं० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलाच्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोऽब्धिः ॥ संवत् १६९८  
वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री बिहार नगर वास्तव्य श्री कृषज जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री  
चरत चक्रवर्त्ति राजान मुख्य मंत्रिदल संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपडा गोत्रीय  
संघनायकं सं० संग्राम । राहदिआ गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री वृहत खरतर गच्छीय  
वरमणि जफित चाखस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित श्री  
वीर जिन निर्वाण चूमि श्री शवापूरी समीपवर्त्ति वरविमानानुकार श्री वीर जिन प्रासाद

Footprints, Gunashila (Gunawa) Temple, dated S. 1688 (1631 A D)



Footprints, Gumashila (Gunawa) Temple, dated S 1688 (1631 A D)



चूषो धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पाहुके महतिषाण श्री संघेन कारिते ।  
 प्रतिष्ठिते च श्री बृहत्खरतर गङ्गाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोक्षार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री  
 जिनसिंह सूरि पट्टोदयगिर दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिभिः ॥ श्रीर्जवतु । श्री  
 कमल खाजोपाध्यायाः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य सहिताः प्रणमंति ।

११ गणधरोके चरणों पर ।

[ 191 ]

१ । संबति १६ण्ठ प्रतिष्ठे । वैशाख सुदि ५ सोमवारे । श्री बिहार नगर वास्तव्य श्री  
 जगत चक्रवर्त्ति महाराजात सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दलान्वोय नरमणि मंफिक्त श्री जिन  
 बंड सूरि प्रबोधित महतिषाण ज्ञाति मफ्फन चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सपरिवारेण ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निचूति ॥ २ श्री वायुचूति ॥ ३ श्री व्यक्तस्वामि ॥ ४  
 श्री सुधर्मा स्वामि ॥ ५ श्री मंफिक्तपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक  
 स्वामि ॥ ८ श्री अचलत्राता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रजास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति • ।

[ 192 ] ५१ ०१५-१ ५७

। पं० ॥ स्वस्ति श्री संबति १६ण्ठ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहिं-  
 कां इसकल नूर मफ्फखाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री बीर  
 वर्द्धमान स्वानि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापूरी परिसरे श्री बीर जिन चेत्य निवेशः ॥  
 श्री कृपच जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री जगत महाराज सकल मंत्रि मफ्फ श्रेष्ठ मंत्रि  
 श्री दल संतानीय महतिषाण ज्ञाति श्रृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसी चार्या  
 निहावो पुत्र सं० संग्राम खडुजात गोवर्द्धन तेजपाल जोजराज । रोहदिय गोत्रीय सं० पर-

\* यह वेदोके अन्दर दवा भया है इस कारण सन पढ़ा नहीं गया ।

माणंद सपरिवार महधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोच्चम । बधायक ठण डुलाचंद काड्डा गोत्रीय  
 मण मदन सामीदास मनोदर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास  
 गिरिधर संतोदास प्रसादी । वार्तिदिपा गोण गूजरमह्व षूदड़मह्व मोहनदास माणिकचंद  
 बूदमह्व जेठमह्व । ठण जगन नूरीचंद । दान्हरा गोण ठण कल्याणमह्व मलूकचंद संतोषचंद  
 सयला गोत्रीय ठण सिंह कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ । काड्डा गोण क्याल  
 दास नोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किन्नू । काणी गोत्रीय ठण राजपाल रामचंद  
 -- महावीर -- कीर्त्तिसिंघ ठण बयीचंद । जीजीयाण गोण मण लथमल नंदलाल ।  
 नान्हड़ा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कमलदास । रोण सुंदर सूरति  
 मूरति सवलकृती प्रताप -- ठण मदमह्व जाण हरदासपुर -- -- ।

पाषाणके मूर्त्तिपर ।

[ 103 ]

॥ सिरि देवहि गणि खमा समणा होत्ता तेसिं सिरि बीर निवाणाल नवसय अत्तीई  
 वरि सेहिं जिणागम रक्कगा तुळ्हेह कारणाळ विंविमिणं पह्ठावियं सिरि-जिण महिंइ  
 सूरिहिं ॥ संण १९१० बर्षे मा । सुण १ ।

बेदी पर ।

[ 104 ] पाषाणके ५८

संण १९३५ मिति जेष्ठ शुक्ल ५ बुधवासरे इदं बेदिका कारापितं जसवाल ज्ञातौ रांका  
 सेविया गोत्रे सेठजी श्री लबमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमलजी तत्जातु धनसुख दासजी ।

दाहिने तर्फे दादाजी की कोठरीके चरणोंपर ।

[ 105 ]

माह सुदि १३ दिने -- -- सूरिणा पाडुके -- -- ।

संवत् १६७६ वर्षे - क - - - । प्रवर्त्त - - - : । श्री खरतर गष्टे श्री उपाध्याय रत्न  
तिलक सूरिनां तः शिष्येन श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद शाखायां कारा  
पितं उपदेन - - गुजु - - पाठकस्य - - - श्री रत्नतिलक गणि प्रतिष्ठितं वाः लब्धि  
सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ १ ॥

मूल नायक - - - - राज सत्तासन धारकं । ० । ० गुजरे मह - न ति - - गोत्रे  
- - उः बेनीवास । तुलसीदास - माणिक - - दास - - कारापितं । श्री - - - . स्यां  
पाडुका श्री - - स्य गुरु - - श्री जिन लब्धिसेन सूरि कृता ॥ यस्यां पाडुके बृहत् श्री खर  
तर गणा - यं जुग - - श्री युगप्रधान - - श्री जिनचंद्र सूरि शाखायां श्री उपाध्याय -  
श्री रत्नतिलक - - तत्पद्माङ्गार श्री बाचनाचार्य - लब्धिसेन गणि आदेशेन श्री दत्तचंद  
- - याणा बालिडिवा गोत्रे । नैरवन - - उः गुजरमन्नेन - - श्री रत्नतिलक वाः - - - त  
वाः - - करेन प्रतिष्ठा पुनमीया - - ।

॥ संवत् १९०१ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमबारे श्री जिन कुशल सूरिणा पाडुके ॥  
महतीयाय चोपड़ा गोत्रे । सङ्घवी तुलसी दास चार्या कल्याणी निहालो पुत्र सङ्घवी संग्राम  
सिंह - - - गणिजिः प्रतिष्ठिता श्री पावापुरी समस्त श्री सङ्घ संहिता श्री रस्तु ।

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १९९५ माघ शुक्ल ३ श्री जिनदत्त सूरि सद्गुणां श्री जिन  
कुशल सूरिणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं जः श्री जिन महेंद्र सूरिजिः । का । ठा । मो । श्री  
सिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन श्रेयोर्थ मानंदपुरे ॥

माणंद सपरिवार महधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोच्चम । बधायक ठण्डा चंद काङ्गड़ा गोत्रीय  
 मण्डन सामीदास मनोदर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास  
 गिरिधर संतोदास प्रसादी । वार्तिदिपा गोण गूजरमल्ल शूद्रमल्ल मोहनदास माणिकचंद  
 बूदमल्ल जेठमल्ल । ठण्डा जगन नूरीचंद । दान्हरा गोण ठण्डा कल्याणमल्ल मलूकचंद संतोषचंद  
 सयला गोत्रीय ठण्डा सिंह कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ । काङ्गड़ा गोण दयाल  
 दास नोबालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किन्नु । काणी गोत्रीय ठण्डा राजपाल रामचंद  
 -- महाबीर -- कीर्त्तिसिंघ ठण्डा उबीचंद । जीजीयाण गोण मण्डल लखमल्ल नंदलाल ।  
 नान्हुड़ा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कमलदास । रोण सुंदर सूरति  
 मूरति सबलकृती प्रताप -- ठण्डा मदमल्ल जाण हरदासपुर --- ।

पाषाणके मूर्त्तिपर ।

[ 193 ]

॥ तिरि देवहि गणि खमा समणा होत्ता तेसिं तिरि बीर निवाणाल नवसय अत्तीई  
 वरि सेहिं जिणागम रक्कगा तुळलेह कारणाळ विंवभिणं पह्छावियं तिरि जिण महिंद  
 सुरीहिं ॥ संण १९१० बर्षे मा । सुण १ ।

बेदी पर ।

[ 194 ] पालिका ५८ ५४

संण १९३५ मिति जेष्ठ शुक्ल ५ बुधवासरे इदं बेदिका कारापितं उसवाल ज्ञातौ रांक्य  
 सेठिया गोत्रे सेठजी श्री लखमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमल्लजी तत्पुत्र धनसुख दासजी ।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर ।

[ 195 ]

माह सुदि १३ दिने --- सूरिणा पाडुके --- ।

संवत् १६७६ वर्षे - क - - - । प्रवर्त्त - - - : । श्री खरतर गद्ये श्री उपाध्याय रत्न  
तिलक सूरिणां तं शिष्येण श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद शाखायां कारा  
पितं उपदेन - - गुजु - - पाठकस्य - - - श्री रत्नतिलक गणि प्रतिष्ठितं वां लब्धि  
सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ १ ॥

मूळ नायक - - - - राज सत्तासन धारकं । ० । ० गुजरे मह - न ति - - गोत्रे  
- - ठं बेनीदास । तुलसीदास - माणिक - - दास - - कारापितं । श्री - - - - स्यां  
पाडुका श्री - - स्य गुरु - - श्री जिन लब्धिसेन सूरि कृतः ॥ यस्यां पाडुके बृहत् श्री खर  
तर गणा - यं जुग - - श्री युगप्रधान - - श्री जिनचंद्र सूरि शाखायां श्री उपाध्याय -  
श्री रत्नतिलक - - तत्पट्टाळझार श्री वाचनाचार्य - लब्धिसेन गणि आदेशेन श्री दलचंद्र  
- - याणा बाळिडिवा गोत्रे । नैरवन - - ठां गुजरमन्नेन - - श्री रत्नतिलक वां - - - त  
ठां - - करेन प्रतिष्ठा पुनर्माया - - ।

॥ संवत् १९०२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमबारे श्री जिन कुशल सूरिणा पाडुके ॥  
महतीयाय चोपडा गोत्रे । सद्दवी तुलसी दास चार्या कळ्याणी निहालो पुत्र सद्दवी संग्राम  
सिंह - - - गणिजिः प्रतिष्ठिता श्री पावापुरी समस्त श्री सद्द संहिता श्री रस्तु ।

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १९९५ माघ शुक्ल २ श्री जिनदत्त सूरि सद्गुरुणां श्री जिन  
कुशल सूरिणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं च श्री जिन महेंद्र सूरिजिः । का । ग । मो । श्री  
सिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन श्रेयोर्थ मानंदपुरे ॥



दाहिने श्री स्थूलजड कोठरी के चरणों पर ।

[ 200 ]

श्री ॥ नमनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां ( १७७७ ) नयन रस सरत्वाञ्चन्द्र  
शुक्लेषु शाके ( १७६२ ) ॥ सित पटधर पादो फाद्युने शुक्ल पद्मे जुजगपति तियो ( ५ )  
सङ्गर्गवे वासंरहे ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म बृद्धर्य्य श्री स्थूलजडाचार्य्य षादपञ्च प्रनिष्ठा  
बृहत् खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पद्म प्रजाकर श्री जिन महेन्द्र सूरिणा कारिता उ० ॥  
श्री ह्रीरधर्म गणि विनय विद्वत्कुलकञ्ज प्रजाकर श्री कुशलचंद्र गण्युपदेशतः । काशीस्थ  
श्री संज्ञेः ॥ बृहद्विद्या गोत्रांयोचम चंद्रात्मज मुन्निषाखात्रिभेन ॥

[ 201 ]

( १ ) ॥ सं० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पाडुका । ( २ ) ॥ श्री जिन छलित सूरि  
पाडुका ।

[ 202 ]

सं० १७७७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पद्मे पूर्णिमा तियो १५ गुरुवासरे० बृहत् खरतर  
गणे० यु० ज० श्री जिनरंग — — — ।

[ 203 ]

सं० १७७७ वर्षे कार्तिक शुक्ल पद्मे राका तियो १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गणे यु०  
श्री जिनरंग सूरि शास्त्रायां आचार्य्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतिनंदन  
गणिनां पादपद्मे स्थःप्यते० वा० जुवनचंद्रेण । वा० सुमंतनन्दन गणिनां चरण कमले जवतः  
॥ १७७० श्री जिन चन्द्र सूरिणां चरण कमले इमे जवतः ।

श्री चंदनवाला कोठरी के चरणों पर ।

[ 204 ]

॥ सं० १७२० प्र० श्री सुजाण विजयाजी पाडुका ।

( ५१ )

[ 205 ]

सं० १९०० मा वर्षे सिते १२ ॥ बृहत् खरतर गङ्गे यु० ज० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां  
शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्त्ति विजयायां -- चरण सरसी रुं  
प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौजाग्य विजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[ 206 ]

सम्बत १८४८ शाके १९१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथौ मृगु वासरे श्री मत् खरतर  
गङ्गे चहारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीमहचरा मति विजयाकस्य पाडुका शिष्यनी  
रूपविजिया पावापूरी मध्ये प्रतिष्ठापितेः

[ 207 ]

॥ श्री संवत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र वारे श्री मद्बृहद्धोंका  
गुर्जरधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००८ श्रीश्री अक्षयराज सुरिजी चरण कमलौ  
स्थापितौ श्री अक्षयराज सुरिजिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभ्रचवतु =

[ 208 ] ✓

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर  
जिनवर चरण कमले शुभ्रे स्थापिते । हुगली वास्तव्य उंस बंशे गांधि गोत्रे बुलाकी दास  
तत्पुत्र साह माणिकचंदेन श्री क्षत्रीयकुंभ नगर जन्मस्थाने जन्मकल्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं  
करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावन्नचस्तले सूर्य चंद्रमसौ स्थितौ वरौ तावन्नंदतु तीर्थोयं  
स ----- !

[ 209 ]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री क्षत्रीकुंभे  
संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

सं १७३७ माघ शुभ ५ सकल संघेन श्री वीर पाडुका काराषितं स्थापितं श्री पावापुर्या ।  
 आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

## बिहार ।

बिहार वा सूवेबिहार का प्राचीन नाम “तुंगिया नगरी” था । निकट में विशाला नगरी,  
 भी थी । जैन सहर था, पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे “बिहार” नाम प्रसिद्ध जया ।

धातुओं के मूर्ति पर ।  
 मथियान महद्वा ।

[ 211 ]

सं० १४३७ श्री —— तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ  
 सा देव्हा पुष्यार्थं का० प्र० श्री जिनराज सूरि ।

[ 212 ]

प० ॥ सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ दिने उकेश वंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० लक्ष्मणेन  
 पुत्र रतना नरसिंह नयणा जा० — दादि परिवार सहितेन निज पुष्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंद  
 कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिन बर्द्धन सूरिजिः ॥

[ 213 ]

सं० १५०६ माघ सुदि ५ —— छोड़ा गोत्र —— पुत्र काकाकेन जा० काका श्री पु० ——  
 माया — जा० हेम —— नाथू जा० कुमिदे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गढे श्री सुनि  
 तिखक सूरि ।

ए।सं० १५०९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ दिने श्री उकेश बंशे छोड़ा गोत्रे सां चौघा संताने सां बीरा जार्या जावलदे पुत्र सां चाडाकेन पुत्र नीमल बीसल छूदा माका सहितेन श्री वासुपुन्य विंवं कारितं प्रति० श्री खरतर गह्याधीश श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार श्री जिन चंद्र सूरि युगप्रधान गुरुराजौ ।

[ 215 ]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नगराज सुत ठ० लघूचार्या धामिणि पु० सं० श्री अवलदासेन पुत्र ठ० जग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन वीरसेन देपाल पहिराजादि परिवार बृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गह्ये श्री जिनचंद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[ 216 ]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ बदि १ श्री मंत्रिदलीय शाखायां बायड़ा गोत्रे स० बौमराज जाण सूरदेवी पुत्र ठ० दासू जाण कपूरदे पु० ठ० सदय वध ( ? ) प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ विंवं कारितं प्र० श्री खरतर गह्ये श्री जिनसुंदर सूरि पदे श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥ श्री ॥

[ 217 ]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० श्री नगराज सुत ठ० श्री लघूचार्या धामिणि पुत्र स० सिंगारसी जाण कुंवरदे पु० स० राजमह्य सुभावकेण पुत्रादि परिवार सहितेन श्री आदिनाथ मूल विंवश्चतुर्विंशति पदे कारितः प्रतिष्ठितः खरतर श्री जिन चंद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० बरागामेः ॥ ७ ॥

[ 218 ]

सं० १५२० वर्षे माघ सुदि दशम्यां बुधे श्रीमाल हातीय स० राजु जार्या धरणी आत्म

श्रेयोर्थं श्री नेमिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनजड सूरि पदे श्री जिन  
चंद्र सूरिराजैः ॥ श्री मंरुपे दूर्गे महाता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[ 219 ]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ उपके० सूर गोत्रे सा० सिवराज चा० माकु पु०  
पासा सहसा चातु बठराज पुण्यार्थं श्री शितलनाथ विंशं का० प्रति० श्री उपकेश गढे ककु-  
द्वाचार्य संताने श्री कक सूरिजिः ॥ ७ ॥

[ 220 ] 1. 12 54

सं० १५४७ वर्षे वैशाख मासे उपकेश बंशे दोसी गोत्रे सा० कबू पुत्र सा० लषा चार्या  
रुपाई पुत्र० लषमी धरेण चार्या लीलादे सहितेन श्री अजितनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
खरतर गढे श्री जिनसमुद्र सूरिजिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[ 221 ]

सं० १६३७ समये फागुण सुदी ५ जौमे श्री मूलसंघ सरस्वति गढे बलात्कार गणें  
श्री कुंडकुंदाचार्यान्वये ज० श्री धर्मकीर्ति देव तत्पट्टे ज० श्री शीलचूषण तत्पट्टे ज० श्री ज्ञान  
चूषण अथ ज० सुमित्रनी तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्ति ततशिष्य । मंरुपे चार्या श्री मेरुकीर्ति  
गुरुपदे - जू ॥ मगध देसे । खुदिमपुर वास्तव्य जेसवालान्वये कष्टहार गोत्रे सा० बीरम  
तज्ञार्या वंशत्रयोः पुत्र सहसी तज्ञार्या अजेसिरि त्रयो पुत्रौ प्रथम किनू तज्ञार्या परिमल  
तत्पुत्र जिनदास तज्ञार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास चार्या  
रुकमिनि मेतेषां मध्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुभं चतु ॥

(५५)

## लखनाग का मंदिर ।

[ 222 ]

सं० १५३९ ब० बै० शु० ३ सोमे प्रा० वृ० मं माईया जा० वरजू पु० सीधर जा० मांजू  
त्र गोरा जा० रुकमिणि पु० बद्धमान मातृ पितृ श्रे० श्री कुंथुनाथ वि० कारापितं प्र० तपा०  
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[ 223 ]

सं० १६४३ फा० ति० १२ श्री हीर विजय शिष्य श्री विजयसेन सूरिजिः प्र० आदि  
नाथ -- ।

[ 224 ]

सं० १७७७ चैत्र सु० १५ -- विं० श्री जिनहर्ष सूरिणा ३३ महतावचदं जार्या  
श्राविका -- ज्या गुलाबचंद पुत्र युतया -- ।

[ 225 ] ✓ १८११ ५५

सं० १७९६ ज्येष्ठ बदि ७ ओसवाख झाती जम्मड गोत्रीय बाबु प्रेमचंद तत्पुत्र बिहारी  
झालेन श्री सिद्धचक्र पदं कारापितं प्रतिष्ठितं बिष्णुदय गणिना ।

पाषाण पर ।

[ 226 ]

संवत् १५२४ जेष्ठ बदि ४ श्री उपकेश झातौ साह श्री शक्तिसिंघ जा० सहजलदे  
साह सोमा जार्या आपु नाम्न्या आत्म श्रेयसे श्री अजितनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री उपकेश गळे श्री कक सूरिजिः ॥ श्री अजितनाथ प्रणमति बाई आपु नाम्न्या

[ 227 ]

संबत १६०४ वर्षे -- माघ सुदि ए दिने जोमबासरे श्रवण नक्षत्रे -- -- -- गोत्रे  
ठाकुर -- -- -- ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुलीचंद श्री जिन कुशल सूरीणं पाडुके कारितं ।

[ 228 ]

सं० १६९४ शाके १५५९ ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र बदि १३ शुके शुके मुहुर्ते दक्षिण  
देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे ज० श्री मूल शृंगार हा -- -- -- बघेरवाल ज्ञातौ स०  
श्री तोला ज्ञा० सं -- -- -- पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ -- -- -- देव ज्ञार्या सोहि -- -- -- श्रेयोर्थ  
-- -- -- श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[ 229 ]

सं० १०३० माघ शुदि ५ -- श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि -- ।

[ 230 ]

सं० १०३० माघ शु० ५ सकल संघेन शान्तिनाथ पाडु० कारापिता --

[ 231 ]

प्रणमहिये गूणवीस सय बरसे बइसाह -- सुद्ध -- -- बह पियामह सिरि जिन  
कुशल सूरि पाय छवणा कारिया सिरिमाल बंसे वदलीया गुत्ते साह कमला बइणा विसाला  
सुपइ छिय सयल सूरीहिं ॥ श्री ॥ :

[ 232 ]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः  
सं० १०४६ मीती बेसाख सुदो १३ -- -- -- ।

( ५७ )

[ 233 ]

सं० । १९३९ फाद्युन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सूरि पादन्यास । जं० । यु । प्र  
न । श्री जिन मुक्ति सूरिश्चरणामादेशात् श्री दालचंद गणितः प्रतिष्ठितं ॥ सेठ गोत्रीय  
ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर वरो

[ 234 ]

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संबत् १९५० सि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंधे सरस्वति गठे वला-  
त्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्राय सकल कीर्त्ति जट्टारक तत्पदे । जट्टारक कनक कीर्त्ति  
उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तज्ञार्या केशरबाई खुरदेवाळे प्रति०

[ 235 ]

संबत् १९५५ पोस सुद १५ गुरु ॥ श्री लुंपक गठे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठि-  
तम् ॥ बाबू लक्ष्मीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पादुकेभ्योः  
॥ श्री स्थूलजड्र सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरिः ॥

## राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह ( राजगिरि ) बहुत प्राचीन नगर है । ३० मां तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ठ बदि-७ जन्म फाद्युन सुदि-१२ दीक्षा फाद्युन बदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है । ३२ मां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समय में जरासंधकी जी यही राजधानी थी । ३४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । गौतम बुद्ध की जी यही लीला भूमि थी । प्रसेन जित उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी जी १४ चौमासे यहां किये । जंबुस्वामी, धन्ना, शालिजड्रजी आदि बड़े २ लोग यहांके रहने वाले थे । यहां



पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुरू, सूर्यकुरू आदि उष्ण कुरू बहुतसे हैं और स्थान देखने योग्य हैं। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुल्लगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदयगिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैजारगिरि। पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। बहुतसे चरण वा मूर्ति इधरसे उधर बिराजमान हैं इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिला दिया गया है।

### पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति । ●

[ 236 ]

( १ ) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुलाचलामरगिरि स्थेयः स्थिति स्त्रीकृतिः पत्र श्रेणि रमाजिराम जुजगाधीशस्फटासंस्थितिः । पादासीन दिवस्पतिः शुभ फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु बांछित फ

( २ ) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविजोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राजां जय राम लक्षण जरासंधादि जूमीजुजां । जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि श्री शाखिनां संजवः प्रापुः श्रेणिक चूधवादि

\*“ जैन तीर्थ गाईड ” के तवारिख सुवे बिहार में उसके ग्रंथकर्ता लिखते हैं कि मथीयान महल्लाके “ मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुआ है — — संवत तियि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति ( १६ ) हर्फ वमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है वन्न शाखा वगेरह नाम वेशक मौजूद है ” यह पढ़ कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई । पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया । किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया । पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है । यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था । इसमें श्री खरत्तर गच्छकी पट्टावली है जिसे वद्वत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा । यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है आर उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्ताका भी नाम विद्यमान है पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है ।

( ३ ) ज्विनो बीराञ्च जैनीं रमां ॥ १ यत्राञ्चय कुमार श्री शालिधन्यादि माधनाः ।  
सर्वार्थ सिद्धि संज्ञोग जुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुलान्निधोवनि धरो वैचार  
नामापिच श्री जैनेन्द्र बिहार चूषण धरौ पूर्वाप

( ४ ) राशास्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लक्ष्यं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राज-  
गृहान्निधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण  
महत्तम तीर्थे । श्री राजगृहम

( ५ ) हातीर्थे । गजेंद्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूला पीठे सकल  
महीपाल चक्रचूला माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे । सुरत्राण श्री साहि  
पेरोजे महीमनुशासति । तदीय

( ६ ) नियोगान्मगधेषु मलिक बयोनाम मण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास  
दुरदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं  
बद्धः श्रुती अपि शिरः

( ७ ) सुतरां सुतारा सौयं बिजाति जुवि मंत्रि दक्षीय बंशः ॥ ५ बंशेमुत्र पवित्र धीः  
सहज पालाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सहुणमणी शृंगारितांगः पुरा । तत्सूनुस्तु  
जनस्तुत स्तिहुण पालेति प्रतीतो चव

( ८ ) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहान्निधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर  
भंमनाख्यः सद्धर्म कर्म बिधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणान्निधाम जज्ञे  
गृहेस्यः गृहिणी धिर देवि नाम

( ९ ) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समञ्चवन् जुवने बिचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः ।  
तत्रादिमास्त्रय श्मे सहदेव कामदेवान्निधान महाराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जवति  
संप्रति बहुराजः श्री मा

( १० ) न सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । याज्यां जनाधिकतया घनपंक पूर्व देशेपि धर्म-  
रथ धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ९ प्रथम मनव माया बहुराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति  
सन्नीति रीतिः । प्रचवति पहराजः सह

( ३ ) ज्विनो बीराञ्च जैनीं रमां ॥ १ यत्रात्रय कुमार श्री शालिधन्यादि माधनाः ।  
सर्वार्थ सिद्धि संज्ञोग जुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुलाजिधोवनि धरो वैजार  
नामापिच श्री जैनेन्द्र विहार चूषण धरौ पूर्वाप

( ४ ) राशास्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लक्ष्यं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राज-  
सहाजिधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण  
महत्तम तीर्थे । श्री राजग्रहम

( ५ ) हातीर्थे । गर्जेन्द्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूला पीठे सकल  
महोपाख चक्रचूला माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे । सुरत्राण श्री साहि  
पेरोजे महीमनुशासति । तदीय

( ६ ) नियोगान्मगधेषु मलिक बयोनाम मण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास  
डुरदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं  
बद्धः श्रुती अपि शिरः

( ७ ) सुतरां सुतारा सोयं बिजाति जुवि मंत्रि दक्षीय बंशः ॥ ५ बंशेमुत्र पवित्र धीः  
सहज पादाख्यः सुमुखयः सतां जज्ञे नन्यसमान सहृणमणी शृंगारितांगः पुरा । तत्सूचुस्तु  
जनस्तुत स्तिहुण पालेति प्रतीतो जव

( ८ ) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहाजिधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर  
भंगनाख्यः सद्धर्म कर्म बिधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणाबिधाम जज्ञे  
ग्रहेस्यः ग्रहिणी थिर देवि नाम

( ए ) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समजवन् जुवने बिचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः ।  
तत्रादिमात्रय इमे सहदेव कामदेवाजिधान महाराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जवति  
संप्रति बहुराजः श्री मा

( १० ) म् सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । याचर्या जनाधिकतया धनपंक पूर्व देशेपि धर्म-  
रथ धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ए प्रथम मनव माया बहुराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति  
सन्नीति रीतिः । प्रजवति पहराजः सह

( ११ ) ण श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्चोढराख्यः ॥ १० द्वितीया च प्रिया  
जाति बीधी रिति विधि प्रिया । धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च  
दयिताद्या देवराजस्य राजी गुण म

( १२ ) णि मयंतारा पार शृंगार सारा । स्मन्नवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनुच  
गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कलत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः  
बीमराजो ग जातः । प्रथम उदित पद्मः पद्म

( १३ ) सिंहो द्वितीयस्तदपर धमसिंहः पुत्रिका चाड्वरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीवर्द्धमान  
जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिजंदः । सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत  
सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

( १४ ) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समन्नवदशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव महीधर जेद वज्रः  
यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश  
मतीव विकाशवत्यां चांद्रेकु

( १५ ) ले विमल सर्वकला विद्यासः । उद्योतनो गुरुरजाद्विबुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु  
मुनि र्गणि वर्द्धमानः ॥ १६ तदनु ज्वनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाचूरिः  
सूरिर्वचूत्र जिनेश्वरः । खरतर इ

( १६ ) तिख्याति यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकर्ला श्रीषंद --- दुगणो वनौ ॥ १७  
ततः श्रोजिन चंद्राख्यी बचूव मुनि पुंगवः । संवेग रंगशाळां यश्चकारच वच्चारत्र ॥ १८  
स्तुत्वा मंत्र पदाक्षरै र्वनितः श्रीपा

दुसरा पत्थर ।

( १७ ) श्र्व चिंतामणिं --- ताकारिणं । स्थानेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रं  
नवान्यायके । --- ताऽ जय देव सुरिगुरव स्तेतः परं जङ्घिरे ॥ १९ ---

( १८ ) --- ( जिनवद्धज ) --- शांगनोवद्धजो --- प्रियः यदीय गुण  
गौरवं श्रुतिपुटेन सौभोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिन-  
दत्तसूरिरन्नवद्योगीड चूडामणि मिथ्याध्वां

( १९ ) त निरुद्ध दर्शन — — — — श्रावक यान्य देशि सुगुरुः क्षेत्रेत्र सर्वोत्तमः सौव्यः  
पुण्यव्रतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ ११ ततः परं श्रीजिनचंद्र सूरिर्वचुव निःसंग  
गुणास्त चूरिः ।

( २० ) चिंतामणि जालतले यदीये ध्युवास वासादिव जाग्य लक्ष्म्याः ॥ १२ पक्षे  
लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टांत स्थिति बंध बंधुरमपि प्रक्षीण दृष्टांतकं ।  
वादेर्वादिगत प्रमाणमपि यै वाक्यं ।

( २१ ) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या वचूवु सूतः ॥ १३ अथ जिनेश्वर  
सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोचर ज्ञास्वराः । शुवि विवोधित सत्कमला करा समुदिता  
वियति स्थिति सुन्दराः ॥ १४ जिन प्र

( २२ ) बोधा हंत मोह योधा जने विरेजुर्जनित प्रवोधाः । ततः पदे पुण्य पदे दसीधे मण्यं  
ह चर्था यति धर्म धुर्याः ॥ १५ निरुंधानो गोचिः प्रकृति जरुधीनां विलसितं त्रमत्रश्य  
जोतो रस दश कला केखि

( २३ ) विकलः । उदितस्तत्पट्टे प्रतिहत तमः कुग्रह मति नवीनो सौ चंद्रो जगति  
जिन चंद्रो यतिपतिः ॥ १६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धारे  
सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

( २४ ) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम-जिनपते येन सौचै र्यशोजि श्वित्रंचक्रे जगत्यां  
जिन कुशल गुरु स्तपदे जाव शोजि ॥ १७ वाटपेविद्यत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केली विलो  
क्य सरसा हृदि शारदापि । सौजाग्य

( २५ ) तः सरजं संविल्लासं सोयं जातस्ततो मुनि पतिजिन पद्मसूरिः ॥ दृष्टा पदृष्ट  
सुविशिष्ट निजान्य शास्त्र व्याख्यान सम्यगवधान-निधान सिद्धेः । जज्ञे ततो ऽस्त कलिकाल  
जना समान ज्ञान क्रिया

( २६ ) ङि जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ १८ तस्यासने विजयते सम सूरि वर्धः सम्यग  
दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः । श्रीजैन शासन विकासन चूरि धामा कामापनोदन मना जिन  
चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश

( ३७ ) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत - - - । श्रीमद्विहार पुर  
वस्थिति वञ्चराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वञ्चराजः सख-  
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरुनान्वय

( ३८ ) मंरुनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु  
श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्त्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो ज्ञुवन  
हिताजिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

( ३९ ) यनचंद्र पयोनिधि जूमिते ब्रजति विक्रम जूष्टुदनेहसि । बहुल षष्टि दिने श्रुचि  
मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः प्रासाद  
एष कलसध्वज मण्डितो

( ३० ) ऋः । निर्माप कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता ज्ञुवि सु प्रतिष्ठा ॥  
३६ श्रीमद्विर्जुवन हिताजिषेक वर्ये प्रशस्ति रेषाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति  
रिव मूर्त्ता ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

( ३१ ) द्वांगजेन पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण बीधाजिधानेन ॥ ३८ इति  
विक्रम संवत् १४१२ आषाढ बदि ६ दिने । श्रीखरतर गण शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सुरि  
पद्मालङ्कार श्रीजिनैन्द्र सूरिणासुपदे

( ३२ ) शेन । श्रीमंत्रि वंश मंरुन तं० मंरुन नंदनाभ्यां । श्रीज्ञुवन हितोपाध्ययानां  
पं० हरिप्रज्ञ गणि । मोद मूर्त्ति गणि । हर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्व  
देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

( ३३ ) णादि महा प्रजावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाभ्यां । तं० वञ्चराज  
तं० देवराज सुश्रावकाभ्यां कारि - - - - - स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रासादस्य प्रशस्तिः ॥ ज्ञुजं  
ज्ञवतु श्रीसंघस्य ॥ ५ ॥ ० ॥

( ६३ )

गांव मन्दिर-धातुओंके मूर्ति पर ।

( 237 )

सम्बत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

( 238 )

सं० ११९७ वर्षे आषाढ वदि ८ रवौ ज० ज्ञा० सा० सपुरा भा० सीतादे पु० कर्मसिंहेन श्री नमिनाथ विं व पितृ मातृ श्रेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव गुप्तसूरिभिः ।

षाषाण पर ।

( 239 )

सम्बत १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महसिआण वंशे जाटड़गोत्रे सा० देवराज पुत्र सं० भीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास । श्रीशांतिनाथ विं व कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपह्ने श्रीजिन चन्द सूरिपह्ने श्री जिन सागर सूरिणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ।

( 240 )

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तियौ गुरुवासरे श्री मुनि सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक धरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे मंथी गोत्रे वृलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं ।

( 241 )

सं० १८२५ भाघ सु० ३ गुरुषेतासाह पुत्र्या उमरवाइ केन शांतनाथ विं व कारापिता ।

श्री शुभ सम्बत १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवाचरे श्री वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री वृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान महारक श्री जिनरंग सूरेश्वर शाषायां य० यु० महारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरि राज्ये श्री वाचनाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल वंशोद्भव बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी बीबी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण कारिणो भवतु शुभमस्तु ।

शु० सं० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० खं० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संघीतीकस्य पत्नी चीरोंजी बीबी प्र० का० शुभमस्तु ।

सं० १९११ व० शा० १७७६ प्र० शुचि शु० १० ति० श्रीचन्द्र प्रभ विं० प्र० । प्र० । श्री जिन महेंद्र सूरिभिः का० सा श्री हकु-----खरतर गच्छे ।

विंपुलगिरि ।

संवत् १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्ल वाचरे । श्री बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपडा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्प्रार्था संघवण निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विंपुल गिरौ-----  
समै जीर्णा उद्धरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे--  
लिषतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही ।



( ६५ )

( 246 )

सं० १८१८ मित्ती कातिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्याति  
मुक्तकमुने मूर्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकेः ।

( 247 )

सम्बत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रभ जिन चरण न्यासः  
प्रतिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल  
दुतिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह घनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

( 248 )

संवत् १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध  
विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह घनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तु शुभं  
भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

( 249 ) विपुल जिहि, १ वटे ६५

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीनेमिनाथ जिन चरण कमले  
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन  
श्री राजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

( 250 ) विपुल जिहि १ वटे ६५

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीशांतिनाथ जिन चरण  
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक  
चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरी जीर्णोद्धारं क० ।

( ६६ )

( 251 )

॥ अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

( 252 )

अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमल स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री राजगृहे रत्नगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

( 253 ) उदयगिरि क्रिया ६६

॥ अं नमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अग्निनन्दन जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

( 254 ) उदयगिरि क्रिया ६६

॥ अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

( 255 ) उदयगिरि क्रिया ६६

अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो कल्याण हेतवे ॥ श्रीः ॥

( ६७ )

## स्वर्ण गिरि ।

( 256 )

सं० १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महत्तियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० पीमराज पुत्र सं० सिवराजेन । भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुटुम्बेन श्री आदिनाथ विंवकारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरिपहे श्रीजिन चन्द्र सूरि पहे श्रीजिन सागरसूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्रीखरतर गच्छे ।

## वैभार गिरि ।

( 257 )

सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्रीजिन चन्द्रसूरि विजय राज्ये तदादेशे श्रीवैभार गिरौ मुनि मेरुणा भि० ॥— श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीषू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

( 258 )

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्रीजिन चंद्र सूरिणा मादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः घन्नाशालि भद्र मूर्ति -- का० प्र० भीमसिंह ( ? ) श्रावकेण ।

( 259 ) वैभारगिरि, क्रि० ६७

अंनमः ॥ सम्वत् १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य श्रीसवंशे गांधि गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

( ६६ )

( 260 ) वैश्वानरगिरि ॥१॥ ६

॥ श्री सम्बत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसव्रंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते  
चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताय रायजी सद्गुर्म पत्नी  
जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणघर पादुका कारापितं । स्था० राजगृह  
नगरोपरि वैश्वानर गिरौ ॥

( 261 )

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिषरे  
श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं प्र० श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

( 262 )

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार गिरि  
शिषरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । महारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

( 263 )

सुप्त सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां त्रिथीशुभवासरे श्रीमत्  
शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत्स्वरत्न ग० श्री जिन रंगसूरीवर साखायां वृ० प्र०  
यं० युं० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु०  
कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन प्र०  
का० शुभमस्तु ॥

( 264 )

अंनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुस्य चरण  
क० प्र० श्री वृ० ष० ग० प्र० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत्  
शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू पुस्याल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन  
प्र० का० श्री वैश्वानर गिरे सुप्तमस्तु ॥

( ६९ )

( 265 )

॥ सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्या शुभवासरे श्रीमत्पाशर्व-  
नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत परतर ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर साषायां श्री जिन  
नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्  
ओ० वं० पुस्यालचन्द घीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराणकुंवर श्राविका प्र० का० वैभार गिरे।

( 266 )

॥ अ० नमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा०  
श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्स्य० ख० ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर साषा० श्री जिन  
नन्दी वर्द्धन सूरि थ० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्  
श्रीसवाल वंसोद्भव वावु मोहनलालजी कस्यात्मज वावु हकुमत राय—कस्य गोत्रीय  
प्र० कारापित शुभमस्तु । वैभार गिरी ।

( 267 )

ॐ नमः सिद्धं ॥ शु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ  
वा० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्स्य० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर  
साखा० प्र० यं० यु० प्र० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत्  
शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् बाबु महताब चन्दस्य सुचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरांजी  
वीवी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे ।

( 268 )

सं० १९११ व । शाके १७७६ प्र० । शुचिः सुदि । तिथौ श्रीनेमनाथपादन्यासो कारा०  
प्र० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः का । से० । गो । श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी महा कुमा—तस्या  
श्रेयोर्थं भवतुः ॥

## कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान बडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुव्वर ग्राम नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी ( इन्द्रभूति ) जी का जन्म स्थान है । बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विश्वविद्यालय और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । गवर्णमेंट के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ हुई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उपयुक्त बहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

## पाषाणपर ।

( 269 )

॥ ५ ॥ संवत् १९७७ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंशं का० ।

( 270 )

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कडरसी पुत्र म० भीषण कारित श्री महावीर विंशं प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

( 271 ) कुण्डलपुर 7०

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने मन्त्रिदल वंशे चोपरो गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठा० नीहाली तत्पुत्र भार्या ठा० कुरेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुव्वर ग्राम -- कारा पिता बृहत्खरतर गच्छे पूज्य श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अभय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

संवत् १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने----- मासि शुक्ल पक्षे सप्तमी गुरु वासरे  
 वृहत् श्री परत्तरगच्छे युग प्रधान श्रीजिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन  
 तस्य भार्या न्हालो श्राविका पुण्य प्रभात्रिका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता  
 श्री माहतीयाल (महत्तियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री  
 रत्नातिलक गणि पादुके प्रतिष्ठित वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

### पटना ( पाटलिपुत्र )

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी  
 को राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा  
 कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य वंशो चन्द्रगुप्त अशोक  
 आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वाति, भद्रबाहू-आर्य  
 महागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी  
 और सेठ सद्दर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है  
 सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल बिहार उड़ोसाके शासन कर्ता यहां रहनेके  
 कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पद है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

( 273 ) कुपटपुर 7 )

संवत् १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ मृगुवासरे श्री पडलीपुर वास्तव्य । श्री सकल संघ समु-  
 दायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धार कारापित ।  
 कार्य स्वामोक्षणे तपा गच्छोय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्द जो प्रतिष्ठित थ श्री सकल  
 सूरिभिः शुभं भूयात् ।

( ७२ )

## धातुओं के मूर्तिपर ।

( 274 ) कुण्डलपुर 72

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे सा० अर्जुनपुत्रेण सा० उदय  
सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्री पालादि युतेन आत्मश्रेयसे  
श्री चंद प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पदं प्रभं सूरिभिः ॥

( 275 ) कुण्डलपुर 72

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः  
कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

( 276 )

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे घोरपट श्री देवा कीर्ति भटकी घोरिय मुलसंघे  
सहिजे पतिभर्जर्षिः भ्यमिरि पुत्र उदत्य-पिम्बराजामन । शुभं ॥

( 277 )

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० शेता भा० शेतलदे पुत्र चाचा वीलहा-  
देपा शेताकेन डूंगर निमित्त श्री धर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि तिलक  
सूरिभिः ॥

( 278 )

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा भा० मालही पु० ऊदा भा०  
ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन श्रीकात्मि० ( ? ) श्रीवासुपुज्य विंवं  
का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शार्ति सूरिभिः ॥



( ७३ )

( 279 )

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू  
नाम्ना भा० चनू पुत्र हूंगशादि युतेन मातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्र०  
श्री तपा गच्छेश श्री रत्नशेखर सूरि पुरंदरैः ॥

( 280 )

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ चीणुरा वासि प्रा० वा० माई (?) आज्ञा बाकुंसुत सम-  
घरेण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंयु विंवं का० प्र० तपागच्छे  
श्री रत्नशेखर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आर्चद्रार्कं जपतत् ॥ श्री ॥

( 281 )

सं० १५१९ वर्षे आषाढ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाधू भार्या धर्मिणि  
पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन  
स्वश्रेयार्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरसरगच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे  
श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

✓ ( 282 ) ७१८८/७३/७३०५८५

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० सान्हा भा० कलह पुत्र सं-नरसिंह  
भा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना मातृ साहसमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व  
श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री -रिभिः : ॥ देप । तप-- श्री ॥

( 283 )

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रात् सुत सा० आलहा भा० सोनी  
पुत्र हावादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य वासिन्याः ॥

( ७२ )

## धातुओं के मूर्तिपर ।

( 274 ) कुण्डलपुर 72

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे सा० अर्जुनपुत्रेण सा० उदय सिंहने भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्रीपालादि युतेन आत्मक्षेयसे श्रीचंद्र प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पदं प्रभं सूरिभिः ॥

( 275 ) कुण्डलपुर 72

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्री जिनमद्र सूरिभिः कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

( 276 )

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे घोरपट श्री देवां कीर्ति मटकी घोरिय मुलसंचे सहिजै पतिमर्जर्षिः भयमिरि पुत्र उदत्य-षिम्बराजामन । शुभं ॥

( 277 )

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० शेता भा० शेतलदे पुत्र चाचा वील्हा-देपा शेतकेन डूंगर निमित्त श्री घर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे म० श्री मुनि तिलक सूरिभिः ॥

( 278 )

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा भा० माल्ही पु० जदा भा० जमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० जदाकेन शीकातमि० ( ? ) श्रीवासुपुज्य विंवं का० प्र० श्री संढेर गच्छे श्री शार्ति सूरिभिः ॥

( ७५ )

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पहालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्  
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

( 290 )

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र  
सा० सकतनेनेदं पार्वनाथ विंवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री  
जिनराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( 291 )

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्रसा० आसा  
भा० कुंवरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विंवं का० स्वश्रेयसेप्र० तपागच्छे श्री हेम विमलसूरिभिः  
॥ नलकच्छे ॥ (?) ॥

( 292 )

सं० १५७३ वर्षे वैशाख सु० ३ शुक्ले श्री श्री (?) वंशे । सा० माला भा० खाऊ नाम्ना  
सुण्यो (?) जावड़ शी० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरिणा-  
मुपदेशेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री संघेन ॥ श्रयोऽयं ॥

( 293 )

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अन्नयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अन्नय  
मंदिर गणि अन्नय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तिस्र तपा  
पट्टे श्री सीभाग्य सागर सूरिभिः ।

( 294 ) मुडलपुर 75

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उषवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साहधान 'भा०-  
जसिरि पु० पदमा-णापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्वज पूण्यार्थं श्री

( ७१ )

( 284 )

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय चैवरीया गोत्रे सा० केलहण भा०  
ऋणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साऋ पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंव कारि०  
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

( 285 )

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लीत्रडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी श्राविकया  
पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्रीकुंय केशरि सूरीणामुपदेशेन श्री  
कुंधनाथ विंव का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

( 286 )

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी ब्रह्मोद्यापन वासु पूज्य स्वामी  
प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

( 287 )

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देलहाणघा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण ८  
श्री शांतिनाथ विंव का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

( 288 )

सं० १५३८ वर्षे आषाढ वदि ५ स -- र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल --- श्री ॥

( 289 )

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय भांडिया गोत्रीय सा० अजिता  
पुत्री सा० लाषा भार्या आढो सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंव कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

( ७५ )

श्री खरसर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पहालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्  
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

( 290 )

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र  
सा० तकतनेनेदं पार्श्वनाथ विं वं कारितं खरसर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री  
जिनराज सूरिपहं श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( 291 )

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरी लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्र सा० आसा  
भा० कुंजरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विं वं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमलसूरिभिः  
॥ नलकच्छे ॥ (?) ॥

( 292 )

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ३ शुक्ले श्री श्री (?) वंशे । सा० माला भा० खाऊ नाम्ना  
सुप्यो (?) जावह श्री० अदां समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरिणा-  
मुपदेशेन श्री आदिनाथ विं वं कारितं श्री संघेन ॥ श्रेयोऽयं ॥

( 293 )

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अन्नयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अन्नय  
मंदिर गणि अन्नय रत्न मुनि युसाभ्यां श्री शांतिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं विभ्र तपा  
पहं श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः ।

( 294 ) मुडलपुर 75

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उषवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साहधानं भा०-  
जसिरि पु० पदमा-णापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्वज पूण्यार्थं श्री

( ७६ )

शिवलनाथ त्रिवं कारितं प्र० नागोरी सपागच्छे प्र० श्री राजरत्न सूरिभिः वधणोर वास्तव्यः श्री ॥

( 295 )

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्यं श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० नानुजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र--  
एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्यं श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री सपागच्छे श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लिः ॥ श्री ॥

( 296 )

सं० १८५६ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे वीवी मैभाजी श्री आदिनाथ त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं सर्व समुदायेन ।

( 297 )

सं० १७४० वर्षे मार्गशिर ---- श्री शांतिनाथ त्रिवं कारितं ।

( 298 )

सं० १७६३ वै० सु० २ ---- पार्श्व--

( 299 )

सं० १७६३ व० फा० व० १४ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ ---- ।

( 300 )

सं० १७७१ वर्षे शाके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुके मान्नपूर वास्तव्य वीराणी गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० श्रीमसी तत्पुत्र सा० मयाचंद वासी हाजीपुर पट्टणा

( ७७ )

कातेन शांतिविंशं गृहीतं श्री मेदिनी पूरे प्रतिष्ठितं श्री लपागच्छे भ० विजयरत्न सूरि राज्ये  
प० जय विजय गणिभिः ॥ श्री ॥

( 301 ) कुण्डलपुर ७७

सं० १७८६ वर्षे माघ सुदि १५ दिने चोडरिया गोत्रे सा० जीवण रामजी भार्या मन  
सुपदेजीः । सुत जगतसिंघजी विंशं कारापितं ।

( 302 )

सं० १८२० वर्षे मिः मि-सु० ३ श्री भ० श्री जिन लाभ सूरि - - - -

( 803 )

सं० १८२० वर्षे मिः मा० सु० ५ श्री भ० जिन लाभ सूरि प्र० धीर गोत्रे श्री० मोतीचंद  
कारी - - - जिनः - - - ।

( 304 ) कुण्डलपुर ७७

सं० १८२० मि० फा० कृ० २ बुध दूगड़ महताव कुवर का० प्र० सागर - - - - श्री अमृत  
चन्द्र सूरि राज्ये

( 305 ) कुण्डलपुर ७७

२४ जिन माता पट्टपर ।

संवत् १८४८ मिति भाद्र सुदि ११ तिथी ॥ श्री पाटलिपुत्रे मालू गोत्रे सा० हुकुमच-  
न्दजी पुत्र गुलावचन्द भार्या फुल्लो वीवी कया इष्ट सिष्यर्थे श्री चतुर्विंशति जिन मातृ  
स्थापना कारिता प्रतिष्ठिता च श्री जिनभक्ति सूरि प्रशिष्य श्री अमृत घर्म वाचनाचार्य्यः  
श्री रस्तु ।

( ७८ )

( 306 )

सं० १६०० मिः आषाढ सिः ६ गुरौ श्री महावीर जिन विं व प्रति० खरतर महारक गच्छे महारक श्री जिन हर्ष सूरिपह् दिनकर म० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशे दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दोलतरामेन स्वश्रेय सोर्यम् ।

## पाषाण के मूर्तियों और चरणों पर ।

( 307 ) कुठलपुर 78

( चन्द्रमम विं वपर )

सम्बत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे स० ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री सत्पुत्र संवराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० घनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि सत् पह् पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विं व प्रति —

( 308 ) कुठलपुर 78

संवत १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रुंर पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य विं व प्रतिष्ठापितं ॥

( 309 ) कुठलपुर 78

॥ श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० क्रुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन विं व प्रतिष्ठापितं स० चागाकृतं ।

( 310 ) कुठलपुर 78

श्री मत्संवत १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० चेतसी लघुभ्राता सा० नेतसा



( ७६ )

युतेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य  
विं वं प्रतिष्ठापितं सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

( 311 ) कुण्डलपुर 78

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती  
लोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्तादे पुत्र सा० जेतसी भा० सक्तादे  
पुत्र सा० — सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन  
श्री विमलनाथ विं वं प्रतिष्ठितं सा० क्रूरपाल — ।

( 312 )

( सं० १६७१ ) ॥ संघपति श्री क्रूरपाल सं० सोनपालैः स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे  
पूज्य श्री ५ श्री घर्ममूर्ति सूरि पहाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन  
श्री पार्वनाथ विं वं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

( 313 )

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा  
करापितं बीराणी गोत्रे पाटली पुरे ।

( 314 )

सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द बीराणी  
गोत्रे — — — प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

( 315 )

॥ सं० १७६२ व० का० शु० ६ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र०  
बीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शान्तिनाथ ॥

( ८० )

( ३१६ )

॥ सं० १७८६ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय जेमचन्द जीना पादुका ॥

( ३१७ )

॥ संवत् १८१६ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक चंदेन जीर्णोद्धार कारापितं ॥

( ३१८ )

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरी गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि -- नाथ बिंबं कारापितं ।

( ३१९ )

॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२६ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

( ३२० )

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैशाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्गृहस्वरतर गच्छे महारक श्री जिन अक्षय सूरि पहाळं कृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य । समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

( ३२१ )

॥ संवत् ॥ १८७७ ॥ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता महारक श्री जिन अक्षय सूरि पहाळं कृत श्री जिन

॥ शुभसंवत् १८७७ वर्षी वैशाख शुक्ल पंचम्या ॥ ब्राह्मणेश्वर ॥

जिन जगत्सूरी श्वरसंज्ञक पादरथापाङ्किकाप्रतिष्ठि

तथा

रत्नमणि

श्रीजिन

रिपदा

नवउत्स

त्याटलिउ

समन्त्र

श्रीकार

मिश्रीक

देशात्



हृदयवर

तद्वारक

श्रुतयत्

कृतश्रुति

रतिःश्रीम

रवत्सुखा

सद्यःपति

पितापग

ह्युदयोप

श्रीरक्त

( ८१ )

चन्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द्र  
तत्पुत्र श्री भग्गुलाळ कीर्तचन्द्र तत्पौत्र किसनप्रसाद अग्रय चंद्रादि सपरिवारेण स्वश्रे-  
योऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

( ३२२ )

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

( ३२३ )

॥ संवत् २४६ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मुलसंघे महारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह  
जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे---

( ३२४ )

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुलसंघे महारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज  
पापडीवाल सहैरम-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

( ३२५ )

॥ संवत् १६०४ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रूरवंशे महाराजधिराजजी श्री मत स्याहजा  
राज्य भ० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे भ० श्री देवेन्द्र कीर्तिजी सदाम्नाये सरस्वती गच्छे  
वलात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभां ।

( ३२६ )

संवत् १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमी गुरी ढाकामध्ये ---- काष्ठा संघ माथुर  
गच्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म महारक रुपचन्द्र प्रतिष्ठित अग्रवाल  
गंगलु गोत्रे सा० गुलाळ दास भा० मुलादे पुत्र० । सावलसिंघवी अमरसिंघवी केसर  
सिंह वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके ---- ढाकायां प्रतिष्ठा । ----  
पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

( ८२ )

( 327 )

## नेमनाथजीके विवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्ठासं ( घ ) माथुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य  
याम्नाय भ० देवेन्द्र कीर्तिदेव तत्पदे भ० जगत् कीर्तिदेव तत्पदे भ० ललित कीर्तिदेव  
तत्पदे भ० राजेन्द्र कीर्तिदेव हदाम्नाय अग्रोत् कान्धय वासिल गोत्रे सा० श्री सौषीलाल  
तत्पुत्र बाबु मुनिसुब्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंव प्रतिष्ठा कारापिता  
आरामपुर वास्तव्य --- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

( 328 )

॥ श्री संवत् १९१० शाके ॥ १७७५ साल मिसी वैशाख शुक्ल पंचम्यां गुरौ पाटलीपुर  
सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटर मल  
तत्पुत्र सीवनलाल प्रतिष्ठो कारापितं श्रीरस्तु ।

( 329 ) कृष्णपुर ४२

## श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत् १८४८ वर्षे मार्गशिर वदि ५ सोमवासरे श्री पाटली वास्तव्य श्री सकल संघ  
समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्यं स्याग्नेस्वरी श्री तपा  
गच्छीय श्राद्धः श्री लोढा श्री गुलाबचन्दजी प्रतिष्ठि तंसकल सूरिभिः ।

( 330 )

## चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं  
कारयित्वा तत्र तेषां चरणन्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यैः ॥

( ६३ )

## सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

( ३३१ )

चरण पर ।

अव्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठिसुदर्शनस्य इमे पादुके संप्रतिष्ठिते सकल संघेन शुभ संवत्सरे ॥

दादा वाड़ी ।

( ३३२ )

संवत् १६८२ मार्गशिर्ष शुद्धि ५ सा० कटार मल तस्यात्मज सा० कल्याण मल पुत्र  
चिंतामणि श्री जिन कुशल सूरि० भ । वेगमपुर वास्तव्य ।

( ३३३ )

संवत् १६९९ वर्षे पूर्व देशे पाडलिपुर नगरे वेगमपुर --

( ३३४ )

तपागच्छे भ० श्री ५ श्री हीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः पं० चंद्र कुशल गणि  
नित्यं प्रणमतिश्च । सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ९ सा० वेणीदास पुत्र श्रीमसेन पुत्र  
मयाचन्द वीराणी गोत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द प्र० क० पाडलोपुरे ।

( ३३५ )

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८४४ वर्षे शके १७०९ प्रवर्तमाने मिति माघ मासे शुक्ल पक्ष सूरिशाखायां  
साध्वी महत्तरा सुजान विजयाजी तत् शिष्यणी दीप विजयाजी तत् शिष्यणी अंते  
वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी मनसा रामेन प्रतिष्ठा कारापितं शुभमस्तु ॥

## श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीवागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह तीर्थकरोंके सिवाय और २० तीर्थकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । सलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ फीस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइसे लिया गया है ।

### ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

( ३३६ )

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या मेहताव कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ चाता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

### मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

( ३३७ )

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंभं प्रतिष्ठितं -- ।

( ३३८ )

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवी श्रीपार्श्वनाथस्य शून्य स्वामी गणधर विंभं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुधर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

( ८५ )

( 339 )

संवत् १८७७ -- श्रीपार्श्व विं प्रसिद्धितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं -- सांवत्  
सिंहज पदार्थ मल्लेन -- ।

( 340 ) सप्तोदशील, मधुवा ८५-

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविं प्रसिद्धितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा  
महतावो -- मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

( 341 )

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या  
फासी नाम्ना वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रसिद्धितं च ।

( 342 ) सप्तोदशील, मधुवा, ८५-

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विं कारितं ओशवंश  
दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रसिद्धितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( 343 ) सप्तोदशील, मधुवा ८५-

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविं कारितं ओशवंशे  
नवलखा गोत्रे मेठमल पुत्र जसरूपेण प्रसिद्धितं च वृहद् महारक खरतर गच्छ श्री जिना-  
क्षयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

( 344 )

सं० १८८७ वर्षे --- श्री ऋषभ जिनविं कारितं प्रसिद्धितं --- ।



## श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थकरोंके सिवाय और २० तीर्थकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । सलहटी मधुवनमें मंदिर और घर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइ इसे लिया गया है ।

## ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

( ८३६ )

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय ग्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह सद्गार्या मेहताव कुवर सत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तस्कनिष्ठ भ्राता घनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

## मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

( ८३७ )

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंशं प्रतिष्ठितं -- ।

( ८३८ )

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शून्य स्वामी गणधर विंशं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंघिन ।

( ८५ )

( 339 )

संवत् १८७७ - - श्रीपार्श्व विं वं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं - - सांवत्  
सिंहज पदार्थ मल्लेन - - - ।

( 340 ) सज्जेदशील, मध्यम ५५-

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविं वं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा  
महतावी - - मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

( 341 )

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विं वं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या  
फत्ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

( 342 )

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विं वं कारितं ओशवंश  
दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( 343 ) सज्जेदशील, मध्यम ५५-

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविं वं कारितं ओशवंशे  
नवलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद महारक खरतर गच्छ श्री जिना-  
लयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

( 344 )

सं० १८९७ वर्षे - - - श्री ऋषभ जिनविं वं कारितं प्रतिष्ठितं - - - ।

## श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । सलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइड से लिया गया है ।

## ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

( ३३६ )

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय ग्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या मेहताव कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ आता घनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

## मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

( ३३७ )

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंवं प्रतिष्ठितं -- ।

( ३३८ )

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शून्य स्वामी गणधर विंवं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च बालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

( ८५ )

( 339 )

संवत् १८७७ -- श्रीपार्श्व विं वं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं -- सांवत्  
सिंहज पदार्थ मल्लेन --- ।

( 340 ) सज्जेदशील, मधुमा ९९-

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविं वं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलिछा  
महतावी -- मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

( 341 )

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विं वं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या  
फत्ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

( 342 ) सज्जेदशील, मधुमा, ९९-

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री धितलनाथ विं वं कारितं ओशवंश  
दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( 343 ) सज्जेदशील, मधुमा ९९-

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रज्ञ जिनविं वं कारितं ओशवंशे  
नवलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद् महारक खरतर गच्छ श्री जिना-  
क्षयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

( 344 )

सं० १८९७ वर्षे --- श्री ऋषभ जिनविं वं कारितं प्रतिष्ठितं --- ।

( ८६ )

( ३४५ )

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रपण गणधरायुते शके (१७६२) फाल्गुनांतिमदले सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ जिनमूर्तिः कारापितं श्री० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत युतया बृहत्स्वरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सूरिणा प्रतिष्ठिता ।

( ३४६ )

सं० १९०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंवां का० --- ।

( ३४७ )

सं० १९१० शके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंवां प्रतिष्ठितं बृहत्स्वरतर गच्छे -- ।

टोंकपरके चरणों पर ।

( ३४८ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ।

( ३४९ )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० चंद्रे । श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा श्री मद्भिजय गच्छे । महारक । श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च ॥

( ३५० )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसालचन्देन श्री संभव पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ॥

( ८७ )

( 351 )

संवत् १९३० । माघे ।। शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन कारापितां । मलघार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री महारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( 352 )

॥ सं० १९३३ का जेष्ठ शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलघार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन चंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां । स्थापितां च । शुभं श्रेयसे भवतु ।

( 353 )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

( 354 )

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णो-  
द्धार रूपा । गुज्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । म । श्री जिन  
शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

( 355 )

॥ सं १९४९ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण स्थापितं प्रति । म । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

( ८८ )

( ३५६ )

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-  
पादुका कारापिता प्र० ।

( ३५७ )

संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार  
रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तथा स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे ।  
अहारक । श्री जिन शांति सूरिभिः । प्रतिष्ठितं च ।

( ३५८ )

॥ संवत् १८४९ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ बुद्धवारि । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य  
चरण न्यासः श्री संवाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान अहारक ।  
श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

( ३५९ )

॥ संवत् १९३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका ।  
अहमदाबाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा विजय  
गच्छे । अहारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

( ३६० )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा । अहमदाबाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता कारापित  
च । मलघार पूर्णिमा । श्री मद्भिजय गच्छे । श्री अहारकोत्तम । श्री श्री जिन शांति  
सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

( ८६ )

( 361 )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

( 362 )

॥ संवत् १९३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री शीतल नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

( 363 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

( 364 )

॥ संवत् १९३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय गच्छे । प्र । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

( 365 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

( 366 )

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री विमलनाथ जिनेन्द्रस्य पादुका जीर्णोद्धाररूपि । गुजरात का श्री संघेन । तथा स्थापना कारापिता । मलधार श्री विजय गच्छे । जं । यु प्र । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।



( ६० )

( 367 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

( 368 )

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे महारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

( 369 )

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते मषोत्तम माषे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षीनवमी तिथौ सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता वृहत् खरतर महारकोत्तम महारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

( 370 )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । मन्वर्द्ध वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । महारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

( 371 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

( ६१ )

( 372 )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदाबाद् वास्तव्य । सेठ भगु भाइ पेम चंदेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

( 373 )

॥ संवत् १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री कुंथुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

( 374 )

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री कुंथु जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बई वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता -- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पहोदय प्रज्ञाकर -- महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

( 375 )

॥ सं० १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

( 376 )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापिता मल ॥ पूर्णिमा । विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।

( ६० )

( ३६७ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

( ३६८ )

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गच्छे महारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

( ३६९ )

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते मेषोत्तम माघे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षी नवमी तिथौ सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मैत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता वृहत् खरत्तर महारकोत्तम महारक श्री जिन हर्ष सूरिणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

( ३७० )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । मम्बर्ह वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । महारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

( ३७१ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥

( ६१ )

( 372 )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ अगु भाइ पेम चंदेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । प्र । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

( 373 )

॥ संवत् १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री कुंथुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

( 374 )

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री कुंथु जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बई वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता -- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पटोदय प्रभाकर -- महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

( 375 )

॥ सं० १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

( 376 )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापिता मल ॥ पूर्णिमा । विजय गच्छे । जं । यु । प्र । प्र । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।

( ९२ )

( ३७७ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंदेन ।  
श्री मल्लि नाथ पादुका कारापिता प्र ० श्री तपा गच्छे ।

( ३७८ )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता  
मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभि  
प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

( ३७९ )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुब्रत  
जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

( ३८० )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार  
रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री मद्विजय  
गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

( ३८१ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमि-  
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

( ६३ )

( 382 )

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका ।  
जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा-  
पिता । पूर्णिमा विजय गच्छे महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

तेजपूर ( आसाम )  
राय मेघराजजीका मंदिर ।

( 383 )

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख शुद्धि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्री० सानंद भार्या हीसू  
सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

( 384 )

सं० १९४३ का मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां -----

( 385 )

सं० १९५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे ॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री  
जिनदत्त सूरि नाम पादुका का० ।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल - नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट ।  
घातुर्योके मूर्त्ति पर ।

( 386 )

श्रीपार्श्वनाथ विंव ।

ब्रह्माण सत्व संयकः श्रियावे सुनः सुपुण्यक श्री द्वः ( ? ) सीलगण सूरि भक्तस्प ( ? )  
द्रकुले कारयामास संवत् १०३२

( ९४ )

( 387 )

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमहेशराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पालहण रालहणाभ्यां  
स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

( 388 )

ॐ श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरः संडिल्ल ( खडिल्ल = खंडेल ? ) बालान्वय सारभूतः ।  
यो विस्तु ( श्रु ) सोसौ सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १  
सस्माच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।  
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३९ फा सु० २ गुरौ ॥

( 389 )

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय बापणा०  
सा० छाहड त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिधराजकेन मातृपितृ  
श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवां कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडाबजार-पंचायति मंदिर ।

( 390 )

रोषभनाथ वीतनाग पत्नीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[ पृ० २२ के लेख नं० ( ८८ ) का संशोधित पाठ ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥  
करिता ।

## यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर ।

( 391 )

॥ संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या म्यापुरि सुत पूजाकेन भार्या सोही सुत बीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पद कारितः । आगम गच्छे श्री अमरसिंह सूरि पद श्री हेमरत्न सूरि गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

( 392 )

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० मरगदे सुत सा० हदाकेन भा० करमी पु० पालहादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंवां का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि पद श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

( 393 )

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशाषायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः ।

कलकत्ता अजायब घर ( म्युजियम ) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

( 394 )

--संवत् १-८४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंबहरा स० केशव सुत सं० मंडिलक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदेसुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-मेघाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री जीवणि प्रमुख रामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ विंवां कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छ नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पहालंकरण भ० श्री उदय बल्लभ सूरिभि श्री ज्ञान सागर सूरियुतो प्रतिष्ठितं ।



( ९६ )

( ३९५ )

संवत् १६०८ वर्षे माघ वदि ९ गुरौ प्राग्वाट ज्ञाती सा० राघव भा० रसना सा० नर-  
सीआ भा० सुजलदे सा० रणमल भा० बेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ विंव  
प्रतिष्ठितं ।

म्युनिकं ( जर्मनि ) के जाडुघरके धातुकी मूर्ति पर ।

( ३९६ ) जर्मनी १६

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्टिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुडाकेन  
भा० सुहवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंव कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र  
सूरि पहे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु ।

डाः कुमार स्वामिके पास 'समवसरण' के चित्र पर ।

( ३९७ )

संवत् १६८० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री मदुत्तराघ गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यमाने  
लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्तियों पर ।

( ३९८ )

सं० १५२७ पौष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० सहिजक तत्पुत्र श्री० हुंगर भा०  
आ० सुडि संपरिवार भा० सहिजलदे धरमंसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री  
कुंथुनाथ विंव का० तपांगच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( ६७ )

( 399 )

सं० १५३३ वै० शु० १२ गुरी प्राग्वाट ज्ञा० सा० तालहा भा० राजु पु० सा० लिमघाक  
तत् भा० रत्न सहू आता सा० किवालय मेघ आदि सपरिवारेण श्री कुंथुनाथ विं वं का०  
प्रति० श्री तपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्री वसंतनगरे ।

जैपुरके वेपारियोंके पासकी मूर्तियों पर ।

( 400 ) जयपुर (आचारी) १७

सं० १४०५ वैशाख सु० ३ श्री उएस गच्छ तातहड़ गोत्र प्र० साः—ज्ज भा० ब्रह्मादे वही  
पुत्र संघ० सा० चाडूकेन सकुटुंबेन श्री रिषभ विं वं का० प्र० श्री ककुदा चार्य संताने श्री कक्क  
सूरिभिः ॥

( 401 )

सं० १५१२ वर्षे वै० शु० ५ ओखवाल गोत्रे सा० महणा भा० महणदे सुत सा० सीषा  
केन भा० सूलेसरि प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ विं वं का० श्री कक्क सूरिभिः ॥

अजमेर राजपुताना म्युजिउमके वारलि गांवसे प्राप्त पत्थर पर । \*

( 402 )

--- विरय भगवत ( त ) -- थ --- चतुरासि तिव ( स ) -- ( का ) ये सालिमा-  
लिनि -- रंनि विठमाप्तिमिके ---

\* इसमें श्री महावीर स्वामिका नाम और ८४ वर्षके मध्यमिका नगरका जो कि चित्तौड़से ४ कोस उत्तरमें था उल्लेख  
है और यह सं० ३ । ४-पूर्वशताब्दि का बहोत प्राचीन लेख है ऐसा विद्वानोंका विचार है।

## ❀ बनारस ❀

काशीदेशका यह वाराणसी वा बनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है । हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है । यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पौष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं । महल्ले मेलुपुरा और मदेनीमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं । यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ वदि ३ केवल ज्ञान भया है । निकटमें वौद्धोंका सारनाथनामक प्राचीन स्थान है ।

सुत टोलेका मंदिर ।

पंच तीर्थी पर ।

( 403 )

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्री० मूंधा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थे श्री शितलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक सूरि पद्वे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

( 404 )

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्री० जावड़ भार्या पूरी सुत घर-णाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं श्री निगमागमा भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

( ६६ )

## बट्टूजीका मंदिर ।

( 405 )

सं० १५१९ वैशाख शु० ५ प्राग्वाह सा० सिखा भा० लादां सु० साह हीराकेन भा० संजत्री प्रमुख सुरत श्री-जिनावति का० प्र० तपा रत्न शेखर सूरिभिः ॥

## पटनी टोलेका मन्दिर ।

( 406 )

सं० १४८५ वर्षे आ० सुदि १० रवौ मालहू -- ज० झा० साह वीजड पु० साह हरपाल भा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विं वं राजावर्तक रत्नमयं सपरिकरं का० प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

( 407 )

सं १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ३ भोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंघ आतपरी पनपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

## चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

( 408 )

संवत १२५७ ज्येष्ठ सु० १० महेष्ठीराचार्य --- स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिताः ॥

( १०० )

## रामचन्द्रजी का मंदिर ।

( 409 ) फ़रवरी १००

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूराना गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जगद भार्या  
जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां स्नातृ श्री० महावीर वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे  
श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्यै श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

( 410 ) फ़रवरी १००

सं० १४५९ ज्यैष्ठ वदि १२ शनी सूराना गो० सा० अमर भा० अइहव दे सुतसा० ताला  
सालहा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० प्र० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

( 411 )

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पालहण  
देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिधा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंवं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरिन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघेन ॥  
शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

( 412 )

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा ---  
पु० --वालहा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशोदेव  
सूरिभिः ॥

( 413 )

सं० १५४९ वर्षे ज्यैष्ठ सुदि १३ धेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीज देवी गोवेद पु० श्रीमा  
पु० सा० सिंघण सुमेरु आत्म पुण्याय कुंथुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे प्र० गुण कीर्त्ति  
सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन ।

( १०१ )

( 414 )

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवौ श्रीमाल मउवीया गोत्रे सा० परसंताने सा०  
राज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्श्वनाथ विंवं स्वपुण्यार्थं  
कारितं । प्र० श्री खरसर गच्छे श्री जिन बिलक सूरि प० श्री जिनराज सूरि पहे श्रीभिः ॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट ।

( 415 )

सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीषण्डेरकीय गच्छे श्रीवाहड़ भार्य धीरु पु० घरा  
---मयणलल---णिग भार्या केल्हण सहितेन विंवं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः ।

( 416 )

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उके० व० सा० रेडा भार्या रण श्री पुत्र पद सादा  
जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ विंवं का०  
प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

( 417 )

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्दाचार्य संताने उवएश वंशे  
हागलिक गोत्रे साह घना पु० स० पासवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथ  
विंवं कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपहे सद गुरु चक्रवर्त्ति महारक श्री सावदेव सूरिभिः ।

( 418 )

सं० १५१९ वर्षे आषाढ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नाग राज सु० लडू भार्या  
घर्मिणि सु० सं० श्री केवल दास भार्या वीर सिंधि पु० स० सूर्यसेन श्रावकेण श्री कुंथुनाथ  
विंवं कारितं० प्र० श्री खरसर गच्छे श्री जिन सागर सूरि पहे श्रीजिन सुन्दरसूरि पहे श्री  
जिन हर्षे सूरिभिः ॥

( १०२ )

( 419 )

सं० १५१६ आषाढ वदि-मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० घर्मिणि पु० सं०  
अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विवं का० प्र०  
श्रीजिन मद्र सूरि पहे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

( 420 )

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराजभा० माणिकि सुत देवदत्त भा०  
रूपार्ई सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ विवं  
का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे ।

( 421 ) १०२

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या  
सुहृवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रम  
स्वामि विवं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रसन सूरि प्रतिष्ठितं खिजारा नगरे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

( 422 )

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्री० मंडलिक  
सुत कामा भार्या कामीदे सुत काकण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेयर्थे श्री नमिनाथ  
विवं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः ।

( 423 ) १०२

सं० १५७८ वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्री० वीरम सु० वेला मातर  
भार्या सोही सु० महिराज जिणदास माहपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयर्थे श्री  
श्रेयांस विवं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना  
घांतू वास्तव्यः ॥

( १०३ )

## सिंहपुरी ।

( 424 )

सं० १५३४ वर्षे मार्ग सुदि १० शनी प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राज भार्या वारू पु० सा०  
असपति मा० अञ्जल देवी माई सुत गुणराज सरादि कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत विं  
कारितं प्रतिष्ठतं श्री बृहत्तपाच्छे श्री उदयसागर सूरिभिः ।

( 425 ) १३.११.४ १०३

चरण पर । ०

सं० १२५७ मिति चैत्रक मासे कृष्ण पक्ष षष्ठ्यां कर्मवा-पूज्य महारक श्रीजिन हर्ष  
सूरि विजयराज्ये श्रीसिंहपुर ग्रामे तेषां केवलोत्पत्ति स्थाने गांधि गोत्रीय मयाचंद प्रमुख  
समस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसाख्या नामेकादशानां लोक नाथानां पादन्यासः कारितः प्र०  
श्रीजिन लाभ सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीहोरधर्म गणिभिः खरतर गच्छै ।

## मिर्जापुर ।

पञ्चायती मन्दिर ।

( 426 )

श्रीपार्वनाथ विं पर ।

सं० १३७९ वर्षे उएसज्ञातीय वावेला गोत्रे देवात्मज सा० घीका पुत्रसंघपति ज्ञाप्ता  
सुत सा०— जूकेन पितृ श्रेयसे का० प्रति० श्री कृष्णर्षिगच्छे श्री प्रसन्न चंद्र सूरिभिः ॥

( 427 )

सं० १४२० वर्षे वैशाख शुदि १० शुके श्री श्री मालज्ञातीय ठ० बीजा भार्या मोहनदेवि  
श्रेयसे सुत जोलाकेन श्री पार्वनाथ विं कारितं प्रतिष्ठितं त्रिभवीया श्रीधर्मदेवसूरि  
संताने श्रीधर्मरत्न सूरिभिः ॥



( १०४ )

( 428 )

सं० १४८२ व० वैशाख वदि १ प्र० फूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदेपु० महिराज  
जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री  
मलयचद्र सूरिपहे श्रीषन्नशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

✓ ( 429 )

सं० १४९० व० वैशाख वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तत्सुताभ्यां  
रुद्रपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विवं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

( 430 )

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जस-  
मादे सुत रागा भीमा भीमाभिः आत्षेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विवं का० प्र०  
श्री पोपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपहे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

( 431 )

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवौ उपकेश ज्ञा० वयव० गोष्ट सा० माढण भा० मोहणि  
पु० कालहा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं  
पूर्णिमापक्षे जयचन्द्र सूरिपहे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

( 432 )

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवौ उप० ज्ञातीय कठउड गोत्रे सा० वरसा भा० मालही  
पु० रामा भाडा राजा चांदा भा० मरघू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्र-  
प्रभस्वामि विवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे श्री सोमकीर्ति सूरिभिः सद्रंछ-  
लिया नगरे ।

( १०५ )

( 433 )

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय  
लोढा गोत्रे गावं-ज्जा स० ऋषभदास भार्या रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिपे  
खानुवर दुनोचंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर  
सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं प्रतिष्ठापितं ॥

( 434 )

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंथुनाथ जिन विवं दू० विसनचंदेन कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

( 435 )

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्रीपार्श्वनाथ वि० प्र० श्री पार्श्वनाथ त्रि० प्र० श्री जिनमहेन्द्र  
सूरिण्युपदेशेन कारिता । सेठ उदयचन्द धर्म पत्नी महाकुमारिभिदया । वाचनाचार्य श्री  
चारित्र नन्दन गणिभिर्देश---

( 436 )

सं० १८८७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ विवं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० ब्रोहरा  
नाथूराम पत्नी साहवां नाम्न्यात्म श्रेयसे वाचक चारित्र नन्दन गण्युपदेशतः ॥

सेठधनसुखदासजी का मंदिर ।

( 437 )

सं० १८८३ वर्षे माह वदि १ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० नरपाल भार्या नयणादे  
सुत देपाकेन श्रीपद्मप्रभ विवं कारितं प्रतिष्ठितं । -- गच्छे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥

( १०६ )

( 438 )

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने बघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा० सीहा भा० पूरो पुत्र ठाकुरसी भा० महु पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ त्रिवं करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

( 439 )

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्वविं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं । छजलानी चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चौरडिया मनुलाल बघू - -

( 440 )

सं० १८८७ का० शु० ५ श्रीपार्वविं प्र० श्रीजिन महेन्द्र मूरिणा का० । सकल श्रीसंघै ।

## देहालि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था । हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिस्को छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

## चेलपुरी का मंदिर ।

घातुयोंके मूर्तिपर

( 441 )

सं० १९६३ मार्गशिर सुदि १ ओं गागसादेव धर्मोयम्- - ( आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता )

( १०७ )

( 442 )

सं० १५१६ वर्षे जे० व० ११ शुक्रे सोमसर वासि उकेश सा० मेहा भा० मालहणदेपुत्र  
सधाकेन भा० सलही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं-- श्री कक्क  
सूरिभिः ॥ सचिंतीगोत्रे ॥

( 443 ) १२५A १०७

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे लोढा गोत्रे सा० हरिचन्द गोगा गोरा संताने  
साधु आसपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परवत्त सांडादि युतेन भातृ पूनपाल पुण्यार्थं  
श्रीपार्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमहंस सूरिपट्टे भ० । श्रीहेम समुद्र  
सूरिभिः ॥

( 444 )

संवत् १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्री० कटाया भा० राउं सुत धुना भा० हमकू  
सुत चांपाकेन भा० घर्मिणि नामाणिकादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयर्थं नेमिनाथ विंवं कारितं  
प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सीमदेव सूरिभिः अहमदावादे ।

( 445 )

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उकेश वंशे साधुशाखायां सा० पाचाभा० पालह-  
णदे तोलही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० षेसाकेन तोलही पुत्र झांझां जालहा रूपा  
चांपा चरमा युतेन सा० घोपा पुण्यार्थं श्री मुनि सुव्रत का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिन  
चंद्र सूरिभिः ।

( 446 )

सं० १५३६ माघ शुदि ५ दिने प्राग्वाट ज्ञाति सा० काजा भा० सारु पुत्र सा० हापा  
केन भा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री चन्द्रभ्रम विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५  
लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( १०८ )

( 447 )

संवत् १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुद गोत्रे व० अभय राज भार्या  
आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख परिवृतेन श्री  
आदि जिन विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः ।

( 448 )

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे बहुरा हीरा भा० हीरादे पु०  
जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः  
अहिलाणी ।

( 449 )

॥ श्री पार्श्वनाथ सं० १६०५ फागुण सुदी दसमी चरवडिया गोत्रे गागपत्नी त्वर-  
मिनी पुत्र भेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपती गच्छे भ० श्री भार्वातलक  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिषर ।

( 450 )

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनी उकेशवंसे----- ।

( 451 )

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंध  
जी राजे श्री मूलसंधे आम्नाये वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री  
विई कीर्त्ति स्तदाम्नाय षंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० भ० श्री  
कचराज भा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ यातु दानु सं० श्रीरायस भा० रयणदे---पु०  
हरदास ---भा० महिमादे लाइमदे -- ।

( १०९ )

( 452 )

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व विं वं का०  
प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

( 453 )

सं० १६८१ व० फा० शु० १० म० चंद्रकीर्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०  
नीमा मा० खरूपादे ।

( 454 )

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे- -सुश्रावक  
पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेखन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥  
श्रीमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके विं व पर ।

( 455 )

संवत् १६६७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरुता नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे सं० जय-  
राव मा० सोभागदे पु० सं० ओहणकेन श्रीसुमतिनाथ विं व का०-प्र० तपागच्छे म० श्री  
विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तिः ।

( १०८ )

( 447 )

संवत् १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुद गोत्रे व० अभय राज भार्या  
आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन मा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख परिकृतेन श्री  
आदि जिन विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः ।

( 448 )

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे बहुरा हीरा मा० हीरादे पु०  
जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः  
अहिलाणी ।

( 449 )

॥ श्री पार्श्वनाथ सं० १६०५ फागुण सुदी दसमी चरवडिया गोत्रे गागपत्नी त्वर-  
मिनी पुत्र धेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन मद्र सूरि रुद्रपला गच्छे म० श्री भार्वातलक  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिषर ।

( 450 )

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे----- ।

( 451 )

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंध  
जी राजे श्री मूलसंघे आमनाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये म० श्री  
विई कीर्त्ति स्तदाम्नाय षंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला मा० कोसिगदे पु० म० श्री  
कचराज मा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ यातु दानु सं श्रीरायत मा० रयणदे---पु०  
हरदास ---मा० महिमादे लाइमदे -- ।

( १०९ )

( 452 )

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व विं व का०  
प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

( 453 )

सं० १६८१ व० फा० शु० १० म० चंद्रकीर्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०  
नीमा मा० खरूपादे ।

( 454 )

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे- -सुश्रावक  
पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥  
श्रीमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके विं व पर ।

( 455 )

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरुता नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे सं० जय-  
राव मा० सोभागदे पु० सं० ओहणकेन श्रीसुमतिनाथ विं व का० प्र० तपागच्छे म० श्री  
विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तिः ।



( ११० )

## सर्व धातुयोके मूर्तियों पर ।

( 456 )

भा० । संवत् ११ ६७ वैशाख शुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सतु श्री वि --- ।

( 457 )

संवत् १२८० वर्षे ---सांडा प्रणमंति ।

( 458 )

सं० १३३१ अ० व० २ हल --- ।

459 )

सं० १४३३ आषाढ शु०--मा० लघु व्य० आसा भा० ललतदे--श्री पार्ष्वनाथ वि०  
का० श्री गुणभद्र सूरिणामुपदेशेन ।

( 460 )

सं० १४४५ पौष शुदि १२ वुधे ज० श्री० जोला भा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ  
विंवं कारापितं प्र० ज० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ।

( 461 ) नरक/५०/१५

सं० १४५४ वर्षे मोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा भा० पाषी पुत्र लाषाकेन स्वपुत्र  
वीसल श्रेयसे श्री पार्ष्वनाथ विंवं का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे सूरिभिः प्रतिष्ठितं क्षीदेव  
सुन्दर सूरिभिः ।

( १११ )

( 462 )

सं० १४६३ वै० शु० १०- सा- ---

( 463 )

सं० १४७१ माघ शुदि १० रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय साः रामा ज्ञा०--ठाकुर पितृ  
श्रेयोर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी --- ।

( 464 )

सं० १४७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ज० ज्ञा० सा० तिहुणा ज्ञा० तिहुणांसार पु० चाहड़  
भा० केलहु पु० हापा ज्ञा० तेजू पु० करमोकेन पितृ--श्री पद्मप्रज्ञ वि० का० प्र० श्री  
संढेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शान्ति सूरिभिः ॥

( 465 )

सं० १४७९ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० घेरणा पुत्र संग्राम समरासिंघ श्रावकः श्री  
महावीर विंवं पुण्यार्थं कारिते प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

( 466 ) ॥

सं० १४८२ वर्षे माह सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाडा पु० जयता भार्या साल्ही  
पुत्र घोषाकेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री धर्म घोष ग० श्री धर्म घोष  
ठा० श्री मलयचन्द्र सूरि पहे श्री--देव सूरिभिः ।

( 467 ) ॥

सं० १४८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ज० ज्ञा० पालडेचा गोत्रे सा० टापर ज्ञा० तेजलदे  
पु० अगडाकेन ज्ञा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य वि० का० प्र० श्री सुविप्रज्ञ  
सूरिभिः श्री वीरभद्र सूरि सहितेन ॥

( ११२ )

( 468 )

सं० १४८३ फा० व० ११ ज० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा मा० रूपाई पु० कालू  
पाचाभ्यां आ० अदा मा० आलहणदेविः श्री पद्मप्रभ तव० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री  
शांति सूरिभिः ॥

( 469 )

सं० १४८६ वै० शु०-प्राग्वाट सा० साजण मा० लषू पुत्र केलहाकेन मा० लक्ष्मा  
आतृ भीम पदमदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विं वं कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर  
सूरिभिः श्री-५ ।

( 470 ) श्री ॥२

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० शिवराजभार्या सीधरही पुत्र  
सा० मोहिल घण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा० श्री मुनि-  
श्वर सूरि पहे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

( 471 ) श्री ॥२

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञाती आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल मा० देसलदे  
पु० घमी मा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विं वं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य  
सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

( 472 )

सं० १५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे म० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर  
भार्या रैनसिरि तत्पुत्र सोनिग भार्या बेमा प्रणमति ।

( ११३ )

( 473 )

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने उकेश वंशे नाहटागोत्रे सा० जयता भार्या जयतलदे  
तत्पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलषा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र०  
श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे ।

( 474 )

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुके श्रवाणागोत्रे उदा भार्या लावि पु० देवराजेन स्व  
पुण्यार्थे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पदमसिंह सूरिभिः ।

( 475 )

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने उकेश ज्ञातीय सा० चापा भा० चापलदे सुत गूंगच  
केन भा० वापू सु० चाईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० तपगच्छेश श्री  
जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनदि सूरिभिः । कायषा ग्राम ।

( 476 ) रङ्गी ११३

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वोडा भा० कुतिकदे  
तयोः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० मादा भा० ऋवकूकेन आत्म  
श्रेयोर्थे श्री मुनिसुव्रत स्वामि विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री शीलरत्न  
सूरिभिः गीलीषा वास्तव्यः ।

( 477 )

सं० १५०७ वर्षे फा० सु०- सं० हमा पाँयपुत्र सा० सारंग भार्या मचकु पुत्र नाथा  
भाडादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर-  
सूरिभिः ।

( ११४ )

( 478 ) श्लो ११४

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे सा० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र  
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गोरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं  
श्री खरत्तर गच्छे श्री जिनराज सूरि पहे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 479 )

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ज० ज्ञा० सोचिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वीलहा भा०  
जसमी पु० सादाकेन सा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ वि० का० प्र० श्री संडे-  
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शान्ति सूरिणां पहे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः ॥

( 480 ) श्लो ११४

सं० १५१५ वर्षे भाष सु० १४ दिने ज० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० कालहा भार्या ऋवकू  
सुत सा० रूपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ वि० वि० कारितं प्रतिष्ठितं श्री ष० ग० श्री  
जिन सागर सूरि पहे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

( 481 ) श्लो ११४

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुके श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण  
केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेय्यर्थं श्री घर्मेनाथ वि० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय  
भद्र सूरिभिः काकरवास्तव्य ।

( 482 )

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्क दिने नहतिआण सा० सुरपत्ति सा० त्रिलोकादे  
पुत्र्या सा० ग्यान भगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित वि० का० प्र०  
श्री खरत्तर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपहे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( ११५ )

( 483 )

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा मा० चन्हडा घर्मा कर्मा  
हासा काला आतृ हीराकेन मा० हीरादे सुत अदा बरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-  
नाथ विंवं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ कमल मेरु ।

( 484 )

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सीणुरा वासि प्रा० सा० राजा मा० स्या पूरि पु० तीपा-  
केन मा० रानू पुत्र साधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रज्ञ विंवं स्वश्रैयसे का० प्र० तपा श्री सोम  
सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

( 485 )

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरु गोत्रे सा० पासवीर मा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण  
पुत्र देवा सब--युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ वहादुर पुरे ॥

( 486 )

सं० १५३४ वैशाख सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला सिरिपुत्र---

( 487 )

सं० १५३५ श्री मूलसंघे म० श्री भुवन कीर्ति स्व० म० श्रीज्ञान भूषण गुरुपदेशात् ॥  
स० बेलडी मा० ऋतूः ।

( ११४ )

( 478 )

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र  
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गौरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं  
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पहे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 479 )

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ज० ज्ञा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा मा०  
जसमी पु० सादाकेन मा० चांदा सहितेन पितृपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ वि० का० प्र० श्री सङ्गे-  
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शान्ति सूरिणां पहे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः ॥

( 480 ) र्द्री ॥४

सं० १५१५ वर्षे भाव सु० १४ दिने ज० वं० जांगडा गोत्रे सा० कालहा भार्या ऋवकू  
सुत सा० रुपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ वि० वि० कारितं प्रतिष्ठितं श्री ष० ग० श्री  
जिन सागर सूरि पहे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

( 481 ) र्द्री ॥४

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीनाल ज्ञा० श्री गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण  
केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेय्यर्थं श्री धर्मनाथ वि० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय  
भद्र सूरिभिः काकरवास्तव्य ।

( 482 )

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्ताकं दिने नहतिआण सा० सुरपति मा० त्रिलोकादे  
पुत्र्या सा० ग्यान भगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित वि० का० प्र०  
श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपहे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( ११५ )

( 483 )

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा भा० चन्हडा घर्मा कर्मा  
हासा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत अदा वरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-  
नाथ विंवं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ कमल मेरु ।

( 484 )

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ६ सीणुरा दासि प्रा० सा० राजा भा० स्या पूरि पु० तीपा-  
केन भा० रानू पुत्र साधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रभ विंवं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री सोम  
सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

( 485 )

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरु गोत्रे सा० पासवीर भा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण  
पुत्र देवा सब--युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ वहादुर पुरे ॥

( 486 )

सं० १५३४ वैशाख सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला सिरिपुत्र---

( 487 )

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन क्रीर्त्ति ख० भ० श्रीज्ञान भूषण गुरुपदेशात् ॥  
स० बेलन्डी भा० ऋतूः ।



( ११६ )

488 )

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या लषी पुत्र  
देवण मांडण धर्मा श्रावकैः श्री० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युतैः श्री  
धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पहालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( 489 )

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवास उ० व्य० महिराज भा० माणिकदेसु०  
श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० गुहवदे । अदादि कुटुंबयुक्ताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र०  
श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( 490 ) अथ ॥१६॥ वल्ले द्वी

सं० १५४५ वर्षे वैशाख वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० भिमधर नोका पोमा  
पागा पहिराज आढू लाल्ला लेषसी पितरनिमित्त श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रति-  
ष्ठितं तपागच्छे महारक श्री सोमरसन सूरिभिः ॥

( 491 )

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे प्र० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० स०  
हंसराज हापु --- ।

( 492 ) द्वी ॥१६॥

संवत् १५५१ वर्षे वै० सुदि ९ रवौ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लाषा भार्या  
सोहिणी पु० चांपा भाय पौत्र पुत्र पीतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ विंवं  
का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मबोध गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

( ११७ ) ६

( 493 )

संवत् १५५३ वर्षे सिवनाग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय ब्रह्मकटा गोत्रे सा० जयत  
कर्ण सुत सा० जिणदत्त पुत्र सो० सोनपाल सुश्रावकेण भा० गउराई लघु भ्रातृ रत्नपाल  
पृथ्वीमल्ल सखी केण श्री शांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरत्तर गच्छे श्री जिन  
चंद्र सूरि पहे श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

( 494 ) ६३१ ॥७

सं० १५५३ व० सा० सु० २ रवौ श्री श्रीमाली ज्ञातीय सा० सीधर भा० सोही सुत  
सा० जूठा सा० संघा सा० भ-इ सा० पावाकै सा० जावड वचनेन श्री पार्श्वनाथ विंव  
का० प्र० मलधार गच्छे श्रीसूरिभिः । सर्वेषां पूजनाथं ॥

( 495 )

सं० १५५९ वैशाखवदि १३ श्रीमूलसखे षंडेलवाल सा० देवा पुत्र परवत नित्यं प्रण-  
मति गोधा गोत्रे ।

( 496 )

सं० १५५९ व० पोस वदि ४ दिने गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राजा भा० राजलदे  
पु० पोमा भा० ऋमकू सु० श्रेयोर्थे श्री वासपूज्य विंव का० प्र० महाहडीय गच्छे प्रतिष्ठितं  
श्रीमति सुन्दर सूरिभिः दधालीया वास्तव्यः ।

( 497 ) ६३१ ॥७

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवौ श्री उकेश ज्ञातो श्री आदित्यनाग पौत्रे चोरवेडिया  
शाषार्या व० हालण पु० रत्नपालेन स० श्रावत व० घघुमल्ल युतेन मातृ पितृ श्री० श्री  
संभवनाथ वि० का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य० श्री देव गुप्तसूरिभिः ॥

( ११८ )

( 498 )

सं० १५६२ वर्षे वैशाख शु० १३ बुधे श्री श्री मालीजातीय सा० पूजा भात्र मूजा सा०  
विमलाई श्री मुनि सुब्रत स्वामि विंवं कारापितं-श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री  
लषराज श्री अभयराज ॥

( 499 ) १२/११ ॥४

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा सा० अपू पु०  
सा० बीम भार्या रत्न पु० श्रीपाल नाथभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री  
खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

( 500 ) ११/११ ॥४

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राभा० बुलदे पु० सा०  
पतोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

( 501 )

सं० १५८९ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे म० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य  
उ० श्री गुणप्रभ -- श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं ।

( 502 )

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे म० श्री ज्ञान भूषण  
देवा स्तत्पदे म० श्री विजय कीर्ति देवास्तत्पदे महारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूँवड  
जातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईया भार्या सिरिक्षमणि ।  
सुतसा० श्री पाल श्री शान्तिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

( ११६ )

( 503 )

सं० १६१६ सिंधुद सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं ।

( 504 )

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विधोगा भार्या वाई पूराई सुत देवचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरितत्पद्मे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि श्री पत्तन वास्तव्यः ।

( 505 )

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं० सांवल । साकार-साहमल अ-जा । गा --- ।

( 506 )

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञाती वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा० सबरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर ।

( 507 )

सं० १४८६ वर्षे पौस वदि १० गुरी श्री हुंवर ज्ञातीय श्रे० उदवसीह भार्या वईराज तयोः पुत्र तथा दीहीदा सुत दोगा -- पत्नी वई चमक नाम्न्या आरम श्रेयसे अजितनाथ -- विंवं कारापितं श्रीवृहत्तपा पद्मे श्रीरत्न सिंह -- ।

( १२० )

( 508 )

सं० १४९२ वैशाख सुदि २--ओसवाल ज्ञातिय भरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं का०  
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

( 509 ) १२०

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री जकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू  
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विवंका०  
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( 510 )

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या  
पालहणदे सुन मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन मातृ  
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पद जीवत स्वामी नागेन्द्र  
गच्छे श्री गुण समुद्र सुरेरुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया  
वास्तव्यः । श्री ।

( 511 )

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा० ललतु  
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

( 512 )

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र षवू  
लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

( १२१ )

( 513 )

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ विं० प्रति० - ।

( 514 )

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसवाई नाम्न्या श्री पार्श्व वि० का० प्र० तप०  
ग० श्री विजय देव सूरिभिः ।

( 515 )

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या -- पार्श्व वि० कारापित ।

( 516 )

सं० १८५२ पोस सु० ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द्र  
गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद्र टोडरमल्लेन श्रेयोर्थं ।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर ।

( 517 )

सं० १२१४ आषाढ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या मना -- ।

( 518 )

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरी -- सुहव भा० --- ।

( १२० )

( 508 )

सं० १४९२ वैशाख सुदि २ -- जोसवाल ज्ञातीय ऋरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं का०  
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

( 509 ) १११ १२०

सं० १५०६ माघ सुदि ५ श्री जकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू  
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थे श्री विमल विवंका०  
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( 510 )

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ६ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या  
पालहणदे सुन मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन मातृ  
पितृ श्रेयोर्थे आत्म श्रेयोर्थे च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पद जीवत स्वामी नागेन्द्र  
गच्छे श्री गुण समुद्र सुरेरुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया  
वास्तव्यः । श्री ।

( 511 )

सं० १५-५ फा० वदि ६ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा प्रा० पूजी पुत्र पूना प्रा० ललतु  
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

( 512 )

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र षवू  
लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

( १२३ )

( 526 )

सं० १९३५ वर्षे माघ कृष्ण पंचमी भृगु अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० हठी संव केशरी संव भार्या वाई रुक्मिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विव कारापितं ङ्हारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा वीरुटे ।

### छोटे दादाजी का मन्दिर ।

( 527 )

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे भहारक श्रीजिन कुशल सूरि पादुका कारिता श्री स्याहजानाबाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च बृहद्बहारक खरतर गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्वादस्याह अकवर स्याह विजय राज्ये शुभं भूयात् ॥ संवत् १९०८ मितौ चैत्र शुदि १२ सूर्यवारे श्रीजिन नंदि वद्धन सूरिभिः विजय सधर्म राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या राघकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात् ॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक मति कुमार तच्छिष्य हर्ष चंदोपदेशात् ॥

( 528 )

॥ संवत् १९२९ वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय धीधीद गोत्रे वखतावर सिंघकस्य भार्या महताय वीवी श्रीशांतिनाथ दि० प्र० कारापितं प्रतिष्ठित वृहत् खरतर गच्छे श्रीजिन श्रीकल्याण सू० ।



( १२२ )

( 519 )

७० संवत् १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीषण्डेरगच्छे श्री यशोभद्रसूरिसंताने । अ० जगधर भार्या जमति पुत्र कर्माक्षुण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ कर्माक्षुण श्रेयसे श्री अजितनाथ विंवं कारितं । प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

( 520 )

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू -- ।

( 521 )

संवत् १४८३ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय बहरा घड़ठा भार्या ललता देवि सार्वलीदास हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं । नागेंद्र गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पहे श्री सह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु ।

( 522 ) रत्नी 122

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवो अ० कावा भार्या विजी-परनागड प्रणमति ।

( 523 )

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपाशर्व विंवं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

( 524 )

संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोल्हरण पु० सा० छेयतन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

( १२३ )

( 526 )

सं० १९३५ वर्षे माघ कृष्णा पंचमी भृगुी अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय  
वृद्ध शाखायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या वार्डे रुक्मिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ  
विष कारापितं ङ्हारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा वीरुटे ।

### छोटे दादाजी का मन्दिर ।

( 527 )

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे त्रिथौ ८ बुधे अहारक श्रीजिन कुशल सूरि पादुका  
कारिता श्री स्याहजानावाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च वृहद्बहारक खरतर  
गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्वादस्याहअकवर स्याह विजय राज्ये शुभं  
भूयात् ॥ संवत् १९०८ मितौ चैत्र शुदि १२ सूर्यवारे श्रीजिन नदि वहुन सूरिभिः विजय  
सधर्म राज्ये श्री दिलिल नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या  
राघकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात् ॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक मान  
कुमार तच्छिष्य हर्ष चंदोपदेशात् ॥

( 528 )

॥ संवत् १९२९ वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय धीधीद गोत्रे यमनाथर  
सिंघकस्य भार्या महताय वीवी श्रीशांतिनाथ दि० प्र० कारापितं प्रतिष्ठित वृद्धत् खरतर  
गच्छे श्रीजिन श्रीकल्याण सू० ।

( १२४ )

( 529 )

श्री सं० १९७२ मिः माघ शुक्ल ९ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०  
म० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री  
संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० म० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा  
श्रिते म० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य  
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा  
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुए ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

( 530 )

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग तत्पुत्र  
रालहण थिरठेव मान् सूरिपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंवं कारापिता ।

( 531 ) अजमेर 124

संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवल  
दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहड़ादे पु० संसारचंद । सामंत सोभा स० श्री  
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

( १२५ )

( 532 ) अ.अ.अ. 124

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो  
सुता श्रे० व्यधा वीधा विरा भार्या षीमा पूना भगिनी हरप् एतेपां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ  
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

( 533 ) अ.अ.अ. 124

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उषवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहूर पु० रानपाल  
भा० कपूरी पुत्र - हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं०  
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

( 534 )

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवौ ऊ० आईचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र  
दसूरकेन आत्मश्रेयसे शितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

( 535 )

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा०  
हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे  
श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( 536 )

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे०  
सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुत गाईयागुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या  
श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा श्री उदय बल्लभ सूरिभिः ॥

( १२४ )

( 529 )

श्री सं० १६७२ मिः माघ शुक्ल ६ शनिवासरं रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०  
भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री  
संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा  
श्रिते भ० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य  
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह श्री प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा  
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुए ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

( 530 )

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग तत्पुत्र  
राहण धिरठेव मान् सूरिपादि पुत्रैः आसिग श्रीयर्थे पार्श्वनाथ विंविं कारापिता ।

( 531 ) अजमेर 124

संवत् १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवल  
दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहड़ादे पु० संसारचंद । सामंत सोभा स० श्री  
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

( १२५ )

( 532 ) अजमेर १२५

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो  
सुता श्रे० व्यधा वीधा विरा भार्या भीमा पूना भगिनी हरप् पुतेपां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ  
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

( 533 ) अजमेर १२५

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहूर पु० रानपाल  
भा० कपूरी पुत्र - हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं०  
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

( 534 )

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवौ ऊ० आईचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र  
दसूरकेन आत्मश्रेयसे शितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

( 535 )

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा०  
हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे  
श्री रत्न शेषर पहे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( 536 )

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे०  
सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुत गाईयागुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या  
श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा श्री उदय बल्लभ सूरिभिः ॥

( १२४ )

( 529 )

श्री सं० १६७२ मिः माघ शुक्ल ६ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०  
भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री  
संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा  
श्रिते भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य  
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा  
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुऐ ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

( 530 )

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग तत्पुत्र  
रालहण थिरदंभ मान् सूरुपादि पुत्रैः आसिग श्रीयोर्थे पार्श्वनाथ विंविं कारापिता ।

( 531 ) अजमेर 124

संवत् १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवल  
दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहडादे पु० संसारचंद । सामंत सोभा स० श्री  
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

( १२७ )

( 542 )

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उखवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० अयरव  
भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे म०  
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

( 543 )

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेडता नागर वास्तव्य उरुभ गोत्रको० जयता  
भार्या जसदे पुत्र की० दीपा धनाकेन श्रीपाश्वर्व वि० का० प्र० तपा गच्छे म० श्री विजय  
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू- - ।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

( 544 )

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० धन्ल सुत जैमल श्रेपोथं--कारितः ॥

( 545 )

सं० १३०६ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कंधा भार्या--- पुत्र मालह  
श्री शांतिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः ।

( 546 )

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाट --- स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विं० का० श्री सीम  
सुंदर सूरिभिः ।



( १२६ )

( 537 )

संवत् १५२५ वर्ष चैत्र वदि ६ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्र० सोमा भा० सृहूला सुत  
सिवा भार्या सोभागिणि सुत् पद्मा भार्या पहती श्री सुविधिनाथ विंवं का० रुद्रगुरुप  
देशेन विधिना प्र० विंवं-----छ ॥

( 538 )

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० बईजा स्वसाकला  
नामन्या श्री नेमिनाथ विंवं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

( 539 ) 126/2000

सं० १५२८ माह व० ५ बुधे श्री ओस वंशे घनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीका  
भार्या वील्हणदे पुत्रैः साह कोहा केलहा मोकलाख्यैः स्वश्रयसे श्रीधर्मनाथ विंवं का०  
श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र० ।

( 540 )

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ बुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या  
वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपार्ई सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं स्व  
श्रेयोर्य श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरिणा  
पहै प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

( 541 )

सं० १६०३ वर्ष आषाढ वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे  
पुत्र मानसिंघ भा० पेतसी युतेन स्वश्रयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ०  
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

( १२७ )

( 542 )

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उसवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० अयरव  
भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे म०  
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

( 543 )

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेडता नागर वास्तव्य उत्सभ गोत्र को० जयता  
भार्या जसदे पुत्र को० दीपा धनाकेन श्रीपाशर्व वि० का० प्र० तपा गच्छे म० श्री विजय  
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू- - ।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

( 544 )

सं० १२९० माह सुदि १० श्री० घन्नाल सुत जैमल श्रेपोथं--कारितः ॥

( 545 )

सं० १३७९ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कंधा भार्या---- पुत्र मालह  
श्री शांतिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः ।

( 546 )

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाट --- स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विं० का० श्री सोम  
सुंदर सूरिभिः ।

( १२६ )

( 547 )

सं० १७८१ वर्षे वैशाख सु० ३ रवौ रहुराली" (?) गोत्रे सा० बीजल भार्या विजय श्री  
पु० रावा-----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ वि० प्र० श्री धम-----श्रीपद्म शेषर सूरिभिः ।

( 548 ) न०८८/१२४/

सं० १७८५ वर्षे माघ सुदि १७ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जील्हा  
केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम  
हंस सूरिभिः ।

( 549 ) न०८८/१२४/अमन

॥३॥ सं० १७८६ वर्षे माघ सु० ११ शनी श्री षंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया  
गोत्रे सा० महूण पु० षोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लषी पु० करमा नाल्हा सहितेन  
स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

( 550 ) न०८८/१२४/अमन

सं० १७८८ वर्षे पोष सु० ३ शनी उकेश ज्ञाती तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू  
भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत्त पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ  
विंवं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः ।

( 551 )

सं० १७९० वै० सु० शनी श्री मूलसंवे नंदिसंवे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री  
कुंद कुंदाचार्यान्त्रये महारक श्री पद्मनंदि देवाः सत्पद्मे श्री सकल कीर्त्ति देवाः । उत्तं दे

( १२६ )

श्रुत्योभि (१) हं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मघूसुत विरुआ  
भातृ वीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रभ चतुर्विंशति पदः कारितः  
तंच सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

( 552 ) नाए 129 | क. 117

सं० १४ ९२ वर्षे मार्गशिर वदी ४ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव  
राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थे श्री विमलनाथ विंव  
कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

( 553 )

सं० १४९९ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा भावल दे  
सुतव्य० वेला पत्न्या वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंव का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर  
सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 554 )

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सं० रामा मातृ  
शाणी श्रेयोर्थे सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ विंव कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री  
साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गोरङ्गया वास्तव्य ॥

( 555 )

॥ १५१६ आषाढ सु० ५ ओष्ठे गोत्रे तीव्रा भार्या रूपा पु० सोरहा तेजा -----  
पद्मावति प्रणमति ।

( १३० )

( 556 )

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे बुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणो पु० नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( 557 )

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्री० डउढा भा० हरषू सु० श्री० नागा भा० आजी सुत श्री० जिनदासेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विवं आगम मच्छे श्रीदेवरत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं ।

( 558 )

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे सा० सोभा भा० घनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति नाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकङ्क सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

( 559 )

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पलहयउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा० घेलहा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विवं कारितं । वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पद्वे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

( १३१ )

( 560 )

सं० १५२४ आषाढ शु० १० शुक्रे उक्ते श वंशे -- ज्ञा० सपूरा पु० जेसाकेन ज्ञा० धर्मि-  
णि पु० माईजा पौत्र इसा बोसालादि कुटुंब युतेन पु० माइया श्रेयसे श्री नमि विंव का०  
प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रोलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( 561 )

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा ज्ञा० जीवाणि स० गो-  
ठा ज्ञा० कर्मी पु० नरवदेन श्री श्रेयांसनाथ विंव कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु  
सुंदर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा ।

( 562 ) गदर/13/अनेर

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उक्ते शवंश ज्ञ० गोत्रे सा० नीवा ज्ञार्या पूजी  
सा० पूना श्रावकेण ज्ञातृ सजेहण मा० अंवा परिवार युतेन श्री संभवनाथ विंव कारितं  
प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

( 563 )

संवत् १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा ज्ञा० देपू पुः मेरा  
ज्ञा० हीरू श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विंव प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

( १३२ )

( 564 )

॥ संवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र मा०  
शीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थे श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंडेरग  
गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः ।

( 565 ) अजमेर 132

सं० १५५६ (?) वर्षे आषाढ सु० १० सूरणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र स०  
हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पूजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म  
घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पहे नंदिवर्द्धन सूरिभिः ।

( 566 )

सं० १५५६ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन  
भा० सूरवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रोपदी पौ० कसा पीघा  
श्रोवंत युतेनात्मपुण्यार्थे श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-  
गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

( 567 ) अजमेर 132

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा०---तत्पु० पहराज तत्पुत्र  
राठा---त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजन-  
चन्द्र सूरिभिः ।

( १३३ )

( 568 )

संवत् १५७६ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने रात्रिवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र  
रत्न मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्रीः पार्श्वनाथ  
त्रिवं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे ।

( 569 )

सं० १६०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर पूर्या श्री चतुर्विंशति  
जिनमातृका पद्म लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर  
जंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये ।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें ।

( 570 )

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ६ शुके बड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण  
भार्या तारु पुत्र सा० लषाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ  
त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पं० पुण्यनन्दन  
गणीनामुपदेशेन ।



( १३४ )

## जयपूर ।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्तियों पर

( 571 )

सं० १३ -- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड वागड (?) गण श्रीमन् --  
मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० वाहड भार्या लाछि सुत बीमा भार्या राजलदेधि श्रेयोथं  
सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति ।

( 572 )

सं० १४३६ वर्षे पौष ६ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० -- -- मायलदे पु० सामलेन  
श्रीशांतिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 573 )

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे । ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा०  
धीना भार्या फार्डे पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ  
विं वं कारितं श्रीम० तपागच्छे -- -- -- ।

( 574 )

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा भा०  
धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति  
पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

( १३५ )

याति किसनचन्दजी के पासकी मूर्तियों पर ।

( 575 )

सं० १३१८ फागुन---गेहलडा गोत्रे षट्देव पुत्र विसल पुत्र लषमणेन मातृ वीरी  
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

( 576 )

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ शनौ श्री---गच्छे---जलहर गोत्रे सा० लुणा भा० लुणादे  
पुत्र पविन पालहा सानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विंवं कारि० प्र० ---।

( 577 )

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या सासु  
पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री पल्लि गच्छे ----- ।

( 578 )

संवत् १५०९ वर्षे जपुस वंसे सा० हजदा भार्या आल्णादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल  
गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं ।

( 579 )

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीआ गोत्रे सा० वादी भ० भीमाइ सु० तिउण  
श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रोवंत साजण प्र० कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ विंवं कारितं रोद्रपल्लिय  
गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पहे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिभिः ।

( ३३६ )

( 580 )

संवत् १५५९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञाताय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन  
भा० हीरादे पुत्र पुना घूनार्द कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र०  
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

( 581 ) ५२५९ ३३६

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुण्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरद्विया गोत्रे  
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे महारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

( 582 )

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ  
विं० गृहीत घ० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

## जोधपुर ।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर ( जुनी मंडि )

धातुओंके मूर्त्तिपर ।

( 583 )

सं० १४५९ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सषदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन  
पितृ श्रेयोर्थे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः ।

( ५३७ )

( 584 )

सं० १४८० वर्षे वैशाख सु० ३ घांधगोत्रे सा० मोल्हा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण  
भार्या सिरिधादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 585 )

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादि युतेन  
श्री अजितनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

( 586 )

सं० १५०३ आषा० सु० ९ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराज भा० सीता पु० पीद  
भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री घर्मनाथ विवं कारापितं श्री - - र्बि गच्छे  
श्री जयसिंह सूरि पद्वे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

( 587 ) जीव५८ ३३७

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती झंडारी गोत्रे सा० सोमाभा० सोम श्री पुत्र हीरा  
केन आत्म० श्री श्रियांस विवं का० प्र० श्री घर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पद्वे श्री  
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

( 588 )

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरी उप० ज्ञा० म० नूणा भा० माणिकदे पु० सांडा भा०  
वालहणदे पुत्र षेतसि वास० प्रा० मा० श्र० श्री सुमतिनाथ विवं का० प्र० ब्रह्माणीया ग०  
श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

( ३३६ )

( 580 )

संवत् १५५९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन  
भा० हीरादे पुत्र पुना घूनार्द कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र०  
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

( 581 ) ५५५९ ३३६

संवत् १६७७ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे  
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे महारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

( 582 )

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ -----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ  
विं० गृहीत घ० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

## जोधपुर ।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर ( जुनी मंडि )

घातुओंके मूर्त्तिपर ।

( 583 )

सं० १७५९ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सषदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन  
पितृ श्रीयोर्थे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः ।

( १३७ )

( 584 )

सं० १४८० वर्षे वैशाख सु० ३ धांधगोत्रे सा० मोलहा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण  
भार्या सिरियादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 585 )

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादियुतेन  
श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

( 586 )

सं० १५०३ आषा० सु० ८ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराजभा० सीता पु० पीद  
भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विंवं कारापितं श्री - - र्बि गच्छे  
श्री जयसिंह सूरि पहे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

( 587 ) जीव्य ५८ ३३७

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती झंडारी गोत्रे सा० सोमाभा० सोमश्रीपुत्र हीरा  
केन आत्म० श्री श्रेयांस विंवं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पहे श्री  
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

( 588 )

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरी उप० ज्ञा० म० नूणा भा० माणिकदे पु० सांडा भा०  
वालहणदे पुत्र धेतसि वास० प्रा० मा० श्र० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० ब्रह्माणीया ग०  
श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

( ३३८ )

( 589 )

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सु० ३ नना ज्ञा०श्री० जइसा भा० षरि पुत्र गेला भा० वाली नाम्न्या पुत्र अमरसी भा० तिलू सजन कवेला मातृदूसी ज्येष्टमाला प्रमुख कुटुंब युतया स्व श्रेयर्थे श्री विमलनाथ विंवां का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 590 )

सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य म० पद्मनंदि सत्प० म० श्रीसकल कीर्त्ति सत्प० म० श्री त्वमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंवां प्रतिष्ठितं । श्री जे संग भा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय ।

( 591 )

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ९ बुधे श्री - - - गोत्रे सा० जादा भा० सावलदे पु० मेलाकेन भा० मालूणदे पुत्र वींभा कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवां कारितं प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पढे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः ।

( 592 )

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण भा० राउं सु० भीदा भा० भावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंवां का० प्र० श्री जीरापलीय गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पढे श्रीसागर नांद सूरिभिः शुभं भवतु

( 593 )

सं० १५३५ श्री मूलसंधे म० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० म० श्री ज्ञानं भूषण गुरूपदेशे --

( १३९ )

( 594 )

सं० १५५४ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ वुध वासरे साइ चांपा भार्या मेथू डुंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोली वाल गच्छे महारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 595 )

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरी प्रग्वाट झा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदो  
--- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंवं का० प्र० पूणिमाक गच्छे  
---सागर सूरि--- ।

( 596 ) ओ००००० १३९

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरी उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिगदे पु० तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० वीकलदे पु० नाम्ना डामर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे प्र० श्री शांति सूरिभिः ।

( 597 )

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवी श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या घम्माई सुत वीसा सूरु भार्या लाली द्वि० भार्या अरघाई घम्मं श्रीयसे श्री शीतलनाथ विंवं प्रति० सिद्धांती गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र० ।

( 598 )

॥ ॐ संवत् १५६५ वर्षे वैशाख वदि १३ रवी ढेढीया ग्रामे श्री उएसवंशे सं० शीदा भार्या घरणू पुत्र सं० तोला सुभ्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राजा सा० लक्ष्मण आत्



( १४० )

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भावसागर सूरीणा  
मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पद्म कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन ।

( 569 ) ज्येष्ठ मीमांसा १५०

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिग  
पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाय भाया दमाई पु० साह विमलदास सा०  
हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिषभदास भाया अमरादे सुत  
अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण  
सागर सूरिपद्मे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः ॥

( 600 )

सं० १६२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन-भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद  
करार्पितं ।

देविजीके मूर्त्तिपर ।

( ४ भूजा + सर्प छत्र )

( 601 )

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे बीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत  
घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवो वेइरुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं ।

( 602 ) ज्येष्ठ १५०

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवोर पु० सा० सूर  
भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल भा० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं  
श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

( १४१ )

( 603 )

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशापीय पोसालेना गोत्रे  
सा० षीमा मा० अधी-पु० सा० श्रीवंत मा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपा-  
श्वनाथ विंवं का० श्री कोरट गच्छे श्री कक्कु सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 604 )

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उकेश वंशे व्य० परवत मा० फदकु  
तत्पुत्र व्य० जयता मा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान कर्मा निज  
--- परिवार श्रेयोर्थे आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्रीमपल्लीय प्र०  
श्री मुनिचन्द्र सूरिपते श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशनेति प्रद्रं ।

( 605 )

ॐ संवत् १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थे वास्तव्य सोनी मनजी भार्या  
मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारा-  
पितं सपागच्छे श्री हीर विजय सूरेश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक ।

( 606 )

ॐ ॥ संवत् १२३९ द्विः वैशाख सुदि ६ शुक्रे पलयपद्र वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे प्र०  
श्री देवाचार्य सत्क श्री नवत्सार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सलखणायाः श्रेयोर्थे श्री पार्वनाथ  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धि सागराचार्यैः ॥

( १४२ )

( 607 )

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूणदे पुत्र रेढा भार्या  
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं का० प्रति०  
श्री घर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

( 608 )

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन  
पितृ मातृ भ्रातृ समघर सारंगा श्री मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंवं  
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे म० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

( 609 )

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकोर्ति -- घर्मनाथ विंवं  
म० वाई तपदे जा० कालहा -- ।

( 610 )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुकंट शाखायां वयै० तोला भा०  
षेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीरुहादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरत्तर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

( 611 ) जी० १५५ १५२

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा०  
विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संढेर गच्छे म० श्री शांति सूरिभिः ।

( १४३ )

( 612 )

सं० १८६३ ना मा । सु० १० वृ० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्रीओसवाल ज्ञातीय वृद्ध  
शाखायां संघ माणक चंद्र तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापीतं ।

( 618 )

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । महारकीयेन सुयंत्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किल  
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदर्थ्य सिद्धैः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते ।  
अवदे वैशाखमासस्य तृतीयायां सिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर ।

( 614 )

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० वय० काला मा० कालहणदे सु० -- पद्म  
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयार्णद सू० प्र० ।

( 615 ) ज्येष्ठ १५३

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहरवंशालंकारेण सा० घड़सिंह पुत्रेण भ्रातृ  
सा० सलकेन सरवंगादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः  
श्री खरतर गच्छेशः ॥

( १४२ )

( 607 )

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूणदे पुत्र रेढा भार्या  
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं का० प्रति०  
श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

( 608 )

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग मा० श्रेयादे सु० महिराजेन  
पितृ मातृ भ्रातृ समघर सारंगा श्री मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंवं  
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

( 609 )

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकोत्ति -- धर्मनाथ विंवं  
प्र० वार्ह सपदे जा० कालहा -- ।

( 610 )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुर्कट शाखायां वधै० तोला भा०  
षेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीरुहादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

( 611 ) जोध५५ 142

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा०  
विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ।

( १४३ )

( 612 )

सं० १८६३ ना मा । सु० १० वु० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्रीओसवाल ज्ञातीय बृह  
शाखायां संघ माणक चंद्र तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापीतं ।

( 618 )

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । महारकीयेन सुयंत्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किल  
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदर्थं सिद्धैः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते ।  
अग्रे वैशाखमासस्य तृतीयायां सिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर ।

( 614 )

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० वय० काला भा० कालहणदे सु०--पद्म  
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र० ।

( 615 ) जोधपूर 143

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहरवंशालंकारेण सा० चंद्रसिंह पुत्रेण भ्रातृ  
सा० सुलकेन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः  
श्री खरतर गच्छेशः ॥

( १४४ )

( 616 )

सं० १४६६ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री तावडार गच्छे षांढरा गोत्रे जेसा भा० जस-  
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्तिका  
चार्य स० श्री वीर सूरिभिः ।

( 617 ) ज्येष्ठ १५५

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उके० पदे दोसो गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०  
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्रेयसे  
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः  
श्री पद्म प्रभ विंवं ।

( 618 )

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडसप श्री वन रतन सूरि - - - ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

( 619 ) ज्येष्ठ १५५

सं० १४६३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वीलहणदे पुत्र  
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्री० विमल विंवं का० प्र० वृहत्त गच्छे देवाचार्यान्वये  
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

( 620 )

सं० १५०३ वर्षे दोसो-धर्माकस्य पुण्यार्थे दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः  
श्री श्रियांस विंवं प्रतिष्ठित श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

( १४५ )

( 621 )

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० श्रीमती सा-  
पाभ्यां मा० मदीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विं०  
का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

( 622 )

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरी उपकेश वंशे जारंडडा गोत्रे सा० विमपालात्मज  
सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि विं०  
का० प्र० तपा महारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

( 623 )

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आंहतणा ( आईचणा ? ) गोत्रे सा० घना मा० रूपी  
पु० मोकल मा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकल श्रेयसे श्री संभ्रनाथ विं० का०  
उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

( 624 )

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दशरथ मा० सामिनी सुत माना  
केन मा० राना मातृचालू मा० सोढो कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्री शांतिनाथ विं० का०  
प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः नलुरीया गोत्रः ॥

( 625 )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातो आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा  
पु० जासी-मा० जयसिरि पु० सायर मा० मेहिणि नाम्न्या पु० गुणा पूता, सहज सहितया



( १४४ )

( 616 )

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरी श्री तावडार गच्छे षांढरा गोत्रे जेसा भा० जस-  
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्तिका  
चार्य सं० श्री वीर सूरिभिः ।

( 617 )

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवी उके० पदे दोसो गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०  
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुक्त श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्रेयसे  
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः  
श्री पद्म प्रभ विंवं ।

( 618 )

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडवप श्री वन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

( 619 ) जायंथ 144

सं० १४९३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वीरहणदे पुत्र  
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंवं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये  
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

( 620 )

०१६८/१५५/०१५५

सं० १५०३ वर्षे दोसो-धर्माकस्य पुण्यार्थं दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः  
श्री श्रेयांस विंवं प्रतिष्ठिते श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

( १४७ )

वेवं कारितं पूर्णिमा पक्षे भोमपल्लीय महारक श्रीजयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं  
॥ श्रीः ॥ छ ॥

( 630 )

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्री० भरमा भार्या भरमादे  
पुत्र आसा भार्या वर्द्धरामति नाम्न्या स्वभर्तृ पृण्यार्थं आत्म श्रेयोर्थं श्री जीवित  
स्वामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मसागर सूरिभिः ।

( 631 )

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूलसंचे भ० श्री सुमति कीर्त्ति गुरुपदेशात् का०  
जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास रुदिदास अनंतनाथ नित्यं प्रणमति ।

( 632 )

सं० १८१४ रा मित्ती अषाढ सुदी १३ श्री नेमनाथजी वि० ॥ छ ॥

दादाजी के चरण पर ।

( 633 )

सं० १८४८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथी बुधवारे । भ । श्रीजिनचंद्र सूरिभि प्रतिष्ठितं ॥  
भ । श्री जिनकुशल सूरिजी पादुका ॥ भ । श्री जिनदत्त सूरिजीरा पादुका ।

( १४६ )

स्वपुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंवां का० प्र० उपकेश ग० कुक्कदाचार्य स० श्री देव गुप्त  
सूरिभिः ।

( 626 )

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरी उ० विदाणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु०  
रामा० रूपा स० पि० श्री कुंथनाथ विंवां का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः  
श्रियात् ॥

दिनाजपूर ।

श्रीमूलनायकजीके विंवां पर ।

( 627 )

--- सु० ४ श्रीचन्द्र प्रभ जिन विंवां संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र  
सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपुरे ।

घातुके मूर्तियों पर ।

( 628 )

संवत् १४४७ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे श्री अंघल गच्छे श्रीमेरुतुंग सूरिणामुपदेशेन  
शानापति ज्ञातीय मारू ठ० हरिपाल पति सूरुव सुत मा० देपालेन श्री महावीर विंवां  
कारितं । प्रतिष्ठितं च श्री सूरिभिः ॥

( 629 )

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरी श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्री० अर्जन भा०  
मंदोअरि पितृ मातृ श्रियसे सुत गोईदेन भा० मारू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंथनाथ

( १४६ )

( 638 )

संवत् १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे बृहत्खरतर गच्छै श्रीजिन भक्ति  
सूरि पहालंकार भहारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः । -- श्री राम विजयादी प्रमुखं  
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी - - ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

( 639 )

संवत् १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

( 640 )

संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे  
श्री कुं -- ।

( 641 )

संवत् १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ भृगुवासरे श्री मूलसंघ काष्ठासंघ भहा-  
रक श्री रामसेनीन्वये तदाम्नाये भ० श्री विश्व भूषण भ० यशः कीर्ति भ० श्री चिभुवन  
कीर्ति - - ।

( 642 )

संवत् १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री  
श्री कुंदकुदाचार्यन्वये भहारक श्री सकल कीर्ति स्तदन्तर भहारक श्री दामकीर्ति - - ।

( १४८ )

## श्री केसरियानाथजी ( मेवाड़ )

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रत्नदेवी नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्ति स्वामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहवोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर ।

( 635 )

सं० १५१८ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्री० पोमा भा० पोमी सु० जावलकेन भा० गोलादे सु० जसा घना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेम स्वपितृ श्रियसे श्री धर्मनाथ त्रिवं का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर ।

( 636 )

श्री कायासवास वासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि --  
विक्रमादित्य संवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ बुध दिने चादी नाधुराल ---।

( 637 )

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत् १५७२ वैशाख सुदि ५ वार सोम-  
वार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनवाई चीजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ  
नाथ प्रणम्य कडीआ फीईआ भार्या भरमी तस्या पवेई सा० भार्या हासलदे तस्य पग-  
कारादेव शरगाय आत वेणीदास भार्या लास्टी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल  
श्री काष्ठा संघ --- श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुष श्री तां-री कुल ---।

( १४९ )

( 638 )

संवत् १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथी रविवासरे बृहत्स्वरतर गच्छै श्रीजिन मूर्ति  
सूरि पहालंकार भहारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः ।-- श्री राम विजयादी  
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी - - ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

( 639 )

संवत् १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

( 640 )

( १५० )

( 643 )

संवत् १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे महारक श्री विजय रत्न केशवर तपागच्छे काष्ठासंवे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र जी तस्यभार्या वाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री सातु जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं ।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

( 644 )

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्त्या पद्मावत्याः पदाम्बुजं । प्रशस्तिस्त्रिलोक्यते पुण्या कवि-  
केशर कीर्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः । वामांग मानस विकासन  
राजहसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति । ध्रुवेव मंडनकरा करुणा समुद्रः ॥ २ ॥  
श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये । प्राज्यो गुणैर्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदत्त स्थिर-  
तामुपैतु । संपश्यतां सर्वं सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दीहा । सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद्र महा साधः । तपे गच्छमें तप जप तपो  
उयत्त उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवी परगट कीधः । खेमतणो मन वा  
तिसु लाहो भवतो लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद्र । उच्छव क्रिधा  
अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिल सुध गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास । सारे ही  
प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम  
राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त । सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंद्रहः । संघ मनुष्य सिरदार सहस  
किरण सुषके कंदहः ॥ बल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म धुरंधरः । मुलचंद्र गुण मूलहीर  
धोया उदगुणहरः ॥ सकल संघ सानिधकरः सुमतिचंद्र महासाधः । पास सदन कियो प्रगट

( १५१ )

निश्चल रहो निरवाधः ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविलं  
लितावै संघेन सत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीघो  
गुणहेर । रच्योविं व जिनराजको करुणा बंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या । शशीव सुख राज वर्षे ।  
माधव मासे वलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-  
गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवादयः । जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंवकं ॥ १३ ॥

श्रीसंवत् १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ  
पार्श्वनाथ विंव प्रतिष्ठितं बृहत्तपा गच्छीथ सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥  
शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

( 645 ) केलश्यानी १५१

स्वस्ति श्री संवत् १८७३ वर्षे शाके १७३९ वर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-  
मासे शुभे शुक्र पक्षे चतुर्दशि तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार  
गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्रीजिनाज्ञा प्रतिपालक साह  
श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दोपक सखिलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम  
ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल मह रक शिरोमणि महारक श्री श्री  
विजय जिनेंद्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री घुलेवानगरे ॥ भंडारी दुलिचंद्र  
आगुंछइं ॥

दादाजी के चरण पर ।

( 646 )

संवत् १९१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री घुलेवानगरे श्री क्षेम  
कीर्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजीगणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद्र



( १५४ )

## सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

( 653 )

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय व्य० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । व्य० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतै सात्म श्रेयोर्थे आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा षक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 654 )

सं० १८२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्धार्या पूरवाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ।

( 655 )

सं० १८२१ वर्षेमाघ सुदि ७ गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्धार्या देमतवाई तत्पुत्र सा० अभयचंदेन पुन्यार्थे शांतिनाथ विंवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ॥

## सेठ कस्तुरचन्दर्जी का मन्दिर

( 656 )

संवत् १६८३ वर्षे वैशाख शुदि ६ गुरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाषायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या वाई अजाई

( १५५ )

सुत सोनी वमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई शीति एतेन श्री विजयनाथस्य विवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

### श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

( 657 )

सं० १३८३ वैशाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कीलहण देवि श्रेयसे सुत कीकमेन श्री महावीर विवं कारितं प्रति०

( 658 ) नाल्ल 155 / नाल्ल 114

सं० १४८६ वर्षे ज्यैष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं । आसो सुतेन देवाकेन स्ववांधव सहजा हरिचन्द पति भेता - श्रेयो निमित्तं श्री विमलनाथ विवं कारापितं प्र० श्री हेम हंस सूरिभिः ।

( 659 ) नाल्ल 155

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडीआ सा० साईआ भार्या सिरि-आदे पुत्र सा० भोला सा सुश्रावकेण भार्या कन्हार्ई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पघ राज भ्रातृव्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुदुंब सहितेन श्री विधिपक्ष गच्छपति श्री जयकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ विवं प्रतिष्ठितं श्री संचेन ॥ आ-चन्द्रार्कं विजयतां ॥

( 660 )

सं० १५१५ वर्षे माह शुदि ५ शनी प्राग्वाट झा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया हांसलदे सु० मूलू भा० अरषू सु० भोजा हासा राजा भा० भकू सु० हीरामाणिक हरदास

( १५६ )

युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्रीशान्तिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री  
श्री पाद प्रभू सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

( 661 )

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ शनौ प्रा० सा० काला भा० मारुहणदे पुत्र स० अर्जुनेन  
भा० देऊ आतृ सं० भीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु  
पूज्य विंश का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपद्वे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

( 662 )

संवत् १५२८ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ श्री उकेश वंशे सा० चाचा भा० मायरि सुत  
राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंश कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष  
सूरिभिः ।

( 663 )

सं० १५२९ वर्षे फा० वदि ३ सोमे स० वाछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवदे  
पुत्र वसुपालादि युतेन भा० सपूरो श्रेयोर्थं श्रीमुनि सुव्रतनाथ विंश कारितं प्र० तपा  
गच्छेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 664 )

संवत् १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्रे० देवा भा० पाचू पु० श्रे० हापा  
भा० पुहती पु० श्रे० महिगज सुश्रावकेण भा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री अंचल  
गच्छेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंश कारितं प्र० श्री संघेन ।

( १५७ )

( 665 )

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशर सूरिणामुपदेशेन उग्रशवंशे स० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्या युतेन स्वश्रेय से श्री अजितनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं सु---।

( 666 )

संवत् १५३८ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्रीश्री वंशे ॥ श्री० गुणोया भार्या तेजू पुत्र अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य विं वं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

( 667 )

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विं वं कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरिणां पद्वै श्री श्री कङ्कसूरिभिः कालू-र ग्रामे ॥

( 668 )

सं० १५८३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति सं० वानर भा० रही पु० म० नाकर सं० भाजी म० ना० भा० हर्षादे पु० पद्यु वनु भोजा भार्या भवलादे एवं कुटुंब सहितै स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० विवदणीक ग० भ० श्री देव गुप्त सूरिभिः । भारठा ग्रामे ।

( 669 )

सं० १६८४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृद्ध सा० जसमाल सृत सा० राजपालेन भा० वाह पूराई प्रमुख कुटुंब युतेन श्री सुमतिनाथ विं वं का० प्र० तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ।

( १५८ )

( 670 )

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय बृद्ध शापायां  
सा० राजपाल तद्धार्या वा० पूराई सुतसा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विवं प्र० तपा  
गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ।

याति कर्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर ।

( 671 ) -१६८ | ७४ | ५२ | १५८

संवत् १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्री० वना भार्या वनादे  
सुत श्री० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांढादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ  
विंवं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनक्ष सूरिपहे श्री उजोयण सूरिभिः ।

( 672 )

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञाती पीहरेचा गोत्रे सा-गोवल पु०  
सा--भा० धारुपु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड । भा० चढ --- पितुः श्री०  
श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्रीकक्क सूरिभिः ॥ श्री कुक्कुदाचार्य संताने ॥

गांव मन्दिर बड़ा ।

( 673 )

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाल वंशे वय० जीदा १ पुत्र वय० जीता-  
णंद २ पु० वय० आसपाल ३ पु० वय० अमयपाल ४ पु० वय० वांका ५ पु० वय० श्री वाउडि ६  
पु० वय० अणंत ७ पु० वय० सरजा ८ पु० वय० धीघा ९ पु० वय० राजा १० पु० वय० देपाल ११

( १५६ )

पु० वसनाना १२ पु० व्य० राम १३ पुत्र व्य० भीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर  
सुश्रावकेण भा० गडरी पु० भूभव पीत्र लाढण वरदे भातृ समधरीसायर भ्रातृ व्यसगरा  
करणसी- सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय  
केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री  
भवंतु ॥

( 674 )

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञा-  
तीय दो० भोटा भा० रत्तु पु० वीरा भा० वानू पु० लषा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन  
श्री शांतिनाथ विंवं स्वश्रेयोर्यं कारितं श्री सच्च प्रतिष्ठितं ॥

( 675 )

सं० १५४८ वर्षे कातिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय घामी गोवल भा० आपू  
सु० वावा भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ स्वामि वि० का० प्र० चैत्रगच्छे  
श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

( 676 ) ११२५/४५९/५१ श्री

सं० १५४९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह भावड भा० भरमादे  
आत्मश्रेयोर्यं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उखाल  
गच्छे श्री कक्क सूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

( 677 )

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत  
दो० भरणा भार्या कूयटि सुत दोसी बहु भार्या बल्हादे तेन आत्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

( १६० )

संभवनाथस्य चतुर्विंशति पदः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्रीगुणरत्न सूरि पदं  
आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

( 678 )

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवी उ० टप गोत्रे --- क सा० नरपाल भा० रंगाई पु०  
महिराज सोहराज धनराज श्री महिराज भार्या घनादे पु० घनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री  
पार्श्वनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री  
शांति सूरिभिः ।

( 679 )

सं० १६२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंवं प्र० सा० जीवा अषाजी - - - - ।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर ।

( 680 )

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे  
भट्टारक श्रीविद्यानंदि गुरुपदेधात् ब्रह्मपदमाकर कारापिता ।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकोमें पञ्चतीर्थीयों पर ।

साकरचंद प्रेमचन्द टोंक ।

( 681 )

सं० १५०८ वर्षे मार्गशोर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड़ गोत्रे सा० भूना भार्या मोल्ही  
एतयोः पुत्रेण भा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री वृहद् गच्छे  
श्री रत्नप्रभ सूरि पदं श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

( १६१ )

प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक ।

( 682 )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुधे आसापद आ (?) श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मेघा सुत सा० कर्मण भार्या कर्मादे पुत्र व्य० समधर भार्या वर्डजू पुत्र व्य० सहिता व्य० सहिता व्य० सिहदत्त व्य० श्री पति आत्म श्रेयसे सा० सहिसाकेन भार्या अमरादे ---- युतेन श्री आदिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितश्च वृद्धतपा पक्षे श्री श्री उदय सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रेमचन्द मोदी टोंक ।

( 683 )

सं० १३६६ वर्षे श्री० जगधर भार्या दमल पुत्र लीकतेन भार्या सहजल सहितेन- श्रेयसे श्री शांतिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्मदेव सूरिभिः ।

( 684 )

सं० १३७८ प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० वयजलदेव पुत्रिकाया वाएल -- मलधारि श्री पद्मदेव सूरि -- श्री तिलक सूरिभिः ।

( 685 )

सं० १८८१ वर्षे चैत्र सुदि ६ वार रवि दिने श्री वृद्धपोसल गच्छे -- श्री माली वृद्ध शाखायां सा० माणकचंद कुवेरसा -- भार्या वाई डाहीकेन श्री सुभतिनाथजी विं वं भरापितः श्री आणंद सोम सूरिजी प्रतिष्ठितं सुख श्रेयस्तु ।



( १६२ )

( 686 )

सं० १३१४ वै० सु० ३ ---विं० का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

( 687 )

सं० १३७३ ज्यै० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्ये  
श्रीमहावीर विं० का० प्र०----- श्रीसालिभद्र (?) सूरि श्रीमणिभद्रसूरिभिः ।

( 688 )

सं० १३८७ --- श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

( 689 )

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ घणसोह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत  
सादाकेन श्री अजितनाथ विं० पंचतीर्थी का० प्र० श्रीनागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नप्रभ  
सूरिभिः ॥ छ ॥

( 690 )

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० - - - श्रेयसे सुत भादाकेन श्री  
आदिनाथ विं० प्र० श्रीजयप्रभ सूरिणामुपदेशेन ।

( 691 )

सं० १४८६ वर्षे -- श्रीमाल - - आदिनाथ विं० प्र० श्री नरसिंह सूरिणामुपदेशेन ।

( १६३ )

( 692 )

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ६ रवौ उसवाल ज्ञा० म० पूना भा० मेलादे सु० वीजल भा०  
हाही तयो श्रेयसे मातृ आसुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विं० का० पूर्णिमापक्षे श्रीम  
पल्लीय महा० श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेसेन प्रतिष्ठितं ॥

( 693 )

सं १५१६ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा भा० नाऊ सुत जूठाकेन  
पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विं० का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सूरि पट्टे  
श्री वीर सूरिभिः ॥ बलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

( 694 )

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्र रा० पुजा का ---- श्री नमिनाथ विं० श्री  
विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( 695 )

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुमतिनाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रभ सूरिभिः  
पिप्पलगच्छे ।

सेठ वाल्हा भाई टोंक ।

( 696 )

संवत् १५२५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनी श्रीमूलसंघे संरखती गच्छे बलात्कार गणे-  
श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पदे भ० श्री सकल कीर्ति देवा तत्पदे

( १६४ )

भ० श्री विमलेन्द्र कीर्ति गुरुपदेशात् श्री शान्तिनाथ हूँवड़ ज्ञातीय सा० नाटू भा० ऊँमल  
सु० सा० काहूँ भा० रामति सु० लषराज भा० अजी भ्रा० जेसंग भा० जसमादे भ्रा०  
गंगेज भा० पदमा सु० श्री राजसचवीर नित्य प्रणमंति श्रीः ।

( 697 )

संवत् १६२८ वर्षे वै० बु० १० बुधे श्रीमालज्ञातीय महषेता भा० हासी सुत मूलजी  
भा० अहिवदे केन श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री हीर विजय सूरिभिः प्रति-  
ष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक ।

( 698 )

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० काण भाया हासलदे पुत्र काकणेन भाया  
नागलदे पुत्र मुकुंद नारद भ्रातृ घना श्रेयसे जीवादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे  
श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः ।

मूल टोंक ।\*

( 699 ) 21/4 164

सं० १६६३ ना मित्ती ज्येष्ठ बदी १२ गुरुवासरे श्रीमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल  
ज्ञातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खडग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम चंदजी तत्  
भाया वीवी मया कुंवर श्री सिद्धाचलीपरि श्री ऋषभदेवजी परी प्रायाद मध्ये

\* श्री आदिश्वर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्त्ताकी वृद्ध पितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है ।  
इस महान तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पश्चात् प्रकाशित होगा ।

( १६५ )

आलोषे प्रतिमा विवि मया कुंवर स्वहस्ते स्थापितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत खरतर  
गच्छे म० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि जी विजै राज्ये पं० देवदत्त जी तत् शि०  
पं० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

## रैनपूर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थीमें रैनपूर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार तेमफिला अगणित  
स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दोपक नामक विशाल मंदिरके कारण जगत्प्रसिद्ध है ।  
“आधुकी कोरणी रैनपूराकी मांडनी” देखने ही योग्य है ।

## मंदिरकी प्रशस्ति ।

( 700 )

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री वप्प १ श्री गुहिल २  
भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभर ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञी सुत युतस्व सुवर्णतुला  
सोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्ति-  
वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ बैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २०  
घोडासिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६  
मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान  
श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र वप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय  
सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ भ्रातु श्री अरिसिंह  
श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाहूयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादिदान पुण्य  
परोपकारादि सारगुण सुरद्रु म विभ्राम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

( १६४ )

भ० श्री विमलेंद्र कीर्ति गुरुपदेशात् श्री शान्तिनाथ हूँवड़ ज्ञातीय सा० नाडू भा० जंमल  
सु० सा० काहा भा० रामति सु० लषराज भा० अजी आ० जेसंग भा० जसमादे आ०  
गांगेज भा० पदमा सु० श्री राजसचवीर नित्य प्रणमंति श्रीः ।

( 697 )

संवत् १६२८ वर्षे वै० सु० १० बुधे श्रीमालज्ञातीय महषेता भा० हासी सुत मूलजी  
भा० अहिवदे केन श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री हीर विजय सूरिभिः प्रति-  
ष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक ।

( 698 )

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० काण भाया हासलदे पुत्र आक्तणेन भाया  
नागलदे पुत्र मुकुंद नारद आतृ घना श्रेयसे जीवादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे  
श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः ।

मूल टोंक ।\*

( 699 ) 21. 164

सं० १८६३ ना मित्ती ज्येष्ठ बदी १२ गुरुवासरे श्रोमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल  
जातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खडग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम चंदजी तत्  
भार्या वीवी मया कुंवर श्री सिद्धाचलीपरि श्री ऋषभदेवजी परी भाषाद् मध्ये

\* श्री आदिश्वर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्त्ताकी वृद्ध पितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है ।  
इस महान तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पञ्चात प्रकाशित होगा ।

( १६५ )

आलोषे प्रतिमा विवि मया कुंवर स्वहस्ते स्थापितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत खरतर  
गच्छे प्र० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि जी विजै राज्ये पं० देवदत्त जी तत् शि०  
पं० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

## रैनपूर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थीमें रैनपूर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार तेमफिला अगणित  
स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दीपक नामक विशाल मंदिरके कारण जगत्प्रसिद्ध है ।  
“आबुकी कोरणी रैनपूराकी मांडनी” देखने ही योग्य है ।

## मंदिरकी प्रशस्ति ।

( 700 )

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री वप्प १ श्री गुहिल २  
भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभर ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञी सुत युत्तस्व सुवर्णतुला  
तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्ति-  
वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ बैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २०  
घोड़सिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६  
मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान  
श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र वप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय  
सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ भ्रातु श्री अरिसिंह  
श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाहूयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादिदान पुण्य  
परोपकारादि सारगुण सुरद्रुम विश्राम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

नस्य । विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलाभात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभिमानस्य । निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य । म्लेच्छ महीपाल व्याल चक्रवाल विदलन विहंगमैन्द्रस्य । प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश भाल माला लालित पादारावंदस्य । अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य । कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल क्षमाप श्वापद वृंदस्य । प्रबल पराक्रमाकांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्रु प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये तस्य प्राप्तद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया प्ररण भ्रासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संब पति साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयवाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण । अजा हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैनविहार जीर्णोद्धार पद स्थापना विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संब सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्थ क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस स० सागर ( मांगण ) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन उष्टे भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारल दे पुत्र जाज्ञा जावडानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीवृहस्पति गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि श्रीदेवेन्द्रसूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर गच्छार्थधराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदं च सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख विहारः आर्चंद्राकं नंदाताद् ॥ शुभं भवतु ॥

( १६७ )

## पाषाण और धातुओंके मूर्त्ति पर।

( 701 )

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोमद्र सूरिभिः ---ल स्थाने देव  
सरण सुत बीशके ---श्री गुह - - कारिता ।

( 702 )

संवत् १२९० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्री० बढपाल श्री० जगदेवाभ्यां श्रेयीर्थं पुत्र  
सामदेवेन भासु पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पद कारितः प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीयैः  
श्री शान्ति प्रभ सूरिभिः ।

( 703 )

संवत् १४९९ वर्षे सा० साज्जन भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल  
देश्यादि कुटुम्ब युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंवं का० प्र० तपा श्री सोम  
सुन्दर सूरिभिः ।

( 704 )

संवत् १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या तीचणि युतेन  
श्री क सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः ।



( १६८ )

( 705 )

## शत्रुजयके नक्षत्रके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० जकेश वंशे सा० भीला मा० देवल सुत सं० धर्मा  
सं० कोल्हा मा० हेमादे पुत्र सा० तोल्हा षांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः  
सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव  
प्रासादे --- घन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पहिका कारिता प्रति-  
ष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थं नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं  
क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रसुपूजकस्य --- ।

( J06 )

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उषवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाचा पुत्र  
सा० बीरपाल मा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन मा० मोतादे प्रमुख युतेन माता  
विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

( 707 )

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश  
शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग मा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई  
पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं । प्र० वृ० तथा श्री  
उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे धरण विहारे ॥ श्री ॥

( १६९ )

## सहस्रकूट पर ।

( 708 )

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री बच्छ करावित ( उत्तर तर्फ ) वा० गांगादे नागरदास वा० साहापति श्री झूजा कारापिता आ० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

( 709 )

संवत् १५५२ अ० मिंगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० घणपति भा० चांपाई भाई मं० हरषा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

( 710 )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उष वश सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उषवाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः ।

( 711 )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उषवंश सा० आसदे भार्या सपांड सुत सा० राजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोग राजेन भ्रातृ सभागा स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० अखा --- सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

( १६८ )

( 705 )

## शत्रुजयके नक्सेके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० जकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा  
सं० केलहा भा० हेमादे पुत्र स० तोलहा बांगां मोलहा कोलहा आलहा सालहादिभिः  
सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव  
प्रासादे --- घन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पहिका कारिता प्रति-  
ष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थे नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं  
क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रसुपूजकस्य --- ।

( 706 )

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उषवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाधा पुत्र  
सा० बीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोलादे प्रमुख युतेन माता  
विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

( 707 )

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश  
शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई  
पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं । प्र० वृ० तपा श्री  
उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे चरण विहारे ॥ श्री ॥

( १६६ )

## सहस्रकूट पर ।

( 708 )

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री बच्छ करायिस ( उसर सर्फ ) वा० गांगादे नागरदास वा० साहापति श्री मूजा कारापिता धा० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

( 709 )

संवत् १५५२ अ० मिंगशर सुदि ६ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० घणपति भा० चांपाई भाई मं० हरषा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

( 710 )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वंश सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० घरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उसवाल गच्छे श्री देव नाथ सुरभिः ।

( 711 )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० आसदे भार्या सपांड सुत सा० साजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोग राजेन भ्रातृ सभागा स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० अखा --- सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

( १७० )

स्वश्रीयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख  
प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

( 712 ) २१७५५ ( 170 )

संवत् १५८— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा०  
उमला मातृ पुण्यार्थे श्री धम्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर ।

( 713 )

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु  
विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भद्वरक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन  
श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री घरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वच्युसमापुर  
वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा०  
नायकाभ्यां भावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतील्या मेघनादाभिधो मंडपः  
कारितः स्व श्रेयोर्थे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिचनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

( 714 )

॥ ॐ ॥ संवत् १६४७ वर्षे फाल्गुन भासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा  
गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भहारिक श्री श्री श्री ४  
हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री घरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

( १७१ )

खेता नायकेन बर्द्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् ( ४८ ) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्कसत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

( 715 )

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात् । संवत् १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे महारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी चेला रत्नसी

( 716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रत्न राणकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने --- ।

( 717 )

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य महारक श्री श्री कक्क सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृत्वा श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्रीरस्तु ॥

( 718 )

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनैश्वराणां चरणेषु । पं० शिवसुंदरः समागतः ।

( १७२ )

## सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

( ७१९ ) सादडी १७२

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ-विक्रमादित्य समयात्-  
१६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री  
उसवाल ज्ञाती कावेडिया गोत्रे साह श्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र  
साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री त्रिभ्रवणदे २ बहू  
श्री असडवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

## नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

( ७२० )

संवत् १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

( ७२१ )

-- संवत् १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार --- ।

( ७२२ )

संवत् १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार --- राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये --- ।

( १७३ )

( 723 )

संवत् १६६६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-  
नाथ आसाढ भूमि गृहे श्री खरहरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री  
सिंह सूरि राज्ये श्री संघेन लिखितं ।

( 724 )

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्ल पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे  
श्री वीरमपुरखरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे महारिक श्री  
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसोजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित  
श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना घना वरजांगिन कृतं ॥ आत्रोज  
सामा मेया कला पुत्र कल्याण ॥ ज्ञानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा  
शुभं भवतु - - -

( 725 )

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आसाढ शुक्ल ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री  
तेजसिंहजी द्राज्ये श्रीतपागच्छे महारिक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य  
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये ।

( 726 )

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च । संवत् १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्त्तमान  
द्वितीय आसाढ सुदि २ दिने रविवारे रावल श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पलिकीय



( १७४ )

गच्छे महारक श्री यशोदेव सूरजो विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका  
कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादाद् शुभं भवतु । उपाध्याय श्री कनक शेखर  
शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजङ्ग दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र  
धारः ऊजल भातृ काका घडिता भवन कचरा - - ।

छत्रीमें ।

( 727 )

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां बुजाप्तोदया । धन्याचार्यपदावदात-  
वदिताः श्री कीर्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रस्मणि विभा प्रोच्छासितां हिंद्वया ।  
राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखबालान्वया ॥ - - - - -

बालोतरा ।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्तियों पर ।

( 728 )

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव ऊर्ष्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात वाहङ्ग  
वीरदे श्रेयार्थमकारि प्र० देव सूरभिः ।

( १७५ )

( 729 )

सं० १४०१ वैशाख ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सध० कुलियात्मजा सा० काम पुत्रेण  
स - - पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंशं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

( 730 )

सं० १५०१ वर्षे माघ यदि ६ बुधे उपकेश ज्ञासी आविणाग गोत्रे सा० कालू पु०  
वीलला भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंशं कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य  
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

( 731 )

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डोडा पुत्र सा० नाय - - -  
सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंशं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

( 732 ) कार्तिक 175

सं० १५०६ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वंशे बहुरा गोत्रे सा० - - - पुत्र  
हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या घनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ  
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंशं कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन  
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

( 733 ) कार्तिक 175

सं० १५०६ वर्षे - - उपकेश वंशे बहुरा गोत्रे सा० - - - श्री सुमतिनाथ विंशं  
कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( १७६ )

( 734 )

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्षे बदि ६ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञातीय त्री दूगड़ गोत्रे मं०  
पनरपास पु० बछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय बच्छाम्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंघु-  
नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पहे मं० श्री सोम  
सुंदर सूरिभिः ।

( 735 )

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने  
सा० कुता भार्या लषमादे सा० डाहट्य श्रावक्रेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन  
श्री घर्मनाथ विंवं का० श्री खरसर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरि पहे  
श्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्षे गच्छके उपासेरमें केशरियानाथजी का देरासर ।

( 736 )

॥ ॐ ॥ सं० १०६—वैशाख बदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति ।

( 737 )

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र बुढाकेन भा० - -  
कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री - ।

( 738 )

सं० १७१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे  
वांपणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - - ।

( १७७ )

वाङ्मैड ।  
गोपोंका उपासरा ।  
घातुके मूर्तियों पर ।

( 739 )

सं० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० सालहा भा० द्वीसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा० गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 740 )

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० सषो सु० सं० हेमा भा० हमीरदे मं० मचाकेन भा० घमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवं श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

( 741 )

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्री० सहसा भा० भोली पुत्र जिन-दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं का० आगम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

( 742 )

सं० १५१४ मा-शु० - प्राग्वाट ज्ञा० कलहाकेन भा० वजू सुत सा० वीरा माणिक

( १७८ )

बछादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ विंशं कारितं प्र० तपा श्री  
सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पद्वे श्री रत्न शेषर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ।

सभा मण्डप ।

( 743 )

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ संवत् १८५६ वर्षे माह सुदि ५ शुक्ल पक्ष  
प्रतिपदा तिथी सोम वासरे राठउड़ वंशे राउत श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका  
नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग  
प्रधान श्री पता श्री धर्म मूर्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संचर्मे शांति श्रेयोर्थं  
श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

( 744 )

सं० १९०३ माह अदि ५ शुक्ले श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र फणा पार्श्व-  
नाथजीकी धरिसातांता संघ समस्त मीणक धार्ई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थ कारापितं  
तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च ।

दुसरा मंदिर ।

( 775 )

संवत् १५१० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० वस्ता  
पितामही कोल्हणदे सुत पितृ स० पवा मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

( १७६ )

घरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साघु रत्न  
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंडलि वास्तव्यः ।

( 746 )

सं० १५२० श्री मूल संघेन महारक श्री विजय कीर्त्ति श्री०

सभा मंडप ।

( 747 )

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुाद १५ रात्र वासरे खरसर गच्छ महारक श्री जिन  
रत्न -- पुष्य नक्षत्रेः राजत श्री उदयसिंहजा विसरि विजय राज्ये जयराज्ये ॥ श्री  
सुमतिनाथ रउ नववु कीउ श्री संघ करावउ सूत्रधार षीसा पुत्र नसा नववु कीउ ।  
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

( 748 )

सं० १६२८ वर्षे मद्रपद कृष्णापक्ष ७ बुध -- बृहत्खरतर गच्छे महारक श्रीमगत  
सुर रावतजी श्री वाकीदासजी -- । जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतनाथजी-  
शिणगार कीधी -- ।

( 749 )

॥ ॐ ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहडमेरी महाराज कुल श्री सामंत सिंह  
देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री करण मं० वीरामेल वेलाउल भा० मिगन प्रभुत  
शोधं अक्षराणि प्रयच्छसि यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संविष्टमान श्री विघ्नमर्दन

( १८२ )

छाया भा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुव्रत विंभं कारितं प्रतिष्ठितं महारक श्री विजय-  
सेन सूरेश्वर पद प्रभाकर जिहांगीर महासपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान  
सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार महारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

( 755 )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्री० आसधर भार्या गागी सुत  
मदन दमा जिनदास गीवा पुत्र पीत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थे श्री श्री शान्तिनाथ  
विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

( 755 )

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी स० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास  
केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंभं का० प्र० सपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

( 757 ) प्रैत 182

सं० १७५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे ज० गुगलिया गोत्रे सा० श्रीरा प० सीहाकेन  
श्री आदिनाथ विंभं स्व श्रेयसार्थे संहर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शान्ति सूरिभिः ।

( 758 )

सं० १७६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ जकेय ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे  
पुत्र लषमा भार्या लाखण दे पुत्र दीरहा भार्या चीलहणदे पुत्र घडसी सकुटुम्बेन श्री

( १८३ )

वासपूज्य विं वं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति  
सूरिभिः ।

( 759 ) श्रीमती गार | 187 |

सं० १५१५ वर्षे आषाढ यदि १ दिने श्री उकेश वंशे घुल्ल गोत्रे सा० सादूर्ल  
जाया सुहवादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन  
श्रीशांतिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

( 760 ) श्रीमती गार | 187 |

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० घन्ना पुत्र सा० हिमपाल  
पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विं वं कारित प्रति-  
ष्ठित तपागच्छ महारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः ।

( 761 )

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० धांईया  
कैन भा० सलषू सु० दो० दासा संना कणेसी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाडा दाया  
प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल विं वं कारितं श्री मधूकरा खरतर - - - ।

( 762 )

सं० १५५६ वर्षे चैत्र सु० ७ सोम प्राग्वाठ ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलषणदे  
पुत्र लोला सा० पीमा भा० पंतलदे - - - सकुटुम्बयुतेन आत्म पु० श्री चंद्रप्रभ स्वामि  
विं वं का० अंचल गच्छे श्री सिवांश सागर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्द्धन मणीमा-  
मुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंचेन - - - ।



( १८१ )

( 763 )

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा०  
भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थे श्री श्री श्री श्रेयांस विवं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे ।

( 764 )

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सु० २ सोमवारे षट बड गोत्रे सा० सा - र - - - श्रेयसे  
श्री आदिनाथ विवं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छेभट० पुण्यकीर्त्ति सूरि पट्टे भट्टा० श्री  
लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं ।

( 765 )

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे उकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवास  
श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन  
श्री श्रेयांस विवं कारित - - ।

( 766 )

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विवं श्री विजय जिनेन्द्र सूरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

( 767 )

सं० १५०७ वर्षे फा० व० ३ बुधे । ओश वंशे बहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० चैता

( १६६ )

( 771 )

सं० १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरी ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय सं० नामा  
भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या सोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका भा० देवलदे  
पु० कचरा भार्या कडडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री  
अर्बुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सद्गुण कर्म करण सम्प्राप्त  
संघपति सिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र  
ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारितं  
शत्रुजयाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारित भवर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विं  
कारितं पितामह वचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोष्ठा रत्नाना समुख पूर्वज नाम्ना  
प्रतिष्ठितं श्री वृहत्खरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रववारक प्रतिवोधित साहि श्रीमदक-  
वर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान  
पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पद्म पूर्वाचल सहस्र करारवतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजया-  
ष्टमोद्धार श्री भाणवट नगर श्री शांतिनाथादि विंभ प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री  
पार्श्व प्रतिहार सकल महारक चक्रवर्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटो-  
पमान प्रधानः ।

( 772 )

सं० १७०० व० द्वि० वै० सित ८ गुरी गोलकुंडा वा० सा० मेघा भा० मीहणदे सुत  
सा० नानजी नाम्ना श्री मुनि सुब्रत विंभ का० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरु महारक  
श्री विजय सेन सूरि पहालङ्कार पतिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री  
विजयदेव सूरिभिः ।

( १८७ )

## चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

( ७७३ ) म्रेडल १६७

सं० १६६६ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे म्हाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह ावजय  
राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय ठोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे  
तत्पुत्र स० लाषाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारित  
प्रतिष्ठित श्रीमत् श्रीवृहत्स्वरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि तत्पट्टोदयाद्रि  
मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

## पंचतीर्थियों पर ।

( ७७४ ) म्रेडल १६७

सं० १७७१ वर्षे माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे वापणा गोत्रे सा० सोहड सु०  
दाद मा० -- ण पितृ -- निमित्त श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० उएसगच्छे श्री देव  
गुप्त सूरिभिः ।

( ७७५ )

सं० १५१० जैष्ठ सु० ३ दिने प्राग्वाट पोपलिया बासिया तीरा मा० वीरी पुत्र सा०  
हुंगर भ्रातृ सा० खेतसि सहसा समरदे धारकमी भार्या जासलि जत भाई कर्मादि  
कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुब्रस (?) विंवं का० प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर  
सूरि पहे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

( १६६ )

( 776 )

सं० १५२६ वर्षे माघ यदि ५ रवौ जकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा०  
भरमादे पु० - - - दि कुटुंब युतेन श्री कुंघुनाथ विंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री  
प्रज्ञ शेखर सूरि पहे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

( 777 )

सं० १५३२ जैष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर  
भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंबं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर  
सूरि पहाळकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 778 )

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काण्टा - - - भ० श्री सोम कीर्त्ति आ०  
श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय धोरठेच गोत्रे सा० बेईया भा० खेहं पुत्र सा० श्रीमा  
जा० प्रती श्री आदि - - कारापितं नित्यं प्रणमति ।

( 779 )

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र - सोमकेन भा०  
गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुंब युतेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे  
श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

( 780 ) अ३३५ १४४

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे जकेश वंशे लोढा गोत्र संघवी  
टाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

( १८६ )

भैरवगिनी सुश्राविका वीरा नाम्ना स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ विंशं कारित प्रतिष्ठित  
श्री चतुर्विंशति जिन विंशं प्रतिष्ठित श्री बृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तत्पद्मे  
श्री जिनहंस सूरि सत्पहालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभि सकल संघेन पूज्यमान  
आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

### कडलाजी का मंदिर ।

( 781 ) प्रै३२५ १८९

संवत् १६८४ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सव हरषा भा० भीरा दे तत् पु० संघवो जस-  
वंत भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे  
महारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

### महावीरजी का मंदिर ।

( 782 ) प्रै३२५ १८९

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ बुधे श्री शांतिनाथ विंशं गादहीआ गोत्रे सं० सुरताण  
भा० हर्षमदे पु० स० हांसा भा० लाडमदे पु० पदमसी कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे  
श्री हीर विजय सूरि पद्मे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय सुन्दर गणिः प्रणमति ॥  
श्री रस्तु ॥

( 783 ) प्रै३२५ १८९

॥ ॐ ॥ संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्य  
श्री मेढता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे वाई पूरा नाम्ना पु० सक-

( १६० )

मर्णादि सपरिवार - श्री सुमतिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठित सपा गच्छाधिराज महारक  
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख  
परिकर परिवृतैः ॥

( 784 )

संवत् १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेहता वास्तव्य ऊ० ज्ञा०  
समदडिआ गोत्रीय सा० माना मा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात  
मा० केशरदे पुत्र जईससी लषमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत विंवं का०  
प्र० सपा गच्छे महारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पहालङ्कार भ० श्री विजय देव  
सूरि सिंहैः ।

( 715 )

सं० १६७७ ज्येष्ठ अदि ५ गुरौ श्री सोसलबाल ज्ञातीय गणधर चौपडा गोत्रीय स०  
कचरा भार्या कडडिमदे चतुरंगदे पुत्र स० अमरसी मा० अमरादे पुत्ररत्न स० अमी-  
पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूर  
वदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ वि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छा-  
धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्ति ॥

( 786 )

पह प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षाषाढीया  
ष्ठाहिकादि बामोसिका अमारि प्रवर्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री  
शत्रुंजयादि तीर्थकर मोचकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान  
श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा०  
हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

( १६१ )

( 787 ) अक्टूबर १९११

संवत् १६७७ ज्येष्ठ अदि ५ गुरुवार पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधरचोपडा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा० कडडिमदे पु० अमरसी—भा० अमरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अबुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पट्ट नंदि महोत्सव विविध धर्म कर्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भातृ अमीपाल कपूरचन्द्र स्वभार्या अजाडबदे पु० ऋषभदास सूर दास भ्रातृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण श्रेयोर्थं स्वयं कारित मर्माणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ त्रिवं कारित प्रतिष्ठितं श्री महावीरदेव — — — परंपरायत श्री वृहत्खरतर गच्छाधिप श्रीजिन भद्र सूरि संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री मदकव्वर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र सूरि विहित कवित काश्मीर विहार वार सिंदूर गजर्जणा विविध देशामारि प्रवर्तक जिहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पट्टोत्तं लब्ध श्री अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्ठमोडुार प्रदर्शित भाण वडमध्य प्रतिष्ठित श्री पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहित्य वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन भहारक चक्रवर्ति श्री जनराज सूरि दिन करैः ॥ आचार्य श्री जिन सागर सूरि प्रभृति पति राजैः ॥ सुत्रधार सुजा । प्रतिष्ठित भहारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरंदरैः श्री मेडसा नगर मध्ये ।

( १६२ )

## ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है । यहाँ पर बहुतसे प्राचीन कीर्त्ति चिन्ह विद्यमान है । शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है । सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके जनशानके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है ।

## मंदिर प्रशस्ति ।

( 788 ) श्रीशेषा 142

॥ ॐ ॥ जयति/ जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्ववित्सर्व  
दर्शी । ससुर मनुज राजामीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्द्युः स्मर्यते  
योगिवर्ष्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दुग्दुष्टा विष्टप-  
मुद्भवद् घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादौ सहस्रां  
शुक्लप्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां भद्रं स नाभेः सुतः ॥ २ ॥ यो गोर्वाण सर्व-जिद  
भिहितां शक्ति मश्रदुधानः क्रूरः क्रोडा चिकीर्ष्या कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया  
यस्याहसो सौ मूर्ति मित इयता नामरत्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं वितरतु भगवा-  
न्वस्व सिद्धार्थं सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वर्निर्वासालय बन समयोस्माक माहं - - - -  
नस्यावसाने - - - उत महती काचिदन्याय देषा इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति भयतः  
सस्व जेशच्य नीचैर्यत्पादांगुष्ठकोद्याकनक नगपत्नी प्रेरिते व्यात्सवीरः ॥ ४ ॥ श्री  
मानासीत्प्रभुरिह भुवि - - - यैक वीर स्त्रैलोक्येयं प्रकट महिमा राम नामासयेन चक्रे



शाकं दृढतरमुरी निर्द्वयालिङ्गनेषु स्वप्नेयस्या दशमुख वधोत्पादिन स्वास्थ्य  
 वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या काषट्किल प्रेम्णालक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवत् प्रतोहार वंशो-  
 राम समुद्रवः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सबशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत्कीर्त्तिर्घ्यस्य  
 तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नस्मिन्मामि सुखेन विश्व विवरे नत्वेव  
 तस्माद्बहिर्निर्गन्तुं दिगिभेन्द्र दन्त मुसल व्याजाद कार्प्यीन्मनुः ॥ ७ ॥ समुदा समुदायेन  
 महता चमूः पुरा पराजिता येन --- समदा ॥ ८ ॥ --- समदारण तेनावनीशेन कृता भिरक्षैः  
 सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः । समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मूकेशनामास्ति पुरं गरीयः ॥ ९ ॥  
 --- सक्रान्तं परैः --- मित्र श्री मत्पालितं यन्महोभुजा । तस्यान्तस्तपनेश्वर  
 स्य भयनं विभूद्गुणं शुभ्रतामभूत्पृष्ठगुराज कुंजर युतं सद्रौजयन्ती लतम् किं कूटं  
 हिम --- सृष्ट रति --- ॥ १० ॥ तद् कार्प्यं तार्य्यं ध्वजसा संसार --- या ॥ ११ ॥  
 क्वचित् --- रघुदुयोधिकम धोयते साधवः क्वचित्पटुपटीयसौ प्रकटयन्ति धर्म  
 स्थितिम् । क्वचिन्तु भगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे - - - - -  
 ध्वनिमदेव गाम्भीर्यत ॥ १२ ॥ वीक्षणै क्षणदां स्वस्य वर्णलक्ष्मी विपरिचिताम् । बुद्धि-  
 भवत्यवद्यास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ आचार्यादेर्वचन वन --- नि ---  
 मुच्चैः सव्याव --- पर्यार्यः प्रतिध्वान दण्डम् सत्यं मन्ये यदु दित मिसोवावादीत्स-  
 मन्तात्सोये भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ --- किं चान्ह ---  
 यिकार त्रैव ---  
 मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सौम्यो वणिगिजन्दक संज्ञितः । इन्दुवत्कान्ति - -  
 लयः ॥ १६ ॥ --- चदुह्वरा - - ह्वया प्रसाद युक्ता स्वयशोभिरामा । सदानुसर्त्री स्वपतिं न  
 मार्गणावात - - - - - तरगा ॥ १७ ॥ तस्मात्तस्यामभूद्गुर्मां त्रिवर्ग - - - - -  
 - - - - - - - - - - - ॥ १८ ॥ यन्नाकारि सितेतरच्छवि - - नत्वा दिनं याचिते ॥ १९ ॥  
 न्नास्थिं जनरपि प्रसिगतं यद्गोहमभ्यर्त्थितं । किं चान्यदुवने दरोरु सरसि  
 नीर नोर दक्षित ..... ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्म प्रति युक्त ....

( १६६ )

( 794 )

सं० १२३४ वैशाख शुक्ल १४ मंगलवार सावर्षदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारिन  
जिन तुत्रित सादेव मणि कुतेन ।

( 795 )

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे मोढ वास्तव्य सा० डा-भार्या यससारदे भार्या  
सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं  
आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

( 796 )

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेचा गोत्रे सा०  
वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूरयाभां पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं  
कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः ।

( 797 )

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसभ से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र  
भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठित  
श्री वृहद् तपापंकज श्री बिजय तिलक सूरि पद्दे श्री बिजय धर्म सारे श्री भूयात् ॥

( 798 )

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीढ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-  
ताभ्यां श्री धर्मनाथ विंवं पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रभु  
सूरि मंडलिराभ्यां कृपः ।

( १९७ )

( 799 )

सं० १५४६ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-  
नार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० भर्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन  
स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय  
सागर सूरिभिः ।

( 800 )

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूणं करापितं ।

( 801 )

सं० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कहुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजवाहं केन श्री सहस्रव  
विंवं सा० तेजपालेन प्र० ।

( 802 )

संवत् १७५८ वर्षे आषाढ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छे  
भहारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्य - - - ।

नीवमें प्राप्त मूर्तिके टूटे चरण चौकि पर ।

( 803 ) अश्विनी १९७

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - सालीमद्र - - - - - देव कर्म  
श्रेयोर्थं कारित जिनेत्रिकम् - - - ।

( १६६ )

## श्री सचियाय माताका मंदिर ।

( 804 ) श्रीकृष्ण १९४

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्योह श्री केल्हण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र श्री कुंमर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती - - - दक्षिकान्वीय कीर्ति पाल राज्य वाहके तदुक्ती श्री उपकेशीय श्री सञ्चिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिलंगो क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क सञ्चिका देवि भक्ति परेण श्री सञ्चिका देवि गोष्ठिकान् भणित्वा तत्समस्त तद्वयं व्यधस्था लिखापिता । यथा । श्री सञ्चिका देवि द्वारं भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्गाद्य द्वार स्थितम् स्यात्तव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश वर्षीयोत्परः । तथा गोष्ठिकैः श्री सञ्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा १०॥ घृत कर्ष १ भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः ॥

( 805 ) श्रीकृष्ण १९४

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ घोर षडांशु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु जालहण तस्य भार्या सूइवं तयोः सुतेन साधु मास्हा दोहित्रेण साधु गयपालेन— सञ्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चण्डेका शोसला श्री सञ्चिका देवि क्षेम करी श्री क्षेत्र पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं ।

( 806 ) श्रीकृष्ण १९४

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पालिहया धीय देव चन्द्र वधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा समन्तेन स्वगृहं दत्तं ।

( १६६ )

( 807 )

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - -  
पालिहया धीत देव चंड बधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं समस्त  
गौष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्ग समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

हंगरीके चरण पर ।

( 808 )

सं० १२४६ माघ बदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक  
प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्गः कृतः ।

---

पाली ।

यह श्री मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके लेख पण्डित रामानन्दजीने  
संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

( 809 )

संवत् ११४४ वैशाख बदि ७ पल्लिका चैत्ये धीर ।

( 810 )

संवत् ११४४ ज्येष्ठ बदि ४ शीघरेल - - - ।

( २०० )

( 811 )

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्ल भाजिताभ्यां सात्याप्त  
कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येण प्रतिष्ठितः ।

( 812 )

संवत् ११५१ आषाढ सुदि ८ गुरौ - - - ।

( 813 )

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनी श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये  
श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सधण देवी  
तयोर्मस्य धनदेव सुस देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या  
निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थकर विवं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः ।

( 814 )

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवी श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य  
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त  
नाथ देवस्य ।

( 815 )

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवी श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य  
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल  
नाथ देवस्य ।

( २०९ )

( 816 )

सं० १५ - - - सुदि ३ सां - - - - का० सा० मद्या - - - स्व श्रेयसे श्री कुंथनाथ  
विं का० प्र० श्री भिन्नमाल गच्छे ।

( 817 )

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ - - - ।

( 818 )

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेश सा० मदा भा० वाल्हंदे पुत्र सा० क्षेमाकेन भा०  
सैलखू भातृ हेमा कान्हार मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विं का० प्र० तपा  
श्री रत्न शिखर सूरिभिः ।

( 819 ) भोगर न५८ | २० | ५१ | ५१

सं० १५२९ वर्षे माह सु० ५ रवौ ज० भोगर गो० सां० राणा भा० रत्नादे पु० चाहड़  
भा० रङ्गे पु० खरहथ खादा खात खना धितु श्री नेमिनाथ विं कारि० श्री नागेन्द्र  
गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः ।

( 820 ) चाली २० ।

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ज० गुगलिया गोत्र सा० खीमा पुत्र काजा भा०  
रतमादे पु० वरसा नरसा थादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री  
जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि विं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सालि सू - - ।

( 821 ) चाली २० ।

सं० १५३७ वर्षे ज्यैष्ठ सुदि १० श्री उकेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पासड़ भार्या  
लखमादे पुत्र सा० भोजा शुभ्रावलेण भ्रातृ सा० पदा तत्पुत्र सा० कोका प्रमुख परिवार

( २०२ )

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन  
भद्र सूरि पद्वे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

( 822 ) पाली २०२

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ऊ० चूदालिया गोत्रे च ऊ० सा० सिवा मा०  
सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाडिमदे पुत्र आसा भार्या ऊमादे इत्यादि कुटुंब  
युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंश का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे ।

( 823 ) पाली २०२

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त  
भार्या साह पुत्र सा० वरु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंश  
श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन  
समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं ।

( 824 ) ✓  
५९

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वदि १ शुके उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल  
पुः ऊदा चांपा ऊदा मा० रूपी पु० वाला खंतावाला मा० बहरङ्गदे सकुटुंब श्री० उदा  
पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभू मूलनाथक चतुर्विंशति जिनानां विंश कारितं प्रतिष्ठित श्री  
संढेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः ।

( 825 )

संवत् १६६६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह  
बिजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान  
वशावतन्स श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री



माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा० हुंगर भाखर नाम भ्रातृ  
द्वयेन सा० हुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रतन सा० पौत्र सा० टीला सा०  
भाखर भा० भाबलदे पुत्र ईसर अरोल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवलखाख्य  
प्रसादोर्धार श्री पार्श्वनाथ विंवं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितं च स्व प्रति-  
ष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीमदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्ध धारक तपा गच्छाधि-  
राज भहारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर भहारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार  
भहारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर  
परिकरितेः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे ब्रह्मो मादा मादा कौ तयोः श्रेयार्थं  
लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारित ॥

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे अष्टमी दिवसे श्री  
मेहता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० ईसर हदाह सा नामनि पुत्र लखा  
चोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केशवादि परिवार परिवृतैः स्वश्रेयसे श्री  
महावीर विंवं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० दुगर भाखर कारित  
प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भहारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार भहारक श्री श्री श्री  
विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे अष्टमी दिवसे महाराजाधिराज  
महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये तत्सुत युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते  
तत्प्रसाद पात्रं चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नाम्नि श्री पालि नगर राज्यं कुर्वति  
तन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा०  
भाखर नाम्ना भा० भाबलदे पुत्र स० ईसर अटोल प्रमुख परिवार युतेन स्व श्रेयसे श्री

( २०४ )

शुपार्श्व विंश कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायाम् प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकवर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन सूरि । .

( 828 ) पाली २०५

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय मुहणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्ति स्फूर्त्ति मत्कोशं विंशन्ति जिन विंश विराजित दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे महारक श्री विजय देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणित्तिः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनाथकजी पर ।

( 829 ) पाली २०५

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ९ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - - हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे पुत्र सा० चसवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंश कारितं स्थापितं च । महाराणा श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरेश्वरोपदेशतः वीधरला । वास्तव्य समस्त संघेन । शिशरिराया उपरि निर्मापितेन विंशेन प्री० आ प्रतिष्ठितं च तप गच्छाधिराज महारक श्री मदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भ० हीर विजय सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर महारक श्री विजय सेन सूरेश्वर पट्टालंकार महारक श्री विजय देव सूरित्तिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिकरितैः ।

( २०५ )

## छोढारो बासका मंदिर ।

( 830 )

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह षुण साहजी विजय राज्ये । संवत् १६८६ वर्षे  
वैशाख सिताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय  
राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगन्नाथ जी राज्ये ऊपकेश ज्ञातीय श्री श्री  
माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० हुंगर भातृ सा-भाषर --  
नामभ्यां - हुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्यघर भना भाषर भार्या चाचलदे  
पु० हेसर आयेल रूपा - पु० टीला युतेन स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंव कारापितं  
प्रतिष्ठित ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये प्र० श्री मानचन्द्र सूरी  
तत्पते श्री रत्नचन्द्र सूरी वा० तिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व  
श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जोर्णोद्धार कारापित मूल नायक श्री  
पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां विंव० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश डंडे रुप्य  
सहस्र ५ द्रव्य द्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री  
पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

## श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

( 831 )

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ९ - - - - ।

## श्री सोमनाथका मंदिर ।

( 839 )

संवत् १२०९ द्वि० ज्येष्ठ वदि ४ अद्योह श्री पल्लिकायां ग्रामे अणहिल पाटकाधिष्ठित

( २०६ )

समस्त राजावली विराजित परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर  
लब्ध - - - - - निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी मूशल श्री मत्कुमार  
पाल देव कल्याण विजय राज्ये - - - - - ।

## नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

( 833 )

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय  
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः  
श्री नेमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना  
प्रतिष्ठितं ॥

( 834 )

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय  
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः  
श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री  
मद्देव सूरि विनेवेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना । यावद्विचि चन्द्र खीस्यातां  
धर्मो जिन प्रणीतोस्ति । तावज्जाया देत्त जिन युगलं वीर जिन भुवने ।

( २०७ )

( 835 )

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-यत्रत जैता भार्या० कह पुत्र नामसी भार्या कमालदे  
पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विं व कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांवदेव सूरिभिः ॥

( 836 )

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्रे० समरसी सुत दो० धारा भा० सूहृददे सुत  
दो महिपाल भा० मालहणदे सुत दो० मूलाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईजाभ्यां  
च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विं व कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुदर  
सूरिभिः ।

( 837 )

श्री चन्दा प्रभु विं व । सं० १६८६ प्रथमाषाढ वदि ५ शुक्रे राजाधिराज श्री गज  
सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसा सुत जयमल्ल जी नाम्ना श्री चन्द्र  
प्रभु विं व कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-  
धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पहालंकार भ । श्री विजय सेन सूरि पहालंकार  
पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद् धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व  
पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः राणा श्री जगत  
सिंह राज्ये नाडुल नगर राय विहारे श्री पद्म प्रभु विं व स्थापित ॥

( 838 )

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ५ शुक्रे राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये योधपुर  
नगर वास्तव्य मणोत्र जेसा सुतेन । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ विं व कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्री ५ श्री विजय देव सूरिभिः  
स्व पहालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः च परिवारः ॥

## ताम्र शासन ।\*

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठः परिहृत मद मार  
क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्भः स्वो वशीयं च सम्भ स्त्रिभुवन कृतसेवा श्री  
महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासोन  
नहूले भूपः श्री लक्ष्मणादौ ॥२॥ तस्मात् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री  
बलि राजो राजा विग्रह पालोनू च पितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः ।  
तज्जः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद इत्यजनो  
पार्थिव श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत् क्षितिपः सुभटः श्री जैद्र राजाख्यः ॥५॥ श्री पृथिवी  
पालोऽभूत् सत्पुत्राः सौर्यवृत्ति शोसाढ्यः । तस्माद्भवत्भ्राता श्री जोजल्लो रण रसात्मा ॥६॥  
तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः । तत्पुत्राः क्षोणिपः श्री अल्हण देव  
नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप प्साळे सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं । सिंचति सुदिताहित  
गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिपः सारमिठं बुद्धिमान् चिन्तयत् ।  
इह संसार असार सर्वत्र जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गर्भं स्त्रि कुक्षिः मध्ये पल रुधिर  
बसा मेदसा बहु पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्थान्नु जन्मा  
धर्मादानामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प मात्रं  
स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ स्वद्योतोद्योत तुल्यः क्षणः मिह सु लदाः सम्पदो  
दृष्ट नष्टः प्राणित्वं चंचलं स्याद्दुःखमुपरि यथा तोर विन्दुन्नलिन्याः ज्ञात्वेर्म स्त्र

\* यह ताम्रापत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड साहब यहांसे लेकर विजयातके स्थल पश्चिमाटिक सुसाइटीमें दान किया है ।

पित्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्मं कीर्तिं देशान्तो राज पुत्रान् जन पद गणान्  
 बोधयत्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ अस्मिन्नेव महा  
 षतुर्दशी पर्वणी । स्नात्वा घृत पटे निवेश्य दहने दत्त्वाहुनीन् पुण्य कृन् मार्तण्डस्य  
 तमः प्रपाटन पटोः सम्पूर्य चावज्जलिं । त्रैलोक्यस्य प्रभुं चराचर गुरुं संस्नप्य  
 पंचामृतैः ईशानं कनकान्न वस्त्र नदनैः सम्पूज्य विप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुतिल कुशाक्ष-  
 तोदकः प्रगुणो भूता पसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छत यावत् चंद्राकं भूपालं ॥१३॥  
 श्री नड्डूल महास्थाने श्री संढेरक गच्छे श्री महावीर देशाय श्री नड्डूल तल पद शुल्क  
 मंडपिकायां मासानुमासं घूप वेलार्थं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् अस्य देवरस्यनं  
 भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिर्भवि भोक्तिभिरपरैश्च परिपंधाना न कार्या । यतः सामा-  
 न्योयं धर्मं सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्वान एवं भावीनः  
 पार्थिवेन्दु भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मदन्वयजा भूपा भावी  
 भूपतयश्च ये । तेषामहं करे लग्नः पालनीयं इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः  
 कश्चिन् नृपति भवेत् तस्याहं करे लग्नीस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ बहुभिर्व-  
 सुधा भुक्त्वा राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥  
 षष्टि वर्षं सहस्राणि स्वर्गं तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमत्ता च तान्येव नरकम्  
 वशेत् ॥१८॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत् यः स विष्टायां कृमिभुत्वा पितृभिः  
 सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो व्यतोधासु शुष्क कोटर बासिनः । कृष्णा हयोभि जायंते  
 देव दायम् हरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महा श्रीः । प्राग्वाट वंशे धरणिगग नाम्नः सुतो महो  
 मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः प्रतिभा निवासो लक्ष्मीधरः श्री करणे नियोगी ॥२१॥  
 आसीत् स्वच्छ मला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्र ज्ञान सुधारस प्लवित  
 विष्टज्जो भवत वासलः । पुत्रस्तस्य वभूव लोक वसनिः श्री श्री धरः श्री धरे  
 सूपस्ति रचयांचकार लिखि चैदं महा शासनं ॥२२॥ स्व हस्तोर्य महाराज श्री  
 अरुहण देवस्य ।

## तामापत्र ( महाजनों के पास )

ॐ स्वस्ति ॥ श्रिये भवन्तु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरो नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा । राजा महाराज नतांहि युग्मः खयातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समाभूत्तदीय तनयः श्री लक्ष्मणो भूपति स्तस्मात्सर्व्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभिताख्यः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो मही खयातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽ भवत् ॥३॥ तस्मिन्तीत्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुर्दुर बैरि कुंजर बघ प्रोचाल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलाली कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥ सत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे दयापाद्य सौराष्ट्रकान् । शौचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर वृत्तिरमलः श्री अलहणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रौड वंश जव रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण बै जनकजेव विद्याहिता सी ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगत्पथो रूप सौंदर्य युक्ताः । शस्त्रैः शास्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशोलाः ज्येष्ठ श्री केलहणारुय स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्ति पालो । यद्वन्नेत्राणि शंभो खि पुरुष वदथामीजने बंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमीसां परिवारानथो ज्येष्ठो गंजः क्षीणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारी निज राज्य धारी श्री केलहणः सर्व्व गुणोरुपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आलहण देव कुमार श्री केलहण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कीर्त्तिपालस्य प्रसादे दश नड्डूलाई प्रतिबद्ध द्वादश ग्राम ततोराज पुत्र श्री कीर्त्तिपालः । संवत् १२१६ श्रावण वदि ५ सोमे ॥ अद्यैहं श्री नड्डूल स्नात्वा धौतधाससी परिधाय तिलाक्षत कुश प्रणयिनं दक्षिण करं कृत्या



देवानुदकेन संसर्प्य । बहलतम तिमिर पटल पाटन पट्टीयसो निःशेष पातक पंक प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पुजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती दूर्त्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रुमौ स्नपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति भाद्रपद मासे चंद्राकृतं क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरबंदं माडाड । काण सुवं । देवसूरो । नाडाड मउवडो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्वदाप्यस्मामिः शासने दत्तौ । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं लगित्वा सर्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे दातव्यौ । अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्त्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रान्ते योऽन्य कोपि भविष्यति तस्याहं करे लग्नो न लोप्य मम शासनं । षष्टि वर्षं सहस्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि र्तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्य साढनप्रा शुभं करः दामोदर सुतो लेखि शासनं धर्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

संवत् १२१३ वर्षे मार्ग वदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल्ल पाटके समस्त राजा बली समलं कृत परम महारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति बर लब्ध प्रसाद प्रौढ प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री बहड देव श्री श्री करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने पोरित्य त्रौडाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदे तदीय सुत संजात महामंडलीक० श्री वस्त

( २१३ )

राजस्तदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिंह शासनं प्रयच्छति यथा । अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महावीर चैत्ये । तथाऽारष्ट-  
नेमि चैत्ये शील बंदडो ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्वीय धर्मार्थे  
वदर्य मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारकब्राह्मणादय प्रमुखप्रदत्त त्रिहाइको  
रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यामदं । यः कोपि लोपियति सो ब्रह्महत्या गो हत्या  
सहस्रेण लिप्पते । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं । बहुभिर्वसुधा भुक्ता  
राजभिः । यः कोपि बालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्टामीति । गौडान्वये कायस्थ  
पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं ।

## नाडलाई ।

वर्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिलेके नांडोलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु  
प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संवत् दश दाहोतरे बदिया चोरासी बाद ।

खेड नगर थी लाबिया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्तमान हैं ।

## श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

( 842 )

संवत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री षंढेरकान्वय देशी चैत्यं देव श्री महावीर  
दत्तः । मोरकरा ग्रामे घाणक तैल बल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तरा सुत  
विंसराकेन कलसो दत्तः ॥ रा० वाच्छलय समेत । साखिय भण्डौ नाग सिड । ऊतिवरा

( ३१३ )

धीदु, रा पोसरि । लक्ष्मणु । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजिभिः सागरादिभिः । जस्य जस्य  
यदा भूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

( 843 )

ॐ ॥ संवत् ११६६ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज  
रायपाल । देव तस्य पुत्रो रुद्रपाल अमृत पाली । ताभ्यां माता श्री राज्ञी मानल देवी  
तया नदूल डागिकायां ॥ सतां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । घाणकं  
प्रति धर्माय प्रदत्तं ॥ नागसिव प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० तिमटा वि० सिरिया  
घणिक पोसरि । लक्ष्मण एते साखिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो हत्या सह-  
स्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

( 844 )

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये  
- - - हास - - समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । आत्म । पाइला मध्यात्  
सर्व साउत पुत्र विंसीपको दराः ॥ आत्मीय घाणक तेल बल मध्यात् । माता निमित्तं  
पलिका द्वयं । प्ली २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद समक्षाय । धर्माय निमित्तं  
विंसीपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च । स्त्री हत्या  
भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

( 845 )

संवत् १२०० कार्तिक अदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये । श्री  
नदूल डागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नदूला इय महाजनेन सर्वे मिलित्वा श्री  
महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । घृत तैल चौपड़ मणि पित्त पाइय प्रति । क०५ धान लव-

( २१४ )

नमपि तद्रोणं प्रति मा० १ कपास लोह गुठर षाड होंगु माजीठा तौल्ये घडो प्रति । पु० १  
पूगहरी तकि प्रमुख गणितैः । सहस्रं प्रति । पुगु १ एतसु महाजनेन चैतरेण धर्माय  
पूदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

( 846 )

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज षदि ५ शुक्ले । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव  
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागि कायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा-  
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थे । श्री अभिनव पुरीय वदायर्था । अत्रेषु समस्त वणजार  
केषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइलाल गमाने । ततु बीसं प्रति । रुआ २  
किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारकै धर्माय पूदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या  
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या शतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

( 847 )

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ बदि ९ नाडलाई रीमाउहीत को-विसति को तेल सेर० ॥  
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ पूत देस ।

( 848 )

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

( 849 )

सं० १५६९ वर्षे । कुतवपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात्  
मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

( 850 )

सं० १५७१ वष कुतवपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद  
सुन्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्गा श्री संघेन कराप्रिता देव कुलिका चिरं नन्दतात्

( २१५ )

( 851 )

सं० १५७१ वर्षे कुतयपरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद सुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनोय श्रो संघेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

( 852 ) गार्गी (द्वितीयोक्तिः) 215

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५६७ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठां तिथौ शुक्ल वासरे पुनर्वसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संहरे गच्छे कलिकाल गौतमावतारः समस्त भविक जन मनोबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महाप्रसादः चतुः षष्टिसुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः । श्री पंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर नमो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्तृ चूडामणिः प्र० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः तत्पद्मे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री वदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशो वादः प्र० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः । एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूरुणां वंशे पुनः श्री शालि सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पहालंकार हार प्र० श्री शांति सूरि बराणां सपरिकराणां विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे । श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर श्री भेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वशोद्योतकार प्रताप मार्चंडावतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात् । श्री उकेश वंशे राय जडारे गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे मं० मयूर सुत मं० सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० सीहा समदाभ्यां सद्राघव मं० कर्मसीधा रालाखादि सुकुटुम्भ

( २१६ )

युताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ८६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां तं  
सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य  
स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पद्वे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ०  
श्री ईश्वर सूरिभिः । इति लघु प्रशस्तिरिय लि० आवाच्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्ण  
सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

( 853 ) मार्ग २१६

संवत् १६७४ वर्षे माघ बदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती मण्डारी गोत्रे०  
सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान  
गम भार्या तत पु० । भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र  
जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र संकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद  
जादव । मं० सिवा पुत्र पूजा जेठा संयुतेन श्री अदिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं तप  
गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि ततपटालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-  
लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

( 854 )

महाराजाधिराज श्री अजय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ श्री  
नहुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातोय वृ० सा । जीवा भार्या जसमादे सुत सा ।  
नाथाकेन श्री मुनि सुत्रत विवं कारापितं प्रतिष्ठितं च । भटारक श्री हीर विजय  
सूरिभिः ।

( 855 ) मार्ग २१६

संवत् १७६६ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने जकेश ज्ञात १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर  
सी पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिलेन  
संप्रति प्रतप (प्रतिष्ठितं) माणिक्य त्रिजै शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात्  
शुभे भूयात् ।

( २१७ )

( 856 )

संवत् १६६६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगीरी महा तपा विरुद्ध धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरीश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पहिका ज्ञात राज श्री संप्रति निम्मापित श्री ज्ञेखल पर्वतस्य जीर्ण प्रासादोद्घारेण श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मदकवर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री होर विजय सूरीश्वर पह प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरीश्वर पहालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृत्तैः श्री नडुलाई मंडन श्री ज्ञेखल पर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंवं ॥ श्री ॥

## श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

( 857 )

ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११९५ आसउज वदि १५ कुजे ॥ अद्य ह श्री नडूलडागि-  
कार्या महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयीराज्यं कुर्वतस्ये तस्मिन् काले श्री  
मदुर्जित तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दोष धूप नैवेद्य पुष्प पूजाद्यर्थे गुहिलान्वयः ।  
राजत उघरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मांगे  
गच्छता नामा गतानां वृषभानां शोकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विशतिमो भागः  
चंद्रार्कं यावत् देवस्थ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपथना न करणीया ॥  
अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपिं लोपयिष्यति । तस्याहं  
करे लग्नो न लोप्यं मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोयं साभिज्ञान पूर्वकं  
राज० राज देवेन मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षिण उद्योतिषिक दूद्रू पासूनुना गूगिना ॥ तथा  
पला० पाला पृथिंवा १ मांगुला ॥ देवसा । रायसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

( २१८ )

( 858 )

ओं ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्री नहुलाई नगरे आहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्य स्वच्छ श्री मदवृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री घर्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि मिरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद विषादः प्रसाद समुद्ध्ये आचंद्राकं नन्दतात् ॥ श्री ॥

## कोट सोलंकी ।

( 859 )

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३९४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्रे श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं ठिकुय उबाही सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्कं यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

## धानेराव ।

( 860 )

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक बैजल देन राज्ये श्री वंश



( २१६ )

गतीय राउत महण सिंह भुक्ति बंसंह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्ष प्रति द्राम  
१ खाज सुणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांभत्य । सेठ रायपाल सुत राव राजमल्ल  
महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्स दिवहिं ।

## बेलार ।

मारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

## श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

( 861 )

ओं संवत् १२३५ वर्षे श्री० साधिग भार्या माल्ही तत्पुत्रा आववीर घदाक आवधराः  
आववीर पुत्र सालहण गुण देवादि समन्वित आत्म श्रेयसे लगिकां कारितवान् ।

( 862 )

ओं संवत् १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ प्रौढ प्रताप श्री महुंघल देव कल्याण  
विजय राज्ये बाघल दे चैत्ये श्री नाणकीय गच्छे -श्री शान्ति सूरि गच्छाधिपे शाश्व ।  
आसीद् धर्कट वंश मुख्य उसभः श्राद्धः पुरा शुद्धधीस्तद्गोत्रस्य विभूषणां समजनि  
श्रीष्ठि सपाश्वर्वाभिधः । पुत्रो तस्य वभूवतुः क्षितितले विख्यात कीर्त्ति भ्रशं पूमलह प्रथमो  
वभूव सगुणी रामाभिघश्चापरः ॥ तथान्यः ॥ श्री सर्वज्ञ पदार्चने कृत मर्तिदाने दयालु  
मर्मुहु राशादेव इति क्षिती समभवत् पुत्रोस्य घांघाभिधः । तत्पुत्रो यति संप्रतिः प्रति  
दिनं गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विशारदो जिन गृहोद्धारोद्यतो योऽजनि ॥२॥

( २२० )

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं । गोष्ठ्याच राम गोसाभ्यां कारितो रंग  
मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु ।

( 863 )

संवत् १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्री० उदुरण भार्यया श्री० देवणाग  
पुत्रिकया उत्तम परम आविकया स्व श्रीयोर्यं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोर्यं  
कारितः ।

( 864 )

अं ॥ संवत् १२३८ पौष वदि १० श्री० आंश कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०  
नागू पुत्रिकया संतोस परम आविकया स्व श्रीयार्थं श्री पा ।

( 865 )

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या त्रिण देवि सत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या  
लक्षा श्री पालहाया - - - मालहा - - - - भार्या श्री ति - - - - भार्या - - - न भार्या  
पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि ।

( 866 )

ॐ गच्छे श्री नाणकासिरुये सुधर्म सुत वलहणः । अमुच्चारित्र संयुक्ती वाल भद्रो  
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राह्वो मुनिचन्द्र - - परः । तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे ।  
घोस सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारयामास  
गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

( 867 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे धवर्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या  
सुखमति तत्सुत थांथां कालहा रालह घोर सीह पालहण प्रमुख गोसा पुत आम्

( २२१ )

वीर आम जाल कालहा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर रालहण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र देव जस पालहण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेवोर्थं स्तंभ लगामिमं कारापयामासूः ।

( 868 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे उसभ गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भायां दूणहेवि तत्पुत्र मगाकेन भार्या राजमति रालहू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार शक्ति कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुब सहितेन स्तंभन माकारितेदमिति - - - ।

( 869 )

ॐ संवत् १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धक्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या- थिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम कारयदात्म श्रेयसे ॥८॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

( 870 )

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री मागवाट वंसीय रोपि मुणि मं० दसाढाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवत् ॥

( २२० )

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं । गोष्ठ्याच्च राम गोसाभ्यां कारितो रंग  
मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु ।

( 863 )

संवत् १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्री० उद्दरण भार्यया श्री० देवणाग  
पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रीयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं  
कारितः ।

( 864 )

अं ॥ संवत् १२३८ पौष वदि १० श्री० आंब कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०  
नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रीयार्थं श्री पा ।

( 865 )

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पडसिणि पुत्र गोसा भार्या  
लक्षा श्री पालहाया --- मालहा --- भार्या श्री ति --- भार्या --- न भार्या  
पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि ।

( 866 )

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिरुये सुधम्मं सुत वलहणः । अमुच्चारित्र संयुक्तो वाल भद्रो  
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राहो मुनिचन्द्र - - परः । तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे ।  
घोस सोमकी ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारयामास  
गुरु कंद विषट्ठये ॥ ३ ॥

( 867 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे धक्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या  
सुखमति तत्सुत थांथां कालहा रालह घोर सीह पालहण प्रमुख गोसा पुत आम्

( २२१ )

वीर आम जाल कालहा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर रालहण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र  
देव जस पालहण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेवोर्थं स्तंभ  
लगामिमं कारापयामासूः ।

( 868 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे उत्तम गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भायां दूल्हेत्रि तत्पुत्र मगाकेन  
भार्या राजमति रालहू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार शक्ति  
कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुंब सहितेन स्तंभन  
माकारितेदमिति - - - ।

( 869 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे घक्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या-  
धिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम  
कारयदात्म श्रेयसे ॥छ॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

( 870 )

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये  
श्री मारवाट वंशीय रोपि मुणि मं० दसाढाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट  
सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवत् ॥

( २२२ )

( 871 )

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मण कारिते । पंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संघ  
भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः ख्याताश्च-  
तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्टं  
श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद्भूतं ॥३॥

## कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

## श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

( 872 )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ श्री कृष्णधर दिवा प्रमुख वाला मलण बास  
ददिवा रावघो विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

( 873 )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ कृष्णधर विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द  
सूरि देशनया श्रे० घाघल श्रे० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख शाक - - ।

( 874 ) ०१५८ | २२२ | ३२१५ ✓

ॐ ॥ नमो बीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-  
गत्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदंनं व रिद्धिरादीश्वरः शारद भास्य  
दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजंते । युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्वा प्रसारः खट प्रसारः । कच्छ  
 प्रसारो व्रतति प्रसारः । इमे समे कोटितमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥  
 गीर्वाण सालो नहि काष्ठ भावात् । तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः । मृशं विकारा-  
 न्नहि काम कुंभश्चिंतामणिर्नैव च कर्करत्वात् ॥४॥ सूर्या न तापाकुलता करत्वात् ।  
 सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्णं शैलो न कठोर भावात् । नाभ्यंगजातेन तुला-  
 मुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विंदून । पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान् ।  
 करोत्करान् शारदः चन्द्र सत्कान् । कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां  
 प्रभवति विद्याः । सुर्ष्वलोकादिषु काम गव्यः । द्वयोऽपि वाञ्छाधिक दान दक्षाः ।  
 पुष्पात्तु पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यतोंतराया स्त्वरितं प्रणेशु । सृगाधिराजा दिव  
 मार्गः पूगाः । यद्वा मयूरादि वले लिहानाः । स मारु देवो भवताद् विभूत्यै ॥८॥ राठोड  
 वंश व्रतति प्रसाना नीकोपमो नीक निकाय नेता । राजाधिराजो जनि मल्ल देव ।  
 स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मौरसस्सम जनिष्ट बलिष्ठ बाहुः प्रत्यर्थिता  
 पनकदर्थन पर्व राहुः । श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्र रश्मिः । श्री मानभूदुदय सिंह  
 नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुल्या नदीप । स्तनु जित मधु दीपः  
 सौम्यता कौमुदीपः । नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः सितरद मुचुकुंदः सर्व  
 नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो । वाच्यस्तद न्यैरथ वृद्ध राजः ।  
 यस्येति शाहिर्विरुदं स्मदद्या । दकवधरो वर्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेमनः कष  
 पट्ट शोभा । मबीभरत्संप्रति सूर सिंहः । यो माष पेष द्विषतः पिपेष । निर्मूल काष  
 कषितार्चितांतिः ॥१३॥ राज्य श्रियां भाजन सिद्ध धामा । प्रसाप मंदी कृत चंड धामा ।  
 संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमत्  
 श्च सूर्य । सिंही गती व्योम वनं च प्रीती । अन्वर्थतो नाम जगाम सूर्य । सिंहे तियः  
 सर्व जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदोय सेनोच्छलितै रजोभि । मलीमसांगो दिनसाधि नाथः ।  
 परो दया वस्त मिषेण मन्ये । स्नातुं प्रवेशं कुरुते विनम्रः ॥१६॥ अप्येक मीहेतन

( २२२ )

( 871 )

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मट कारिते । पंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संघ  
भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा धालकाः ख्याताश्च-  
तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्टं  
श्री पार्श्व चैत्येऽधीकरदद् भूतं ॥३॥

## कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

## श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

( 872 )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण दास  
ददिवा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्री ॥१॥

( 873 )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनंद  
सूरि देशनया श्री० घाघल श्री० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख आक - - ।

( 874 ) ०१५६ | २२२ | ३१८

ॐ ॥ नमो बीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वति श्रियामारूपदमापसिद्धिर्ज-  
गत्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्जदं वरिद्धिरादीश्वरः शारद भास्व  
दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंभा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी



तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुश्चिरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत  
 संज्ञितस्य । मृगे चणाऽमेलक देभिधाना । सुता वभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहरारुघो  
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना । सुधर्म सिंहस्य सधर्मिणीति ।  
 कुटुंबिनी साउच्छ रंगदेवी । प्रिया वभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत  
 शचीरजयंत शत्रुंजये प्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५६ संख्ये । वर्षे हर्षेण ना  
 पाख्यः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे । योत्रां युग षट् पद  
 पदं । कला १६६४ मितेब्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमाकर्कटितु तर्कं षडभू । वर्ष १६६६  
 गते फाल्गुन शुक्ल पक्षे । तौ दंपती स्त्री कुस्तः स्मत्तुर्य । व्रत तृतीया हनि रूप्य दानैः ॥३७॥  
 दानं च शीलं च तयोपकार । स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते । नापाभिधान व्यवहारि  
 मुख्ये । यथाहिलोके गुरु पुष्य पूर्णा ॥३८॥ भुजाजिज्ञाया निज चारु संपद्ने । न्याय-  
 जिज्ञायाः फलमिष्टमिच्छता । वाणांगषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने । विधापित्त  
 स्तेनहि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेअपि पाश्चर्यो द्वयो । नापा भिधानेन विधापित्ते  
 इमे । पित्रोर्यशः कीर्त्ति रज्जे इव स्वयोः । कर्शा द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध  
 वादि मतं गज केसरी । कपट पंजर अंग कृते करी । भव मयोधि समुत्तरणे तरी । प्रबल  
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पथरक्ष्यसागरः । स्त्र गुण रंजित नायक नागरः ।  
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड् । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । तत्प-  
 होदयि रवयो विजयंते विजय सूरेशः । श्री उचितवाल गोत्रावतंस तुल्या  
 अनुचानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदा विज्ञा करे । गगा तरंगालिल सद्य शोभरैः ।  
 जिनालयोय प्रतिभा अधुवरे । प्रतिष्ठितो वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पंक्ति  
 प्रभावः श्री विजय कुशल विबुध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिना प्रशस्तिरेषा विनि-  
 रमाधि ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति ममां । उदली  
 लिखदुस्कीर्णा वर तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

शुद्ध वंशो । धारे चक्रं तस्मि युतो विशेषात् । स्वयं हताराति वसुन्धरा स्त्री परिग्रहात्  
 द्रुहता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः ।  
 अहंति भक्तिं स्व कुटुंबलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्मं ।  
 सुरेष यद्वन्मधवा विभाति । यथैव तेजस्विषु चंड रोचिः । न्यायानुयायि ष्विव राम-  
 चन्द्र । स्तथाधुना हिन्दुषु भूधद्योयं ॥१९॥ द्रव्य जिनाचौचित कुंकमादि दीपार्थं मा  
 जाद्यममारि घोषं । आचामतोम्लाद् तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना  
 पुत्र वित्ताहरणं न चोरी नन्या समोषो न च मद्य पानं । नाखेटको नान्य वशा निषेधे ।  
 त्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्धानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारी  
 गजसिंह नामा । गत्या गजीऽतीव बलंन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री  
 ओसबालान्वय वाङ्मिचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः । विज्ञ प्रमेयो चित्वाळ  
 गोत्रः पणेष्वपिस्त्रेष्व चलत्क गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेच । प्रायः प्रभूतैर्द्र-  
 विणैरुपेतः जगामिधानो जगदीश सेवा । हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां  
 युग्मं । विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां । करे पुरे गोधपुरामिधाने । दंतं प्रभाणाऽद्वया  
 जगारुधः सएष तुर्ध व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमेदः पुण्यात्मनां पुण्य  
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो । नाथा मिधो नाथ समाप्त  
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शोला । भार्या भवद् गूजर दे सुनामा । रूपेण  
 दर्या गृह भार धुर्या । श्री देव गुर्वोः परिचर्य थार्या ॥२७॥ असूत सा घूर्ध दिगोत्र सूर्यं ।  
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वज्रांकरं रोहण भूमि केव । नापाभिधानं सुत राज  
 स्तनं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विष्णुक । तदर्थिनोन्धेपि  
 समज्जयंतु । गुणान्सपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे । वनिता वनितार  
 सार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या मम्या नापाहूये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-  
 मिधश्व । सुधर्म सिंहोप्युदयाभिधोपि । सादूल नामेति च संति पंच । तयोस्तनूजा  
 इव पांडु कुर्त्याः ॥३१॥ आसा मिधानस्य वभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतो द्वी ।

तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुश्चिरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत  
 संज्ञितस्य । मृगे चणाऽमेलक देभिधाना । सुता वभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहराख्ये  
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना । सुधर्म सिंहस्य सधर्मिणीति ।  
 कुटुंबिनी साउछ रंगदेवी । प्रिया वभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत  
 शचीजयंत शत्रुंजये प्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५९ संख्ये । वर्षे हर्षेण ना  
 पाख्यः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे । योत्रां यग षट् पद  
 पदं । कला १६६४ मितेव्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमाकर्काहृतु तर्कं षडभू । वर्षे १६६६  
 गते फाल्गुन शुक्ल पक्षी । तौ दंपती स्त्री कुरुतः स्मृत्युय । व्रत तृतीया हनि रुप्य दानैः ॥३७॥  
 दानं च शीलं च तयोपकार । स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते । नापाभिधान व्यवहारि  
 मुख्ये । यथाहिलोके गुरु घुष्य पूर्णा ॥३८॥ भुजाविर्जिताया निज चारु संपत्नी । न्याय-  
 जितायाः फलमिष्टमिच्छता । वाणांगषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने । विधापित  
 स्तेनहि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेअपि पार्श्वयो द्वयो । नापा भिधानेन विधापिते  
 इमे । पित्रोर्यशः कीर्त्ति रुप्ते इव स्वयोः । कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध  
 वादि मतं गज केसरी । कपट पंजर भंग कृते करी । भव मयोधि समुत्तरणे तरी । प्रबल  
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पथश्चयसागरः । स्त्र गुण रंजित नायक नागरः ।  
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । तत्प-  
 होदयि रवयो विजयंते विजय सूरेशः । श्री उचितवाल गोत्रावतंस तुल्या  
 अनुधानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदे विज्ञा करै । गगा तरंगालिल सद्य शोभरैः ।  
 जिनालयेय प्रतिभा अधूवरे । प्रतिष्ठितो वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पंक्ति  
 प्रभावः श्री विजय कुशल विबुध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिना प्रशस्तिरेषा विनि-  
 रमायि ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति ममां । उदली  
 लिखदुत्कीर्णा वर तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

शुद्ध वंशो । धारे चक्रं तृप्ति युतो विशेषात् । स्वयं हतारासि वसुन्धरा त्वो परिग्रहात्  
 द्रुहता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः ।  
 व्हंति भक्तिं स्व कुटुंबलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युगं ।  
 सुरेषु यद्वन्मद्यवा विभाति । यद्यैव तेजस्विषु चंड रोचिः । न्यायानुयायि श्विव राम-  
 चन्द्र । स्तथाधुना हिन्दुषु भूधयोष ॥१९॥ द्रव्य जिनाचौचित्त कुंकमादि दीपार्थं मा  
 जाद्यममारि घोषं । आचामतोम्लाद् तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना  
 पुत्र वित्ताहरणं न चोरी नन्या समोषो न च मद्य पानं । नाखेटको नान्य वशा निषेधे ।  
 त्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्धानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो  
 गजसिंह नामा । गत्या गजोऽतीव बलंन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री  
 ओसबालान्वय वाद्धिचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः । विज्ञ प्रगेधो चित्तवाल  
 गोत्रः पणेष्वपिस्त्रेष्व चलत्क गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेच । प्रायः प्रभूतैर्द्र-  
 विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदीश सेवा । हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां  
 युगं । विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां । करे पुरे योधपुराभिधाने । दंतं प्रभाणाब्दवया  
 जगारथः सएष तुषं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनिस्त प्रमेदः पुण्यात्मनां पुण्य  
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सन्नाथो । नाथा मिधो नाथ समाप्त  
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शोला । भाग्यार्थं भवद् गूजर दे सुनामा । रूपेण  
 वर्या गृह भार धुर्या । श्री देव गुर्वोः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व दिग्नेत्र सूर्यं ।  
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वज्रांकुरं रोहण भूमि केव । नापाभिधानं सुत राज  
 स्तनं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विष्णुक । तदर्थिनोन्धेपि  
 समर्जयंतु । गुणान्तपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे । अनिता वनितार  
 स्तार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या गम्या नापाहूये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-  
 भिधश्व । सुधर्म सिंहोप्युदयाभिधोपि । सादूल नामेति च संति पंच । तयोस्तनूजः  
 इव पांडु कुंत्योः ॥३१॥ आसाभिधानस्य वज्रूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतो द्वी ।

तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुश्चिचरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत  
 संज्ञितस्य । मृगे चणाऽमेलक देभिधाना । सुता वभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहरारूपो  
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुद्दे धारल दे भिधाना । सुधर्म सिंहस्य सधर्मिर्मणीति ।  
 कुटुंबिनी साउछ रंगदेवी । प्रिया वभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत  
 शचोज्जयंत शत्रुंजये प्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५६ संख्ये । वर्ष हर्षेण ना  
 पाख्यः ॥३५॥ अबुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे । योत्रां यग षट् पद  
 पद । कला १६६४ मितेब्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमाकर्कटितु तक्रं पडभू । वर्ष १६६६  
 गते फालगुन शुक्ल पक्षी । सौ दंपती स्वी कुरुतः स्मत्तुर्य । व्रत तृतीया हनि रुप्य दानैः ॥३७॥  
 दानं च शीलं च सथोपकार । स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते । नापाभिधान व्यवहारि  
 मुख्ये । यथाहलोके गुरु पुष्य पूर्णा ॥३८॥ भुजाजिज्जसाया निज चारु संपद्ने । न्याय-  
 जितायाः फलमिष्टमिच्छता । वाणांगषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने । विधापित  
 स्तेनहि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेअपि पाश्चयो द्वयो । नापा भिधानेन विधापिते  
 इमे । पित्रोर्यशः कीर्त्ति रुने इव स्वयोः । कर्शा द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध  
 वादि मतं गज केसरी । कपट पंजर भंग कृते करी । भव तयोधि समुत्तरणे तरी । प्रबल  
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पयश्चयसागरः । स्त्र गुण रंजित नायक नागरः ।  
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड् । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । तत्प-  
 होदयि रवयो विजयंते विजय सूरेशः । श्री उचितवाल गोत्रावतंस तुल्या  
 अनूधानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदा विभा करै । गगा तरंगालिल सद्य शोभरैः ।  
 जिनालयोय प्रतिभा बधूवरे । प्रतिष्ठितो वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पंक्ति  
 प्रभावः श्री विजय कुशल विवध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिना प्रशस्तिरेषा विनि-  
 रमायि ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति मिमां । उदली  
 लिखदुत्कीर्णा वर तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

( २२६ )

## सेवाड़ी ।

मारवाड़के गोड़वाड़ इलाकेके बालो जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

### श्री महावीर जी का मंदिर ।

( 875 )

ॐ ॥ सं० ११६७ चेत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक राज युवराज्ये । समी पाठीय चैत्ये जगती श्री धर्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं । महा साहणिय पूअवि - - - पौत्रेण ऊशिम राज पुत्रेण उत्पल राकेन । मां गढ आंधल ॥ वि० सल खण जोगरादि कुटुंब समं । पद्रांडा ग्रामे तथा मेद्रांचा ग्रामे तथा छेछड़िया मद्रुडी ग्रामे ॥ अरहटं अरहटं प्रसि दत्तः जब हारकः ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते स्मदोय धर्म प्राग्धाः सदा भविष्यंसि । इति मत्वा प्रतिपालनीयं । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं । बहुभिर्वसुधा भुक्त्वा राजभिः सगरादिभिः ॥१॥छ॥

( 876 )

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परतोषकारिणी शांतिः । विशुध पति विनुत चरणः स शांति नामा जिनेा जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाद्यः श्री मदन हिल भूपतिः । येन प्रचंड देर्दुंड प्रराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति सद्रुहः । जिन्द राजाभिद्यो राजा सत्यस शौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत्त नूजस्ततो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः । अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूभृतां धरः ॥४॥ सतः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले । जज्ञे स त्याग सौभाग्य विख्यातः पुन्य विस्मितः ॥५॥ सद्रुको प्रत्तनं रम्यं शमी पाटी सि नामकं । तस्त्रास्ति वीर नाथस्य चैत्यं स्वर्गं समोपमं ॥६॥ इतश्चासीद् विशुद्धात्मा

( २२७ )

यशोदेवो बलाधिपः । राज्ञां महाजनस्थायि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री पंडेरक  
सगदच्छे बंधूनां सुहृदां सतां । नित्योपकुर्वता येन न श्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो  
बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः । विश्व कर्मैव सर्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः  
॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म परायणः । उत्पन्नः थल्लको राज्ञः प्रसाद गुण  
मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्दधान संयुतः । श्री मत्कटुक राजेन यस्य  
दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येत्र्यं वक्क संप्राप्तौ वितीर्णं प्रति वर्षकं । द्रम्माष्टकं प्रमाणेन  
थल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजाद्यं शांति नाथस्य यशोदेवस्य खत्तके । प्रवर्द्धयतु चंद्रार्कं  
यावदादनमुज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाद्यां जिनालये । कारितं शांति  
नाथस्य बिंबं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्मेण लिप्यते राजा पृथिवीं भुनक्ति यो यदा ।  
ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

( 877 )

ॐ ॥ संवत् ११८८ असौज यदि १३ रबी अरिष्ट नेमि पूर्व दिसायां अपवरिका  
अग्रे भित्ति द्वार पत्रे चतुर्भाते कर्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं  
पं० अश्वदेवेन ।

( 878 )

सं० १२४४ आसाढ यदि ८ रबी श्री संभव देव फागुण सुदि ६ चवण - - - लर - -  
पधर - - - ॥ - - - सुदि १४ जसो - - - हेकर जिस देव ॥ - - - सुदि १५ विरवार  
- - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्तिक यदि ५ माणु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि  
५ रबी - - - ण शांभव ॥

( 879 )

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्तिक यदि १ रबी अब वाससा नालिकेर धवजा खासटी मूल्यं

( २२६ )

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः । प्रदत्तात् वलाः  
५ मास पाटकेने चके वययनीयाः ॥४॥

( 880 )

॥ ॐ ॥ संवत् १९६७ वर्षे श्रेष्ठ सुदि २ गुरौ वासहङ्ग वास्तव्य जजाजल गोत्रे श्रेष्ठ  
बांदा सुत नाना - - - देव सधीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहङ्ग सुत पूस देव  
साधूदेव पूसदेव सुत घण देव सहङ्ग भायां शीत पुत्रिका साजणि जालह सती रण  
भार्या राहीअई - - - सेहङ्ग भायां अइहव सूमदेव भायां मदावति सावदेव भायां  
प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहङ्गेन भायां समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेह  
पुत्रिका देह साहुंसा उसभ दासेन सुभ भवत् ॥

## सांडेराव ।

यह श्री मारवाड़के धाली जिलेमें है ।

## श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

( 881 )

श्री बंडेरक चैत्ये पंडित । जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमंता देव नाम गुरो मूर्ति  
कारिता धिरपाल मुक्ति बांछतां सं० ११४६ वैशाख वदि— ।

( 882 )

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरौ अवधेह श्री बंडेरक निवासी श्रेष्ठ गुणपाल  
पुत्रीकाया गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया । श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका  
कारापिता ।



( २२६ )

( 883 )

ॐ ॥ संवत् १२२१ माघ अदि २ शुक्ल अद्य श्री केलहण देव विजय राज्ये । सस्य  
मातृ राज्ञी श्री आनन्द देव्या श्री षंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि  
१३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः । तथा  
राष्ट्रकूट पातू केलहण तद्गातृज ऊत्तमसीह सूद्रग कालहण आहड आसल अणतिगा-  
दिभिः तला राभाठयथस ? गटसत्कात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा  
श्री षंडेरक वास्तवय रथकार धणपाल सूरपाल जीपाल सिगडा अमियपाल जिसहड-  
देल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र - - -

( 884 )

संभत् १२३६ कार्तिक अदि २ बुधे अद्य श्री नडूले महाराजाधिराज श्री केलहण  
देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्तमाने राज्ञी श्री जालहण देवि भुको श्री षंडेरक देव श्री  
पार्श्वनाथ प्रतापतः थांथा सुत रालहाकेन मा भ्रातृ पालहा पुत्र खोढा सुभकर रामदेव  
धरणि यवोहीष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगळा ? रासां धीरण हरिचन्द्र  
वर देवादिभिः युतेन स - - - परम श्रेयोर्य विदित निज गृहं प्रदत्तः ॥ रालहाश सत्क  
मानुषे बसद्भिः वर्ष प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया । शेष जनानां बसतां साधुभिः गोष्टिके  
सारा कार्या ॥ संवत् १२६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ सोयं मातृ धारमति पुनः स्तंभको  
उद्यत । थांथा सुत रालहा पालहाभ्यां मातृ पद श्री निमित्तं स्तंभको प्रदत्तः ।

नाना

भारवाङ्कै वॉली जिलेमें यह ग्राम है ।

( 885 )

संवत् १२०३ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महंत सूरिभिः प्रतिष्ठितः समस्तः ॥

( २३० )

( 886 )

संवत् १४२६ माह अदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोढ झा० ठ० रत्न ठ० अर्जुन  
ठ० तिहणा पुत्र भोब्द देव श्रेयसे भातू टाहाकेन श्री पार्श्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उद०  
देव सूरिभिः ।

( 887 )

सं० १५०५ वर्षे माह अदि ६ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर विंमं प्र० श्री शांति  
सूरिभिः - - - षम ण जिन - - - भवतं

( 888 )

सं० १५०६ वर्षे माघ अदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

( 889 ) न।द। ( २३० ) न।न। गे।व। म।ल।

सं १५०६ वर्षे माघ अदि १० गुरौ गोत्र बेलहस ऊ० ज्ञातीय सा० रत्न भार्या रतना  
दे पुत्र दूदा वीरम आह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित  
प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

( 890 )

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित्त समयात् संवत् १६५६ आद्रपद मासा शुक्ल  
पक्षे ७ सातमी तियो शनिवारे । श्री बैद्य गोत्रे । श्री सविथा क्णणोत्रजा । मंत्रीश्वर  
त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० पेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १  
चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागढ़ सिवाणे साको करी  
मूड । पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिधा ४ सहसा ५ मुहता  
श्री नारायण नुराणा श्री अमर सिंध जी मया करेने गांव नाणो दीयो मुहता नाराइण  
अरहट १ साईमल देव श्री महावीर नु सत्तर अद पूजा सारु केसर दीबेल सारु दीधे

डीदूनां बरोस । उत्थापे तियेनुं गाईरो--सुं स । तुरळ उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस  
बले - - - - को उथाप जो - - - गांव नाणारो चढियो गांव वीबलाणै - - वी-सि-ए ।  
इ जाएन - गांव - दम १ चेटियो - - - - तको उथाप जो । वीजीको उथापसी तिणनु  
गदहउ गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे सत्पुत्र मु० श्री राज - - जणयल - - -  
दा पुत्री जषमी - - - - नाराडण विजी भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री - - -  
गच्छै भहारक श्री सिद्ध सूरि विद्यमाने - - - । ० श्री - - - - चंद शिष्य चांपा लिषितं ।  
ए - - - - जको - - - तिणु - - - - ।

## लालराई ।

मारवाडके वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें  
यह लेख है ।

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय  
पाल सस्तिन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवडा पड़ि देह बसी सू० आसधर समस्त सीर  
सहितै खाडि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्त श्री शांति नाथ देवस्य  
दत्ता पूण्याय यः कोपि लुप्यते स पापो न छिद्यतेमंगल भवतू ॥ तथा भद्रिया उअ  
अरइहे आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरोथु १ गूजर तृयात्रहि वील्हस्य  
पुण्यार्थं ॥ १ ॥

ॐ ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ यदि १३ गुरो अबोहं श्री नडूले महाराजाधिराज श्री  
मेरुहण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्तिपाल देव पुत्रै सिनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण

( २३२ )

पाल्हा राज पुत्र अन्नय पाल राज्ञी श्री महिषल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा  
निमित्तं भडिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल  
समक्ष एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सी० देवलये०  
समीपाटीय - - - पाजून आम - - - समक्ष आदानं - - - - मितस्य २ त - - - हत्या  
पातकेन लि - - - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

( 893 )

ॐ ॥ सं० १२८६ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण  
चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

( 894 )

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण यदि १ सोमे उद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट  
उभां वां । पयरा महं सजन उ महं० धीणा उघण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच  
कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं १ वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चत्व  
विंशति । द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च  
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - सदा भूमि तस्य तस्य  
तदा फलं शुभं भवतु ॥

( २३३ )

( 895 )

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नाग श्र । श्रे - - अर सोहेन सय पक्षे दंत द्र० उमयं द्र ३६  
समीपाटी मंडपिकाशां व्याष्टपुत्र माण पंच कुलेन वर्षं वर्षं प्रति आचंद्रार्क - - यावत्  
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

( 896 )

ओं नमो बीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेडा ग्रामे  
महादपाल लमारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

( 897 )

॥ ॐ ॥ नमो बीतरागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथमः आद्रवा वदि ६ शुक्र दिने अद्येह  
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पत्त सिंह देव राज्येत्र तन्नियुक्त श्री ॥ श्री करण  
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पंडबा ॥ समो तल पदित्य मंडपिकार्या  
साधू ० हेमाकेन भाद्वि हाथीउडी ग्रामे श्री महाबोर देव नेवार्थे वर्षे प्रति वर्त्ता - - क द्र  
१४ चस्वबिंसि द्रमा ० प्रदत्ता शुभं भवतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिपि ।  
जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य वदा फलं ॥ कपूर विजय लिषतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

( 898 )

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा संस्था जवस्तवः । परिशोसतु नी - - परार्थं खयापना  
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना धिनाम समये यत्पाद पद्मोन्मुख प्रेक्षा संख्य मयूख

( २३२ )

पालह राज पुत्र अमय पाल राज्ञी श्री महिषल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा  
निमित्तं भडिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल  
समक्ष एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सो० देवलये०  
समीपाटीय - - - पाजून आम्र - - - समक्ष आदान - - - - मितस्य २ त - - - हत्या  
पातकेन लि - - - ११ ।

हतुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

( 893 )

ॐ ॥ सं० १२६६ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण  
चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

( 894 )

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे उद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट  
उभां वां । पयरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच  
कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं १ वर्ष स्थितिके कृत द्र० २१ चत्व  
विंशति । द्रम्माः वर्षं वर्षं प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च  
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य  
तदा फलं शुभं भवतु ॥

( २३३ )

( 895 )

सं० १३३६ वर्षे श्रौष्टिको नाग श्र । श्र - - अर सोहेन सय पक्षे दंत द्र० उत्तयं द्र ३६  
समीपाटी मंडपिकाशां व्याष्टपुय माण पंच कुलेन वर्षं वर्षं प्रति आचंद्रार्क - - यावत्  
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

( 896 )

ओं नमो बीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेड़ा ग्रामे  
महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

( 897 )

॥ ॐ ॥ नमो बीतरागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथमभाद्रवा वदि ६ शुक्र दिने अदोह  
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पत्त सिंह देव राज्येत्र तन्नियुक्त श्री ॥ श्री करण  
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पठ्वा ॥ समो तल पदित्य मंडपिकार्या  
साधु ० हेमाकेन भाद्वि हाथीउड़ी ग्रामे श्री महाबीर देव नेवार्थं वर्षं प्रति वर्त्ता - - क द्र  
२४ चत्वारिंशि द्रमा० प्रदत्ता शुभं भवतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिपि ।  
जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य वदा फलं ॥ कपूर त्रिजय लिषतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

( 898 )

- - - ॥ विरके - पजे रक्षौ संस्था जवस्तवः । परिशोसंतु ना - - परार्थं रूपापना  
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना बिनाम समये यत्पाद पद्मोन्मुख प्रेक्षा संख्य मयूख

शेखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैः ऋदशभिर्गुणं दशशती शक्रस्य शुभ्रमद्दृशां कस्य  
 स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - क - - नासत्करीलोप  
 शोभितः । सुशेखर - - लौ मूर्द्धि रूढो महीभृतां ॥३॥ अभि विश्वद्रुचिं कातां सावित्रीं  
 चतुराननः हरिवर्मा वभूवात्र भूविभ्रुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंक्रज  
 स्फुरदनं बुद्ध बाल दित्राकरः । रिपु बध्वदनेन्दु हन द्युनिः समुद्रपोद्दि विदग्ध नृप-  
 स्वतः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर बचनैर्द्वांसु देवाभिधाने बार्धं नीतो दिनकर करैर्नीर  
 जन्मा करो व । पूर्व जैनं निजमिव यशो कारयद्दुस्त्रिकुण्डां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम  
 गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय । भागद्वयं  
 व्यतीर्यत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्माद्भूच्छुद्ध सत्त्वो ममटाख्यो महीपतिः ।  
 समुद्र विजयी शलाघ्य तरवारिः सद्रूर्मिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन  
 जनित लोचनानन्दः । धवलो बसुधा व्यापी चन्द्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भ्रंक्वाघाटं  
 घटाभिः प्रकटमिव मर्द मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज  
 राजे । श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूर्जरेशे त्रिणष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव  
 शरण्यः सुरणां अभूव ॥१०॥ श्री महर्लत्त राज भूभुजि भजैर्भजत्य भंगां भुवं दंढैर्भण्डन  
 शौड चंड सुभटै स्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरव सारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेद्रं  
 पुरा सेनानोरिव नीति पौरुष परो नैषीत्परां निर्वृतिं ॥११॥ यं मूलाद्बुद्ध मूलयद्गुरु  
 बलः श्री मूल राजो नृपो दर्पाद्यो धरणो बराह नृपतिं यद्बुद्धवपिः पादपं । आयातं  
 भुविकां दिशी कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायानिव रूढ मूढ महिमा कोलो मही  
 मण्डलं ॥१२॥ इत्यं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थितोयः । पाथो  
 नाथो वा विपक्षात्स्वपक्षं रक्षा कांक्षी रक्षणे बद्ध कक्षाः ॥१३॥ दिवाकरस्वेव करैः कठोरैः  
 करालिता भूर कदम्बकस्य । अशि श्रियं ताप हतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्र  
 नौघा ॥ १४ ॥ धनुर्द्वार शिरोमणे रमल धर्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य  
 पारंपरं । समीथुरपि सन्मुखाः सुमुख आर्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव



श्लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदोर्णं विषुर्विशेषात् वलगतुरंग खुरखात मही  
 रजांसि । तेजोभिरुज्जित मनेन विनिर्जित त्वाद्वास्वान्विलज्जित इवांसतरां तिरो-  
 भूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् घ - लनां दधौ । अनन्योद्धार्य सत्कार्यं भार धुर्योर्ध-  
 तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धोदनिः शुद्धया । भीष्मो वंचन वंचितेन  
 वचसा धर्मेण धर्मात्मजः । प्राणेन प्रलाय निलो बलभित्तो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण  
 प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये घाल प्रसाद मतिष्ठिप  
 त्परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं । कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यां कृतात्म चमत्कृ-  
 ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं  
 लोका विलोक्य कलनासिगतं गुणौघं । पार्थादि पार्थिव गुणान् गणयन्तु सत्यानेकं व्यधा-  
 द्गुणनिधिं यमितीव वैधाः ॥२०॥ गोचरयन्ति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका सचिरं ।  
 वाचस्पते र्वचस्वी को वान्यो वर्णयित्पूर्णां ॥२१॥ राजधानी भुवो भर्तुं स्तस्यास्ते हस्ति  
 कुण्डिका अलका धनदस्येव घनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हरहास हिमांशु हारि  
 भ्रातृकार वारि भुवि राज विनिर्जराणां । वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप  
 संपद पहार परं परेषां ॥२३॥ धौस कल धौत कलशाभिराम रामास्तना इव न यस्यां । संत्य  
 परेभ्य पहाराः सदा सदाचार जनतीयां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना कृलाः कुवलय  
 दृशां संदृश्यन्ते दृशस्तरलाः परं । मलिनित्त मुखा यत्रोद्भृताः परं कठिनाः कुचा निविड  
 रचना नीत्री वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि सार्द्धं शुचि कुच कलशैः  
 कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्णानि प्रकामं सहं घन जघनैर्द्वैवता मंदिराणि । आजन्ते दम्भ  
 शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रो जन हन हृदयैर्विभ्रमैर्यत्र  
 सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पठ्वीणो हृद्यरूपा रसाधिकाः । यत्रेक्षु वाटा लोकेभ्यो नालि-  
 कत्वाद्भिदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभिर्गौरवाहो गुणौघै भूपालोनां  
 त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्तिः । नाम्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितुं  
 भासमाना समानोकामं कामं समर्था जनित जनमनः संमदा यस्य मूर्तिः ॥२८॥ मत्प्रेमुना  
 मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः । स्त्रघ्नेपि न स्वरूपेण समगन्स्ताति लज्जतः ॥२९॥

प्रोद्यत्पद्माकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रश्मिं  
 वासुदेवाभिधस्य । अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका  
 लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण  
 संग्रहः । अज्ञग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निर्वर्षण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्वगुणानुगतं  
 जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधः । इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल  
 सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं धन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-  
 निलांदोलितं । गरिष्ठ गुण गोप्यदः समुददी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ  
 कृन्मदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं । इदं मुख मिवा भाति भास  
 मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन घाड्डनिकं शुभ शुक्ति करोटक युक्त मिदम् । बहु  
 भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन  
 गृहेति जीर्णं पुनः समं कृत समुद्रुताविह भवांबुधिरात्मनः । अतिष्टिपत सोप्यथ प्रथम  
 तीर्थ नाथा कृतं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्तामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्यै खि-  
 पंचाशे सहस्रे शरदा मियं । माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध  
 नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्वंद्वौ सुदान भवदान धारिदम पोपलन्नाद्रुतं । यतो धवल  
 भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघहमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष  
 शिरस्य मेक रजसस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मंडपा मल तुलामा लंबते भूतलं ।  
 तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व थीर ध्वनिर्द्वामन्यत्र धिनेतु धार्मिक धियः सद्गुप  
 वेला विधौ ॥३९॥ सालकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-  
 सत्तद्धिता ख्यात नामा । सृत्ताढ्यारुचिर विरतिद्गुं यमाधर्यवर्या सूर्याचार्यै धर्यरचिरमणी  
 वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्बत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री  
 ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चरोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक  
 जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नागपोचिस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म क्षयार्थं  
 स्व संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपाज्जित वित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादि दर्प  
 मयनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्णं । ज्ञव्य जन दुरित शमनं जिनेंद्र वर शासनं  
 जयति ॥१॥ आसीद्धी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वलो विस्पष्ट प्रतिभः

अभाव कलितौ भूपोत्तमांगार्चिर्चतः । योपित्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो  
 यः श्री मान्हरि धर्म उत्तम मणिः सद्दंश हारे गुरौ ॥२॥ तस्माद्भूव भुवि भूरि गुणोपपैतो  
 भूप प्रभूत मुकुटाच्चिंत पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्विदग्ध  
 नृपतिः प्रकट प्रतोपः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तः परं प्राजनं संभूतः सुतनुः  
 सुतोति अतिमान् श्री संमटो विश्रुतः । येनास्मिन्निज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा  
 तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यं विदग्ध नृप पूजितं  
 समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्वृत्तं भवते मया प्रपाल्यते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां  
 चैत्य गृहं जन मनोहरं मत्तया । श्री मद्रुलभद्र गुरोर्याद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मि-  
 ल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्रार्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्ष्यं ॥७॥  
 रूपक एको देयो बहतामिह विंशतेः प्रबहणानां । धर्म - - - - क्रय विक्रयेच तथा ॥८॥  
 संभूत गंड्या देयस्तथा बहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्पो देयः सर्वेण परिपा-  
 द्या ॥९॥ श्री महलोक दत्ता पत्राणां चोलिलका त्रयोदशिका । पेल्लक पेल्लक मेतद्  
 द्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्तिक - - - प्रत्यर घटं धान्या-  
 दकं तु गोधूम यत्र पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्मस्य विशोपक स्तथा भारे ।  
 शासन मेतत्पूर्वं विदग्धेन राजेन रुंदत्तं ॥१२॥ कर्प्पासकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि  
 सर्वं प्रांडस्य । दश दश पलानि भारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आदानादे तस्माद्भाग  
 द्वय महंतः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहितः ॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र  
 पोत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते  
 दाने फलं दानोत्पोलिते पालनात्फलं । भक्षितो पेक्षिते पापं गुरुदेव धनेधिकं ॥१६॥ गोधूम  
 मुदग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्रोणम् प्रति माणकमेक मत्र सर्वेण दासव्यं  
 ॥१७॥ बहुभिर्बर्षसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य  
 तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे । श्री मद्रुलभद्र  
 गुरोर्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु पण्णवती समधि केपु माघस्य  
 कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं संमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि भानु भरतं प्रागीरथी

भारती प्राश्वद्भानि भुजङ्ग राज भवनं भ्राजद् भवांभोदयः । तिष्ठन्त्यत्र सुरासुरैर्द्र  
महितं जैनं च सच्छासनं श्री मत्केशव सूरि सन्तति कृते तावत्प्रभूयादिदम् ॥२१॥ इदम्  
आक्षय धर्म साधनम् शासनम् श्री विदग्ध राजेन दत्तं ॥ सम्बत् ९७३ श्री मंमट राजेन  
समर्थितम् सम्बत् ९९६ ॥ सूत्रधारोद्भव शत योगेश्वरेण उत्कीर्णं यम् प्रशस्तिरिति ।

## जालौर ।

मारवाड़का यह भी बहुत प्राचीन स्थान है । इसका प्राचीन नाम जावालीपूर था ।

## तोपखाना ।

---।--- श्रीलक्ष्मी विपुल कुलगृहं धर्मवृक्षालवालं । श्री मन्ना  
प्रेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु । मन्ये मंगल्य माला प्रणत भव भृतां सिद्धि  
सौध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विलसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान  
कुलांबर मृगांक श्री महाराज अणहिला न्वयोवद्भव श्री महाराज आल्हण सुत - - - -  
यावली दुर्ललित दलित रिपुवल श्री महाराजकीर्तिपाल हेव हृदयानंदिनंदन महाराज  
श्री समर सिंह देवकल्याण विजय राज्ये तट पाद पद्मोपजीविनि निज प्रौढि मातिरेक-  
तिरस्कृत सकल पीलवाहिका मंडल तस्कर व्यतिकरे । राज्यचितके जोजल राजपुत्रे  
इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने । रिपुकुलकमले दुःपुण्यलावण्यपोत्रं नय विनय निधानं धाम  
सौंदर्य लक्ष्म्याः । धरणि तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्षमा पतिः  
सिंह वृत्तिः ॥ २ तथा ॥ औत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भुप भवनोचित  
कार्य वृत्तिः । यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाहो - - - - खंडित दुरत विपक्ष  
लक्षः ॥ ३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण  
नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधु-  
करण समस्त गोष्ठिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषणश्रेष्ठि यशोदेवसुतेन  
सदाज्ञाकारि निज-तृयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरथेन श्रेष्ठि यशोवीर

परम श्रावकेण संवत् १२३६ वैशाख सुदि ५ गुरौ सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमेण  
 परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥  
 नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पंसवर्गैर्मुहु र्यस्ये -- -- पाव लोकन परैर्नो तृप्तिरासाद्यते ।  
 स्मारं स्मारमथो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं स्रोत्कं-  
 ठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतललीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः ।  
 दत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्त्तापूरेण  
 पातालं --- ष महीतलं । तुंगत्वेन नभो येन व्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्ज-  
 द्वपोमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेपाढय सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोचद्द्वृषालं-  
 कृतं । ताराकैरवमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नद्यादसी  
 मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संघाय ॥

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढ़स्योपरि प्रभु श्री हेमसूरि प्रबो-  
 धित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चोललक्ष्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमारपाल देवकारिते  
 श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल विंघ सहित श्री कुवर विहाराभिधाने जैन चैत्ये । सद्विधि प्रव-  
 र्तनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्राकं समर्पिते ॥ सं० १२४२ वर्षे  
 एतद्देशाधिप चाहमान कुलतिलकमहाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां०  
 यशोवीरेण समुद्भूते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवाचार्य शिष्यैः श्री पूर्ण देवाचार्यैः ।  
 सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मूल  
 शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे  
 दीपोत्सव दिने अग्निनव निष्पन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामचं-  
 द्राचार्यैः सुवर्णमय कलसरोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ सुभं भवतु ॥ छ ॥

( २४० )

( १०० )

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देल्हा सलक्षण  
भांपाख्याः भांवा पुत्रो बीजाकस्तेन देवइ सहितेन पितृभां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय  
श्री महावीर जिन चैत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

( १०१ )

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज  
श्री चंदन विहारे श्री क्षीं व रायेश्वर स्थान पतिना प्रहारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री  
महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात्  
मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेषनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

( १०३ )

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय  
राज्ये सन्मुद्रालंकारिणि महामात्यः श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महा-  
राज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री मद्भुनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भवनेन महं नर-  
पतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक सम्पत्तं श्री महावीर देव  
भांडागारे द्रम्माणां शनाहुं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवनेन द्रम्माहुं न नेचकं मासं प्रति  
करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

( १०३ )

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्णं गिरी अद्येह महाराज कुल  
श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव  
राज्य घुरामुद्रहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणघर ठकुर आंबड पुत्र ठकुर जस पुत्र  
सोनी महणसीह भार्या मारुहणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी मारुहण गजसीह तिहुणा  
पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीघर भुवण

पाल सुहृदपाल द्वितीय भार्या जालहण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन भार्या नायक देवि श्रेयोर्थे देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्चा निक्षेप हृदमेकं नरपतिना दत्तं सत्तं भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी बलिः कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

## महावीरजी का मन्दिर ।

( ९०४ ) जालौर २५१

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरी अब्देह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पह श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये.....मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उखवाल ज्ञातीय सा० जैसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गी परिस्थित श्री मत्त कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नङ्गणसी सुन्दरदास आस करण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालदि -- पुत्र पौत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर विंवां प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारक शिथिला-चार वारक साधु क्रियोद्वार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पह प्रभाकर श्री विजय दान सूरि पह शूङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतिबोधक सद्गुरु जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक षण्मास अमारि प्रवर्त्तक महारक श्री ६ हीर विजय सूरि पह मुकुटायमान प्र० श्री ६ विजय सेन सूरि पह संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शिखरायमाण महारक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारकस्य ॥

( २४२ )

( १०५ ) जालोर २५२

संवत् १६८३ अषाढ वदि गुरी अषण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे  
महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महुणोत्त गोत्र दीपक मं  
अचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंस दे पु० मं श्री जयलला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय  
सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे  
श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक महारक श्री हीर विजय सूरि  
पहालंकार महारक श्री विजय सेन - - - ।

( १०६ )

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी सूत्रधार ऊट्टारण तत्पुत्र तोडरा हसर टाहा ।  
दूहा हाराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

( १०७ ) जालोर २५२

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी । महणोत्र गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे  
समर्पित । श्री सुपाशर्व विंवं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० - - - ।

( १०८ )

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंवं प्र० त० प्र० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

( १०९ ) जालोर २५२

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय  
ग्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री  
कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज महारक श्री  
विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः ॥  
श्रीरस्तुः ॥



( २४३ )

( 910 )

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरी अ० लठांक श्री माण विप्र आ० विजयदेव सूरिमिः ।

( 911 )

## चौमुखजी का मन्दिर ।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरी श्री श्री मुहणोत्र । गोत्र सा० जेसा भार्या  
जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठा  
महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री सपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरिणा मादेशेन जय  
सागर गणिना ।

## हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

( 912 )

संवत् १२३१ मार्गा सुदि ८ म० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आरम श्रेयार्थं प्रदत्तः ॥

( 913 )

संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-वा० श्री मुनिशेखर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य  
स्वया केकृत ॥

( 914 )

संवत् १५४० वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विलास म० सोम रात्रे आः --

( २४४ )

( 915 )

श्री शीले सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा वीर देशिते । महिमा कीर्तिं लेखा स्यां । तस्य  
देवेषु दुर्लभा ॥

( 916 )

-- श्री पञ्जु वधू असोचय -- बहुया भज्जा सुहंकर वणिस्स । सो भन सरावि-  
याए चम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

( 917 )

--- चंदण वाल नासा --- वा मति सिरी सा -- पी -- लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाडका वाडमेर इलाके में गांव है ।

( 918 )

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरी महाराज कुल श्री सामंत सिंह  
देव कल्याण विजय राज्ये तन्निष्ठुक्त श्री २ करणे मं० चीरासेल बेलाउल भां० मिगल  
प्रभृतयो चर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री. अदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न  
मर्दन, क्षेत्रपाल श्री चंडहराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २०  
उभयादीप ऊर्द्धु सार्थ प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला । पक्षे श्रीम प्रिय दशविशापक अर्द्धाङ्गिन  
ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः  
सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

( २४५ )

## जूना वेडा ( मारवाड )

( 919 )

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ अ'पतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्णं  
वज्र मानाद्यैर्मिलित्वा सर्वं वांधवैः ॥ १ ॥ खन्नके पूर्णं भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे  
कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सुरे प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा  
भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेषं नय संजुते ॥ ३ ॥

( 920 )

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उकेश ज्ञातीय वापणे गोत्रे संधवी टीलु भार्यादीडम  
दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंदा श्री राटुलिया भार्या मन भगीदे पुत्र  
भोजा भा० ना - - - - श्री पार्श्वनाथ विं व कारित तपा गच्छ महारक श्री श्री हीर  
विज - - - - ।

( 921 )

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री उकेश गोत्रे श्री सिद्धा चार्थ संताने श्री०  
वेल्लू भा० देमलतपुत्र श्री० जन सीहेन सकुटुम्बेन आत्म श्रेयसे पार्श्वनाथ विं व कारितं  
प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

( 922 )

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवौ प्र० ग० दोला राजू पु० वीसा भा० विमलादे  
पु० हूगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विमलनाथ विं व का० प्र० श्री मडाहड़ां गच्छे श्री नय  
कीर्ति सूरि भि० मालहेणसू ग्रामे वास्तव ।

( १४६ )

( १२३ )

सं० १६३० वरषि वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी  
बाघणे सागासाहा भी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरवी श्री  
कुंधुनाथ विवं श्री हीर

( १२४ )

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति वय० चाहड भार्या राणी पु० वय० वेला प्रमुख  
कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः  
चुंपरा ग्रामे

( १२५ ) हाजी (लाडपेर) २५६

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा  
सा० सुदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या  
कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

( १२६ ) हाजी (लाडपेर) २५६

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढा गोत्र सा० फांफू आ० कपूरी सुत सा०  
वीरपालेन मा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मसी भातृ दिणहादि युतेन श्री संभवनाथ विवं  
कारित प्रतिष्ठित तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

( १२७ )

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथी इडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय।  
मं० श्री। लहुआ सुत मं० जसा मं० श्री रामा महा बाघेन भार्या रला। दम० कडूआ

( ११७ )

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं । श्री श्रीतपागच्छ  
युगप्रधान विजय दान सूरि पद्वे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि  
दशमी दिन ॥

( १२८ ) ११/२५/१९५६

संवत् १९३४ वर्षे माघ सु० ६ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे  
पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड मेरुदि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य  
विंवं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

( १२९ )

सं० १९२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

( १३० ) ११/२५/१९५६

संवत् १९४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय वाहडा गोत्रे - - - - - संभवनाथ  
- - - - - लघ गळ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव ( मारवाड )

( १३१ )

संवत् १५१६ वर्षे पौष वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राडूउड राज्ये श्री सोम्र बंम पुत्र  
श्री श्री वयं रसल्ल नरेस्वरेण बांधव सामंत सहहा पुत्र हसुव मुख सपरिवारेण तेज बाई  
भरतार भाटी महिप पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गण्  
उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र थाथल मंडाही पुत्र नारहा मं० जाणा मं० दे०  
ऊट प्रमुख श्री संघ समु मरां पटहो वाद्यमानो धिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लषतं ॥

( १४६ )

( 928 )

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी  
बाघणे सागासाहा मी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरची श्री  
कुंधुनाथ विवं श्री हीर

( 924 )

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति वय० चाहड भार्या राणी पु० वय० वेला प्रमुख  
कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः  
चुंपरा ग्रामे

( 925 ) हाजी (बाघणे) २५६

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा  
सा० सुदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या  
कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

( 926 ) हाजी (बाघणे) २५६

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उक्तेश लोढा गोत्र सा० फांजू आ० कपूरी सुत सा०  
वीरपालेन मा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मची मातृ दिलहादि युतेन श्री संभवनाथ विवं  
कारित प्रतिष्ठित तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

( 927 )

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथी इडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय।  
मं० श्री । लहुआ सुत मं० जसा मं० श्री रामा महा धाधेन भार्या रला । दम० कडूआ

( ११७ )

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विवं कारितं । श्री श्रीतपागच्छ  
युगप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि  
दशमी दिन ॥

( १२८ ) मा० २५७ / १५५६ )

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ६ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे  
पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड मेरादि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य  
विवं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

( १२९ )

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

( १३० ) मा० २५७ / १५५६ )

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय वाहडा गोत्रे - - - - संभवनाथ  
- - - - लघ गच्छ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव ( मारवाड )

( १३१ )

संवत् १५१६ वर्षे पौष वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राड्डुड राज्ये श्री सोम्र वंम पुत्र  
श्री श्री वयं रसल्ल नरेस्वरेण बांधव सामंत सलहा पुत्र हसुव मुख सपरिवारेण तेज बाई  
भरतार जाटी महिप पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि  
उपदेशेन पट्टो बांधव मं० धारा पुत्र थाथल मंडाही पुत्र नालहा मं० जाणा मं० दे०  
ऊट प्रमुख श्री संव समु मरां पट्टो वाद्यमानो चिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लपतं ॥

( २४८ )

## सांचोर ( मारवाड )

( १३२ ) सांचोर २५४

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज ,  
श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय मंडारी मंजग सिंह पुत्र मंडारी  
पालहा सुत छोषाकेन वृद्ध भ्रातृ भ० साम वधू घासकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म  
क्षेयसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

## रत्नपुर ।

मारवाडके जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

( १३३ )

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० बला० नागू पुत्र श्री० उद्धारण भार्यया श्री० देवणाग पुत्रि-  
कया उत्तम परम आधिकया स्व श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

( १३४ )

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्री० आंब कुमार पुत्र श्री० घवल भार्यया बला० नागू  
पुत्रिकया संतोष परम आधिकया स्व श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं  
कारितः ॥

( १३५ )

ॐ ॥ संवत् १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री  
आशिग देव कल्याण विजय राज्ये तन्त्रियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच  
कुल प्रतिपत्ती रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माघ



सुत महं मदन सुत महं धीणा । श्री कुमरसिंह सुत महं ऊदल प्रभृति पंच कुलेन श्री  
 पार्श्वनाथः देव प्रतिवद्गु श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि  
 शिष्य श्री अजित देव सूरीणा मुपदेशेन हह द्वय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्रार्कं नंदतु ॥  
 बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य  
 तदा फलं ।

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्नपुरे महाराज कुल श्री सांवत्त सिंह ।  
 कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्तमहं कटुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ  
 प्रतिवद्गु महा महणा श्री० सांता मह० विजय पाल गो० लषण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां  
 विदितं अक्षयराणि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर न्यातीय श्री० राजा सुत वादा  
 गांगा सुत मंडलिक मदन प्रवृत्ति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद्गु तोडक प्रवेश  
 द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हहात् द्वितीय हह श्री० गांगा श्रेयोर्थे वादा सत्क देव कुलिका  
 विंश पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकैः । विदितं हह समर्पितं । अस्य हह  
 निरुद्ध प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाचकेन वीसल प्रीययाय एक विंशसत्तथाधिक  
 शत मेकं प्रदत्तं । हह मिदं चतुर्भिः गोष्ठिकैः संमिलतै भूत्वा भाहक संस्था करणीया  
 स्वात्मीय परिणा श्रीष्टि वादा भुक्तक सांथ विनेः भाहके हह कस्यापि नार्पणीयं । तथा  
 सत्क उत्पत्ति वयय कर्ण वापगोष्ठिकानु विना एकाकिनैः न कर्तव्या । उत्पत्ति मध्यात्  
 देव कुलिकाया विद्यानां नेचकप देवी० दू २ । ३ वर्षं प्रतिदासव्या उत्पत्ति मध्यात्  
 हह पतित दुसित पदे कमठाय कारापनीया । यच्च भाहक स्वक द्रव्यं वर्द्धति तत् पोष  
 कल्याणक दिने देव कुलिकाया विंश भोग करणीय । उरितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ सत्क  
 नालिकायां यवं । न्यां खेपनीयं निक्षेप उधार गोष्ठिकै करणीय । अत्र मतान महा  
 महणा मतं श्रीष्टि सोता मतं धराणे गभी वा हस्तेन महं विजय पाल मतं । गोष्ठिक  
 लषणा मतं ॥ सु

( २५० )

## बिलाड़ा ( मारवाड )

( १३७ ) बिलाड़ा २५०

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अन्नयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये वृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे । महारक श्री जिन कीर्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति । श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको क्षमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नायं श्री सुमतिनाथ जी देव लो जातः - - - - द्रधर भीषन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रसापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव-श्री भंवतु ।

## बोर्डिया ( मारवाड )

( १३८ )

संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवा भुडपद्र वास्तव्य श्रावक साम्भण भार्या जिसवर्द्ध सुत रोहड रामदेव श्रावदेव कुटुंब सहितेन राम्बदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्वा० २० ।

( १३९ )

ओं० संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवो बहुविध वास्तव्य २० रोहित सुत चांचल सत्सुत गुण धर सालहणाभ्यां मातृ थिरम्भति श्रेयार्थे स्तम्भ लता - - - - द्वा० २० प्रदत्ता ।

( २५१ )

## कोटार (गोड़वाड़)

( १४० )

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्येह समाज . . . सउ ि . . . या मा०  
हनउ . . . पयरा महं सज्जन ठ० मह मा . . . ठ घणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च  
कुलेन श्रीधात मिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतु-  
विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति - मी मंहपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पालनीया इच ॥  
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥  
शुभं भवतु ।

( १४१ )

सं० १३३६ वर्षे श्रोष्ठि को सीहन चयपने दत्तद्र १२३ - यद्र ३६ स - प - १ मुंढां -  
या स्वस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षे वर्षे प्रति - - - - या दातव्याः ॥

## किराडू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दुओं के समय में इस  
स्थान का नाम किराट कूप था और जैनियों के प्रसिद्ध नृपति कुमार पाल ने इस  
स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कईएक बहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया  
था । काल के चक्र से इस समय उन देवालियों की बहुत बुरी हालत है और सब लेख  
भी नष्ट हो गये हैं ।

( १४२ )

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गम्याय वेधसे । विश्वरूपाय शुद्धा-  
य देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जयति शंभोः स (श) शवत् कपाल

विधु ( मरु ) विभूषणस्य । गठर्वः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गीरी जितं च चिर-  
 वल्कल वर्षं दर्शात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - भूषिते वर्बुद भूषरे । सुरभ्याः  
 परमारणां वंशो - - - नल कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु  
 घिराजो महाराज - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गल मिलद्वैरि - -  
 - - - प्रतापो ज्वल दूखलः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमीशाभ्यर्चनीयो भ - - - -  
 सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो लक्षण वैरिहं भवः ॥ - - - - - ॥७॥ सिंधु राज घरा  
 धार घरणो धर धाम वान ॥ आ - - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया  
 देव राजेश्वर- - - - ॥९॥ - - - सपहाय मही मिमां । मन्थे कृष्ण  
 द्रुमः प्रायाद् दुश्यक - - - ॥१०॥ - - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि  
 राजेंद्रो रंजितो - - - ॥११॥ - - - धंधुक - तः । येन दुर्वार वीर्येण  
 भूषितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः  
 ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सीछद् राजाख्यः च्य - - - स्व - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा  
 दुदय राजाख्यो महाराज - - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड गौड कर्णाट  
 मालवोत्तर पश्चिम । - - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-  
 त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण अपि यो राज्य मुद्वे  
 भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - यद्वं - ॥ १८ ॥ - - अतश्च नव गत् वर्षे ११८६  
 १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा उजयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर  
 राजेन सिंधु राजपुरोद्वं । भूपो निठर्याज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्भूतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश  
 संख्येषु पञ्चाधिक शते १२०५ खलं । कुमार पाल भूपालात् सप्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥  
 किराट कूप मात्मोयं शिव कूप समन्वितं । निर्जेन क्षत्र धर्मेण पालयामास यश्चिरं ॥२२॥  
 अष्टा दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशकेऽश्विने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते  
 दिनात् ॥ २३ ॥ देडं सप्तदश शता न्यश्चानां नृप जज्जकात् । सह पंच नखाश्चैवमथ-  
 रादिभिरष्टभिः ॥ २४ ॥ तजु कीदं नवसरो दुर्गो सोमेश्वरो ग्रहीत् । उच्चांगवरहा  
 साह्यां चक्रे चैवात्म सादसौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चीलुक्य जगती पतेः । पुनः

संस्थापयामास तेषु देशेषु ज्ज्जकं ॥ २६ ॥ प्रशस्ति मकरो देतां नरसिंहो नृपाज्ञया ।  
लेखको त्रय ( जे ] देवः सूत्र धारोस्तु जशोधरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१८ अश्विन  
सुदि १ गुरौ ॥ भंगलं महा श्रीः ॥

## सूधा पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तर्फ पहाड़ीके ढलावमें सूधा माता नामक  
चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं ।

ओं ॥ श्वेतांभोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तटिन्या गवाक्षः किंवा सौख्यासनं  
वा महिम मुख महासिद्धु देवी गणस्य । त्रैलोक्यानंदहेतोः किमुदितमनघं श्लाघ्य  
वक्षत्र मुच्चैः शंभोर्भालस्थलेदुः सुकृति कृतनुतिः पातु वो राज लक्ष्मीं ॥ १ ॥ ईशस्यां-  
कावनिरनुपमानंद संदोह मूला चंचद्रासोचल दलमयी भूषण प्रौढ पुष्पा । सल्ला-  
वणयोदय सुफलिनी पार्वती प्रेम बल्ली लक्ष्मीं पुष्पात्वनु दिन मति व्यक्त प्रकृत्या  
नतानां ॥ २ ॥ विकट मुकुट माद्यत्तेजसा व्योम्नि दैत्यानिव भुवि मणिमय्या मेखलायाः  
कृणेन । अनणुरणित लीला हंसकैस्त्रासयंती फणि पति भुवनांतश्चंडिका वः श्रियेस्तु  
॥ ३ ॥ श्री मद्रुत्समहर्षि हर्ष नयनो द्रुभूतांबु पूर प्रभा पूर्वोर्वीधर मौलि मुख्य शिख-  
रालंकार सिग्मद्युतिः । पृथ्वीं त्रातु मपास्त दैत्य तिमिरः श्री चाहमानः पुरा वीरः क्षीर  
समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो भवत् ॥ ४ ॥ रत्ना बलयामिव नृपततौ सत्क्रमे विशु-  
तायां धर्मस्थान प्रकर करण प्राप्त पुण्योत्सवायां । श्री नद्रुलाधि पतिर भव  
लक्ष्मणो नाम राजा लक्ष्मीलीला सदन सदृशाकार शाकंभरींद्रः ॥ ५ ॥ आपाताला  
स्वमर जलधिं मदरो यस्य खड्गो मुष्टिव्याजाद्भुजग पतिना शृंखले नावधदुः ।  
निर्मम्योच्चैः सपदि कमलां लीलयोद्घृत्य मत्तश्चक्रे नृत्तं रणित कटकः केलि कंपच्छलेन

॥ ६ ॥ तस्माद्धि माद्रि भवनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य तनूद्वयोथ । गां-  
भीर्यधैर्यं सदनं बाल राज देवो यो मञ्जुराज बल भंगमचीकरसं ॥७॥ साम्राज्याशा क रेणुं  
रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जहूँ यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंध्य शैलाय  
माने । मुक्ता शुक्तीदु कांतोञ्जल रुचिषु लसत्कोत्तिरेवातटेषु प्रौढानेदोपचारो त्वण  
पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तत्पितृव्य जतयाथ धांधवः श्री महींदुर जनिष्ट  
भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायाथा विरहितं मुखं द्विषां ॥ ९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु  
चभुवस्तत्तनुजो श्वपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्णं चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु  
समसा नैव दोषाकरात्मा तेजो भक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ केयूराग्र  
निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाढं पर व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता ।  
वीरेषु प्रसूनेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निर्मल गुणैर्वश्या  
प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन स्वष्टा यस्य वयधित  
यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि सपनयो दंभतश्चारु खेले मध्यस्थायि  
ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजय-  
द्रुणेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं बलं वाडवानल इवांबुधे जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल  
वसुमती मंडलस्तत्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदय जिताराति मल्लो जहिल्लः । भीम  
क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्र हृद्यार्थां भोनिधि रघु कृते बहे पंक्तिः खलानां  
॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण  
व्यापार पारंगमा । पानानि प्रसभं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य  
नरेश्वरस्य तुलनां सेनांशु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्वीरुद् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दत्त्वा  
दृशं घ्यातास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि धनांतरेषु वित-  
सान्या लोक्य हाहेति वाक् स्वस्मारा सपवारणानि शतशो यद्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥  
दृष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरी यो बलाज्जग्राहानुजघान मालव पतेभोजस्य  
साढाह्वयं । दंडाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुल्यं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय य-  
शसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभुत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमस्मा-

भृच्चरण युगली मर्दुन वयाजतो यः । कुर्वन्पीढा मति बलतया मोचयामास कारागा-  
 राद् भूमी पति मपि तथा कृष्णदेशाभिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्मो ललद भ्रमं दधुरहो सैन्येस्य से-  
 वारसा यातर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पटा वासा मराल श्रियं । कंभं वायु वशेन केतु निवहाः  
 शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कीकिलारव तुलां चित्ते तु तापं द्विपः ॥ १९ ॥ श्रीमां-  
 स्तस्याजनि नर पति बांधवो जिंदुराजो यः संडेरेऽर्क इव तिमिर वैरि वृंदं शिजेद ।  
 यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-  
 मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूपणानां प्रपाते वाप्यासायै-  
 र्घनतति तुलां बिभ्रतीनामरण्ये । दूर्वां श्रान्तिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांबूलीय  
 भ्रमसिद्ध चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र सतिमान् यः कर्पुका-  
 णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद धवला न्यानंद हृद्याननः । पृथ्वी पाल इति प्रुवंक्षिति  
 पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येक्षोरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य सैन्या पहः ॥ २२ ॥  
 यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं खवंती पयः स्वच्छंदं सचराचरेपि भुवने शत्रू-  
 स्तृणी कुर्वती । धर्मं वत्समिव स्वकीय मनघं वृद्धिं नयती मुदा कस्यानंद करी बभूव न भुवो-  
 भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजकी भूपतिरस्य बंधु विवेक सौध प्रबल प्रतापः ।  
 श्वेतात पत्रेण विराजमानः शकत्याणहिललाख्य पुरेपि रेमे ॥ २४ ॥ त्यक्त्वा सौधमुदार  
 केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पत्यंका श्रयणं करेणुषु मुदां स्थानं समंतादपि । यस्या-  
 रि क्षितिपाल बाल ललनाः शैले वने निर्भरे स्थूल ग्रावशिरस्सु संस्मृति मगुः पूर्वोपभुक्त  
 श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा समजनि वसुधा नायक स्तस्य बंधुः साहाय्यं सा-  
 लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः । तुष्टो घत्ते स्म कुंभं कनक मय महो  
 यस्य गुप्यद्गुरु स्थ तं हर्तुं नैव शक्तः कलुषित हृदयः शेष भूपाल वाग्भिः ॥ २६ ॥ उदय  
 गिरि शिरः स्थं किं सहस्त्रांशु खिंबं वितत विशद कीर्त्ते मूर्धनि किंनु प्रतापः । उपरि  
 सुभग साया उद्गता मंजरी किं कनक कलश आभास्यस्य गुप्यद्गुरु स्थः ॥ २७ ॥ कनक  
 रुचि शरीरः शैलसाराभिरामः फणि पति मयनीयस्थावतारः स विष्णोः । सलिल निधि  
 सुताया मंदिरे स्कंध देशे दधद्वानि मुदारामग्निमः पुण्य मूर्तिः ॥ २८ ॥ सत्रागार

सङ्गाग-कानन-हरप्रासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्मममे द्विज जनानंदी क्षमा नण्डले ।  
 धर्मस्थान शतानि यः किल बुध श्रेणीषु कल्पद्रुमः ऋस्तेस्यंदु तुषार शील धवलं स्तोतुं  
 यशः कीविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुम्भ्रवां चंचन्मौक्तिक-  
 भूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि । प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुम्भ्राणि  
 वल्लोकसां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मीं श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति त्रियं  
 बृहद्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः ॥ भिषग्विजयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता ।  
 सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्णा ॥

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नस्त्रेषु  
 नृपसां । प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तथा तथा वा देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि  
 मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदालूहादनाहो जज्ञे भूभृदुवन विदित  
 श्चाहमानस्य वंशे । श्रीनद्दूले शिव भवन कृदुर्म सवस्व वेत्ता यत्सा हाय्यं प्रति पदं  
 महो गूज्जंरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाला गुरु स्फूर्ज  
 च्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्ब कर्त्री गिरी । सौराष्ट्रे कुटिलोग्र कण्टक भिदात्युद्गाम  
 कीर्त्तस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तथा सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज  
 इह नृपः केलहणो दक्षिणा शाधीशोदंचद्विलिम नृपते मां हत्सैन्य सिंधुः । निर्भि-  
 द्योच्चैः प्रबल कलितं य स्तुरुष्कं व्यघत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥३४॥  
 आतास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद्भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-  
 वांबु वाहो पमः । यत्खड्गां बुनिधी हतारि करिणां कुंभस्थलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो  
 सराल ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥३५ ॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं त्रिस्वाशरैरासलं  
 तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरंजित्वा रण प्रांगणे । श्री जावालिपुरे स्थितिं व्यरचयन्न-  
 द्दुल राज्येश्वर शिचेता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री



समर सिंह देवस्तत्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः । इन्द्र इव विद्युत् हृदयानन्दी पुरु-  
 षोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विरचितो येनेह पुण्यात्मना नाना यंत्र  
 मनीज्ज कोष्ठक ततिर्विद्याधरी शीर्षवान् । किं शेषः फण वृंदमेदुर तनुर्वक्ष स्थले वा भुवो  
 हारः किं अमण श्रमादुहुंगणः किं वैष भेजे स्थितिं ॥ ३८ ॥ कमल वनमिवेदं वप्रशीर्पा  
 लि दंभान्निखिल विपुल देश श्री समा कर्पणाय । लिखित विशद विंदु श्रेणिवन्मत्त  
 वैरि क्षितिपति त्रिफला जिस्तोम संख्या निमित्तं ॥ ३९ ॥ तोलयामास यः स्वर्णैरा-  
 त्मानं सोमपर्वणि । आराम रम्यं समरपुरं यः छतवानथ ॥ ४० ॥ श्रीकीर्त्ति पाल  
 भूपति पुत्री जावालि पुरवरे चक्रे । श्री रुद्रल देवी शिव मंदिर घुगलं पत्रिन्न मतिः ॥ ४१ ॥  
 श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्यं रमणीयः । श्री उदयसिंह भूपतिरभूत्प्रभा ज्ञास्व-  
 दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नद्दूल-श्री जावालि पुर-माण्डव्यपुर-वाग्भटमेरु-सूराचंद्र-  
 सटहृद-खेड-रामसेन्य श्री माल-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देशा नामय मधिपतिः  
 ॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्ररुढ रसना ज्ञारः समंतादभूत् क्षीराब्धिः परिरब्धु मुद्गधुरभुजः  
 कल्लोल माला मिषात् । द्रष्टुं चानि मिषाक्षि-पंकज वनो वास्तोः पतिर्यस्य तां  
 विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां कोर्तिं सितांशुज्ज्वलां ॥ ४४ ॥ श्री प्रह्लादनदेवी राज्ञो  
 यस्यां गजं प्रसूते स्म । श्री चाचिग देवाह्वं तथैव चामुंडराजाख्यं ॥ ४५ ॥ धीरो  
 दांतस्तुरुष्काधिपमददलतो गूर्जरेंद्रैर जेयः सेवायात क्षितीशोचित करण पटुः सिंधु  
 राजांतको यः । प्रोद्दामन्याय हेतु भ्रंरत मुख महा ग्रन्थ तत्त्वार्थ वेत्तां श्री मज्जावालि  
 संज्ञे धुरि शिव सदन द्रुं द्रु कर्त्ता कृतज्ञः ॥ ४६ ॥ तत्पहोदय शैल भानुरनघप्रोद्दाम घर्म  
 क्रिया निष्ठातः कमनीय रूप निलयो दानेश्वरः सु प्रभुः । सौम्यः शूर शिरोमणिश्च  
 सदयः साक्षादिवेद्रः स्वयं श्री मांश्चाचिग देव एव जयति प्रत्यक्ष कल्प द्रुमः ॥ ४७ ॥  
 चूर्भंगेन भयंकरेण विजित प्रत्यर्थिं भूमी पतिः श्री मांश्चाचिग देव एव तनुते निर्विघ्न  
 वृत्तिं भुवं । द्वैजिह्वयं विदधातु पद्मग पतिर्वक्रं धराहो मुखं कूर्मो नक्रततिं करींद्र  
 निवहः संघात सौस्थ्यं पशं ॥ ४८ ॥ मेरोः स्थैर्यं वचन रचनं वाक्पते यस्य तुल्यं पृथ्वी  
 भारोद्दुरणमसमं पद्मगेंद्रानुषंगि । साक्षाद्रामः किमयमथवा पूर्णं पीयूष रश्मिश्चिंता

रत्नं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेण दलनो यः शत्रु शल्यं  
 द्विषंश्चंचत्पातुक पातनैकरसिकः संगस्य रंगा पहः । उन्माद्यन्नहरा चल स्य कृलिशा  
 कार खिलोकी तल आम्यत्कीर्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोल्यणः ॥ ५० ॥ श्री माले  
 द्विज जानुवाटिक कर त्यागी तथा विग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे नित्यार्च-  
 नार्थं प्रदः । प्रोत्तुंगेप्य पराजितेश भवने सौवर्ण-कम्भध्वजारोपी रूप्यज मेखला  
 वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला सथा-  
 स्यां रथः कौलास प्रतिमखिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः । येन क्षोणि पुरंदरेण  
 कृतिना मानंद संवित्तये भाग्यं वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥  
 कर्णो दान रुचिर्बलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम अधुरा-  
 कारश्च चिन्तामणिः । श्री मन्वाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णन्ति यत्तत्कीर्त्त-  
 रपि नूतनत्व अभवद्भूमिभुजां सद्भुसु ॥ ५३ ॥ स्फूर्जन्निर्भरं भाङ्कृतेन सुभगं तत्केत-  
 कीनां वनं मिश्री भूतमनेक कञ्च कदली वृन्देन घत्तेऽत्र यः । आम्नाणां विपिनं च देव  
 ललना वक्षोरुह स्पर्द्धये बोद्यत्प्रोढ फलावली क्वचित्तं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरी  
 मेरो स्तुल्यखिदश ललना केलि सदनां सुगन्धा द्विर्नानातरु निकर सन्नाह सुभगः ।  
 नृपेणेंद्रेणैव प्रसूमर तुरङ्गोच्चय खुर प्रकं प्रोवर्धी पीठ रतिरस वशात्तेन ददुशे ॥ ५५ ॥  
 सन्मूर्दिघ्न त्रिदशेंद्र पूजित पदां भोज द्वयां देवतां चामुंडा मघटेश्च रीति विदिताम  
 भ्यर्चितां पूर्वजैः । नत्वा भ्यर्च्य नरेश्वरोथ त्रिदधेस्या मंदिरे मंडपं क्रोडत्किंनर  
 किलरी कल रवो न्माखन्मयूरी कूलं ॥ ५६ ॥ सम्बत् १३१९ त्रयोदश शतै कोन विशती  
 मासि माघवे । चक्रेऽक्षय तृतीयायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ संपल्लभाभं घटयतु  
 शुभं कुंभि वक्त्रो गणेशः सिद्धिं देयादभि मत्त तमां चांडका प्थारु मूर्तिः । कल्याणाय  
 प्रभवतु सतां धेनु वर्गाः पृथिव्यां राजा राज्यं भजतु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥  
 स श्रीकरी सप्तक वादि देवा चार्य स्ये शिष्योऽजनि रामचन्द्रः । सूरिर्विनियो जय मङ्गलो  
 ऽस्य प्रशस्तिमेतां सुकृती व्यघत्त ॥ ५९ ॥ शिष्यवर-विजय पाल-पुत्रेण नाम्बसीहेन  
 लिखिता ॥ सूत्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसरविणोत्कीर्णा ॥

## घटियाला ।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिली था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है ।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था वही यहां पर प्रकाशित किया जाता है ।

## घटियाला ।

ओं सगगापवग्गमग्गं पढमं सयलाण कारणं देवं । णीसेस दुरिअ दलणं परमं गुसं  
णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहुसिलओ पढिहारो आसी सिरिलक्खणोत्तिरामस्स । तेण पढि-  
हार वन्सो समुण्हं एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विपो सिरि हरिअन्दो भज्जा आसीति खत्तिआ  
मद्दा । अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि रज्जिलो एत्थ ॥ ३ ॥ अस्सवि णरहइ णांमो जा  
ओ सिरि णहइत्तिए अस्स । अस्सवि तणओ ताओ तस्सवि जसवहुणो जाओ ॥ ४ ॥  
अस्सवि चन्दुअ णांमा उप्पणो सिल्लुओ विए अस्स । णोढोत्ति तस्स तणओ अस्स  
वि सिरि सिल्लुओ जाइ ॥ ५ ॥ सिरि सिल्लुअस्स तणओ कक्को गुरु गुणेहि गारविओ ।  
अस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिविआंसंहसिअ महुरं  
अणिअं पलोईअंसोम्मं । णमयं जस्सण दीणां रासोथे ओधिरामेत्ती ॥ ७ ॥ णोजम्पिअं  
ण हसियंण कयं ण पलोइअं णम्सरिअं । णथिअं णपरिदन्न मिअं जेणं जणे  
कज्ज परिहीणं ॥ ८ ॥ सुत्थादुत्थादि पया अहमात्तहउत्तिमा तिसोक्खेण । जणणित्थ जेण  
धरिआ पिच्चणिय मण्डले सव्वा ॥ ९ ॥ उअरोहरा अमच्छर लोहे हिंमिणाय वज्जिअं  
अंजेणं । णक ओदो एह विसेसो ववहारे कावमणं यम्पि ॥ १० ॥ दिअवर दिएणाणुज्जं  
जेणं जणं रज्जिअणं सयलम्पिं । णिम्मच्छरेण अणिअं दुट्ठाणं विदण्ड पिट्ठवणं ॥ ११ ॥

घनरिदु समिद्धाणं वि पउराणं णिअकरस्स अढ्महिअं । लक्खं सयञ्जु सरिसं तणंच तह  
जेण दिट्ठाईं ॥ १२ ॥ णवजोव्वणरूअपसाहिणुण सिंगार गुणग कक्केण । जणवयाणउज  
अलउजं जेण जेह संचरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरु तरु णाण तह सही गय वयाण तण  
ओव्व । इय सुचरिण्णेहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणसया  
सम्माणं गुण धुई कुणं तेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण धणणिवहं ॥ १५ ॥ मरु  
माडवसल तमणी परिअंका अउजगुञ्जरित्तासु । जणिओजंण जणाणं सचचरिअ गुणेहि  
अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिउण गोहणाईं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ  
जेण विस मेवडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं दमहु अविं  
देहि । वरइच्छुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्टारह  
समग्गलेसु चेतम्मि । णक्खत्ते विहु हत्थे वहवारे धवल वीआये ॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण  
हट्टं महाजणं विप्यपय इवणि वहुलं । रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किचि विट्ठिए ॥ २० ॥  
मड्डोअरम्मे एक्को वीओ रोहिन्स कुअगामंम्मि । जेण जसस्स व पुजांए एत्थम्मा स-  
मुत्थविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठलणं । कारविअ  
अचल मिमं भवणं भत्तीए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेए' भवणं सिद्धस्स धणेसरस्स  
गच्छम्मि । तह सन्त जम्भ अम्भय वणि भाउड पमुह गोट्टीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले  
कलंक रहितं रूपं नवं योवनं । सौभाग्यं गुण भावन शुचि मनः क्षांति  
यशो नम्रता ॥ २४ ॥

### संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गापवर्गं मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं । निःशेष दुरित दलनं परम गुरुं नमस्त  
जिन नाथम् ॥ १ ॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार  
वंशः समुत्कृतिमत्र संप्राप्तः ॥ २ ॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत् इति क्षत्रिया भद्रा ।  
अस्य सुत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट नामा जातः श्री नाग  
भट इति एतस्य । अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनी जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

( २६२ )

## पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है । यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं ।

( १५६ )

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या धनी पुत्र केलहा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केलहा पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । साः जीवा श्रेयोर्थे सा० जीवा दिने १० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

( १५७ )

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे । रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या बेलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास --- वाई लाछल दे श्रेयोर्थे पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं । श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे श्री जाणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्री० का० लाछलदे श्री० ।

( १५८ )

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या बेलदे ।

( २६३ )

लाछलदे ससारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन श्री रामदास शहंस कर्ण पीडरवा  
ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्रेयोर्थे श्री तपा गच्छे श्री  
हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सू० शुभं भवतु  
कल्याणमस्तु ॥

( १५१ )

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण सालजी  
विजय राज्ये प्राग वंशे सा थाथा भार्या गांगादे पुत्र सा - सा भार्या कसमीरदे पुत्री  
रानी पीडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं धार्डे गांगादे श्रेयोर्थे श्री  
तपा गच्छ श्री कमल कलस सूरि सुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

( १५० )

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे भागुण वदि ११ शुक्रे श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उदइ  
सिंध जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाल  
भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण श्री सहस्र करण - - - पीडर वाडा ग्रामे श्री  
माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे आणद  
विमल सूरि - - - -

( १५१ )

आंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्रागवाट वंशे व्यवहारि सागा सूनुः प्रसूनोज्वल कांत  
कारिः । श्री पुण्य पुणा जनि पूर्ण सिंह स्वस्य प्रिया जालहण देवि नाम्नी ॥ १ ॥ मदुर  
मद्गारत रोरु - - - - कलापः किल कुर पालः । जाया धर्म मोदिकन्दो प्रमुक्ता तस्या  
मप्रस्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ सदयी २ वामामृतैः सुहितौ लोक हितौ सतां मतिः ।

सनयी विनयी द्विती चणौ विजयते सनयी तयोरिमौ ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्नं  
 रत्नाभिघो घनं । घनाणह्य जन मूढ - राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय शुद्धिती-  
 पेंदु कांति कांच गुणोद्भवः । धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी  
 धारल देव्यी जात्यौ तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यौ  
 ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५-तेजा वासल वास जालहणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिसा गुण  
 तरु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार  
 शेखरः । पुरा भूमहुणा नामा व्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला भिधः सूनु स्त-  
 त्पुत्रो भावठोऽशठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सूवित्तः ।  
 लीवाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सू  
 देवी विख्यात संज्ञिक सस्या दयिते ढययो पेतै शीलद्युधम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा  
 देवी सनुजो मनुजो चित आरु लक्ष्मणो पेतः । अमरो अमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि  
 पद कमले ॥ १२ ॥ श्रीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे घरा धीशे  
 प्राज्य राज्य - रीक - ॥ १३ ॥ आस्यामुष्माभ्यां धनि पूर पाल लीवाभिधाभ्यां सद्गु-  
 पासकाभ्यां । ग्रामेऽग्रिमे पीडर वाढकाख्ये प्रसाद् - - - विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥  
 विक्रमाद्वाण सक्काब्धि भूमिते वरसरे तथा । फालगुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तियौ  
 ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्धय भ्युदयैक दायकः, श्री वर्द्धमान श्वरमो जिनेश्वरः । श्री भक्तपः  
 संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आरवींदु समयादनया श्री  
 वर्द्धमान जिन नायक मूर्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंवर चैत्यं  
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

राज श्री अमर सिंह जी लषावता देहनारा देहथी आरोहतो - कसनइ काथीछइ ।  
 आजक - धान देरा माहि घोलसइ तिनइ गधइ ड - गाल छइ संवतु १७२३ वर्षे  
 मगसिर सुदि - ॥

( ९६५ )

## वीरवाडा ( सिरौही )

महावीर स्वामी का मंदिर ।

( 953 )

सं० १४१० वर्षे श्री० महंणा भा० कपूर दे० पु० जगमालेन भा० सुतलदे पु० कडूया देल्हा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कछोलीवाल गच्छे भ० श्री नरचंद्र सूरि पहे श्री रत्नप्रभ सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगलं ॥ प्राग्वाट ज्ञातीयः ॥

## बसंत गढ़ ( सिरौही )

( किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर ।

( असन के दोनो तरफ पीठ पर )

( 954 )

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये बसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट ह्य० ऋगडा भा० मेघादे पुत्र ह्य० सडनेन भा० माणिक दे पुत्र कान्हा पौत्र जोषादि युतेन प्राग्वाट ह्य० घणसी भा० लीवी पुत्र ह्य० भादाकेन भा० आल्हू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पहार्लकरण श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पहे प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेषर सूरि गुरुभिः ।

## पालडी ( सिरौही )

( 955 )

सं० १२४६ वर्षे माघ सुदि १० गुरी अर्घेह श्री नदूले महाराजाधिराज श्री केलहण देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री जयत सीह देवो विजयी ज -- तत्पादपद्मोपजीविन महा



( २६६ )

श्रीस्मय आलहण प्रभृति पञ्च कुलेन महं सुम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर  
प्रदत्त द्र० १ पाहृहाली मध्यात् । बहुभिर्वसुधा मुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य  
यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

## कालाजर ( नवाना के निकट )

( 956 )

सं० १३०० वर्षे जेठ सुदि १० सोमे अद्येह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आलहण  
सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रार्या महं श्री बेता प्रभृति पञ्च कुलं शासन  
मभि लिख्यते यथा महं श्री बेताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - श्री पार्श्व  
नाथ देवस्थ लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य  
तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० ब्रा अलिणव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे  
सणा - - - - - कलहा ।

## कामद्रा ( सिरौही )

( 957 )

ओं । श्री मिलमालं निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्गो लं  
( क्लृप्तो ) - राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां वंधु पद्म दिवाकरः उजुजकस्तस्य पुत्र  
स्थात् नम्मराम्मे ततो परी ॥ जज्जुं सुत गुणाद्ये धामनेन भसाङ्गयम् । दृष्ट्वा चक्रे गृहं  
जेन मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्यत् १०९१ - - - - सपुने - ।

## उथमा ( सिरौही )

( 959 )

संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरी श्री नाणकीय गच्छे उथण सदधिष्ठाने । श्रीपार्श्व-  
नाथ चैत्ये ॥ घनेश्वर पुत्रेण देव घरेण धीमता । सयुक्तेन यशोभद्र आलहा पालहा

( २६७ )

सहोदरैः । यसो भद्रस्य पुत्रेण । साह्यं यरो धरेण भा पुत्र पीत्रादि युक्तेन घर्म हेतु मह  
मंता ॥ भगनी धारमर्याख्या । भूतश्चैत्र यशो भद्रः । कारितं श्रेयसे ताम्यां । रम्येदस्तुंग  
महप ॥ छ ॥

## वर्षाणा ( सिरौही )

( १५९ )

संवत् १३५६ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वाघ सीण ग्रामे महा-  
राजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काजे वर्माने सोलं० पापट पु० रज-  
रसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोलं० सी माल पु० कुंताधारा सो० माला पु०  
मोहण त्रिभुवण पहा सोहरपाल सो० घूमण पर्ट पायत् वणिग् सीहा सर्व सोलंकी समु-  
दायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढींवडा प्रति गोधूम  
सेई २ तथा घूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति  
गोधूम सेई ४ ढींवडा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महो-  
त्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दासव्यं पालनीयं च । आचंद्रार्कं ॥  
यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य सदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

## लाज-नीतोड़ा ( सिरौही )

( १६० )

संवत् १२ वर्षे ११ माह सु० ६ श्रे० जितू आसल प्रति पतैमधिक कुअर सीह  
पतिना । पाऊ त्नु ।

( १६१ )

मन्दिर घर लषम सिंचेन करावी ।

( २६८ )

## नोदिया ( सिरौही )

( १६२ )

संवत् ११३० वैशाख सुदि १३ नन्दियक चैत्य साले वापी निम्मापिता सिव गणैः ।

( १६३ )

ॐ ॥ सतिणि सील वंता च । सद्भाव भक्ति संयुता ॥  
जिन गृहे सेल स्तंभा द्वी । मंडप मूले यापिताः ॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर ।

( १६४ )

ओं ॥ संवत् १२०१ भाद्रवा सुदि १० खोम दिने निवा भार्या वरा पुत्र मोतिणिया  
स्तंभ का० २

( १६५ )

श्री विजयते ॥ संवत् १२६८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुस रा० कमण  
श्रेयोर्थे पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः ॥ श्री - - - - सुरि श्री - - ।

## कोटरा ( सिरौही )

( १६९ )

॥ पूर्वं डीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय  
श्री विजय सिंह सुरिभिः प्रतिष्ठितः परचात वीर पत्न्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे  
पिप्पालचार्य श्री वीर प्रभ सुरिभिः स्थापितः । संवत् १२६५ वर्षे ।

( १६६ )

## वरमांण ( सिरौही )

( 967 )

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० साजण भा० रालू पु० पून  
सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन भा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन  
युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

( 968 )

सं० संवत् १४४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्मणीय गच्छे भहारिक श्री मदन प्रा  
सूरि पहे श्री नंदिश्वर सूरि पहे श्री विजय सेन सूरि पहे श्री रत्नाकर सूरि पहे श्री  
हेम तिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

## लोटाना ( सिरौही )

( 969 )

संवत् १३७८ वर्षे उदे सीह सुत पदम सीह ।

## माकरोरा [ सिरौही ]

( 970 )

श्री सुविधि जिन प्रासादात् माक्रोड़ा मध्ये । संवत् १७६० वर्षे कमल कलसा गच्छे  
भहारिक श्री मत् रत्नसूरि प० कमल विजय गणि वेठाणा ७ संघाति चीमासु रह्या । महुता

( १७० )

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-  
न्नाथसा० लषमा सा० राजा लाधा संपा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा  
भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जमी  
समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ॥

घवली [ सिरौही ]

( १७१ )

॥ सं० । १८६१ वैशाख शुक्ल ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन  
प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुधचंद मोती सा । लुंवा उमा सा । सलका वाला प्रमुख  
कारापितम् तस्यो परी ध्वज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश महा० । श्री  
वजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० हुंगर विजय वां० । नथु प्रमुख,  
इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [ सिरौही ]

( १७२ )

संवत् १६६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुशल कातिक चौमासु  
कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जरिवाल पार्श्वनाथ [ सिरौही ]

( १७३ )

संवत् १७८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरी श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुङ्ग सूरिणां  
पदोद्धारण श्री जय कीर्ति सूरिश्वर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

( २७१ )

ढीया सा० संग्राम सुत सा० सलषण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा०  
ढीढा सा० षीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० ढीढा सुत सा० नांग राज सा०  
काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर  
सिंह भार्या कडनिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पारश्वनाथ  
स्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्द्धमान भद्रं मांगलिकं भूयात् ॥

( १७४ ) अक्टोबर् = ७१ १९५१

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री  
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री  
भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे कोठारी बाहउ सामस सं नाने को नरपति  
भा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री  
जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पारश्वनाथ प्रसादात् ॥  
ओं कटारिया गोत्र वरं महीयं नात्तु पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर गुरुगुरव  
भदेयाः श्री छालज संहन मात्र शालं ॥ १ ॥

( १७५ )

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे भाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री  
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन  
सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० घणसी संताने सा०  
जयता भा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोषसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका  
कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपारश्वनाथ प्रसादात् ।

( १७६ )

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री  
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

( १७२ )

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलधर्मा नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलुसी संताने सं० रतन  
भार्या वा० वीरु सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु  
श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज ।

( १७७ )

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे भटा० श्री रत्नाकर सूरि-  
णामनुक्रमेण श्री अन्नयसिंह सूरिणा पट्टे श्री जय तिलक सूरिश्वर पट्टावतंस भटा० श्री  
रत्न सिंह सूरिणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्त्रय मंडन श्री० पेत सीह  
नंदन श्री० देवल सीह पुत्र श्री० षोषा तस्य भार्या सं० प्रणल देव्ये तयोः सुता सं० सादा  
सं० दादा सं० मूदा सं० दूधाभिधै रेतैः कारि ।

( १७८ )

स्वस्ति संवत् १५०८ वर्षे आषाढ सुदि १२ शने सू० काला सुहृदा नरसी भीमा  
मांडण सांडा गोपा मेरा भोकल पांचा सूरानित्य प्रणम्य अष्टांग सकुटुंब ।

( १७९ )

ओं ॥ सं० १८५१ वर्षे आषाढ सुदि १५ दिने श्री जीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार  
कारापितः सकल महारक पुरंदर महारक जी श्री श्री श्री श्री १०८ - श्वर राज्येन  
जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया बरचीवी नाल लीघो श्री जीरावल वास्तव्य  
मु० । अजा । को । दला । सा० कला । सा० रसा । सा० सचा । सा० ज्येन सा०  
अणला । सा० वारम । सा० रामल । - - - यकी काम कारापितः । जोसी दुरगा ।  
भात राजा जात्रा सफलः ॥

( २७३ )

## श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

( १९० )

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्तिक वदि ५ वुधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वैराग्य  
सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमस्कृतैर्महाराजाधिराज पानि शाहि श्री अक्रवरा-  
भिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेश बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश कर्णेन पूर्वकं पुस्तक  
कोश समर्पणं डावराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्षे पढमासिकामारि  
प्रवर्तनं सर्वदा श्री शत्रुज तीर्थ मुंडकाभिधान कर निवर्तनं जीजियाभिधान करकर्तनं  
निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनंसदैव वंदय रूप निवारणं त्रितयादि धर्म कृतानि  
प्रवर्तं तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद शुक्लैकादशी दिनेजात  
निवाणां शरीर संस्कार स्नानासन्न फलित सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्वराणां  
प्रति दिनं दिव्य नादनाद श्रवण दीप दर्शनादिकै जीय प्रभावाः स्तूप सहिताः पादुकाः  
कारिताः पं० मेधेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजेः  
महारक श्री विजयसेन सूरिभिः ॐ श्री विमल हर्ष गणि ॐ श्री कल्याण विजयगणि ॐ  
श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पुज्यमानाश्विनं नन्दतु ॥ लिखता प्रशक्तिः  
पद्माणंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं भवतु ॥

## श्री कापडा पार्श्वनाथ ।

( १९१ ) शिरोटी २७३

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथी सोमवारे स्वाती महाराजाधिराज महाराजश्री  
गजसिंह विजय राज्ये ऊकेशो रायलारवण संताने प्रांडागारिक गोत्रे अमरा पुत्र भांना केन  
भार्या भगतादेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोठडा पौत्र तारा चंद खंगार-नेमि दासादि



( २७६ - ) ✓

( 992 )

सं० १५१९ वर्षे अषाढ वदि ९ शनी भरतपुर ज्ञा० डीचोडीया - - - सा जगसी सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु० नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः ।

( 993 ) ३१ म० २७६

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश जासीय नाहर गोत्रे पेशा पु० रुह्या भार्या रजलदे खुकांवर अमरा - - - श्री शांतिनाथ विंबं कारित प्र० श्री घर्मघोष गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः ।

( 994 ) ✓

३१ म० २७६

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल पु० सुर जल सीहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थे आत्म श्रेयसे श्री वास पूज्य विंबं करापितं प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

( 995 )

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल ज्ञातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रूनु सुत हेमा हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थे श्री अजितनाथ विंबं का० प्र० श्री महूकर गच्छे श्री घन प्रभ सूरिभिः । मेलिपुर नगरे ।

( 996 ) ३१ म० २७६

सं० १५२८ वर्षे अषाढ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखत्राल गोत्रे सा० मेढा पुत्र सा० हेफकिन आतृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( २७७ )

( ११७ )

संवत् १५५८ वर्षे -- सु० ११ गुरी उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र साण तथ सुत साधू-  
इहेन महाराज महिय -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

( ११८ ) अलवर २७

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढा गोत्रे तउधरी लाधा प्रार्या  
भैल्लणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयर्थं श्री अज्जल गच्छे श्री भाव सागर  
सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंवं का० प्र० श्री र --

( ११९ )

सं० १६६१ वै० सु० ज० प्र० सचटी - - - ।

( १००० )

सं० १८३१ माघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथी १२ बुधे श्री ऋषभ जिन विंवं कारित अलवर  
नगर वास्तव्य श्री संवेग मलधार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौम महारक श्री जिन  
चंद सागर सूरि पहालंकार सोभित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं  
मधुवन मध्ये ।

पटना स्युद्धयम ।

( ५२५ )

संवत् १८७४ शके १७३६ प्रवर्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथी सोमदिने  
श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं महारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

( २७६ )

( 634 )

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पाद न्यासः । प्रतिष्ठितः  
खरहर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद्र भार्या पास कुमारजी ॥

## उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह “जैन लेख संग्रह” एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रर्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनों से निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान है, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञानि, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनों ने “संग्रहमें” मदद दी है उन सभीका मैं कृतज्ञ हूँ । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता

ई० सं० १९१८

संग्रह कर्त्ता

# श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची ।

| ज्ञाति-गोत्र   | लेखांक                        |
|----------------|-------------------------------|
| <b>ओसवाल</b> — | ११, १८, २४, ३५, ४६, ५१, ६४,   |
|                | ७६, ८५, १०५, १०६, ११५, १२३,   |
|                | १३३, २१२, २२६, २३८, २४२, २६३, |
|                | २६६, २७७, २७६, २८७, ३८६, ४०१, |
|                | ४०३, ४०६, ४११, ४१६, ४२०, ४३१, |
|                | ४४५, ४५०, ४६०, ४६४, ४७५, ५६०, |
|                | ५७७, ५७८, ५८८, ५६२, ५६७, ५६८, |
|                | ६०४, ६३५, ६६२, ६६५, ६६८, ६६९, |
|                | ७०५, ७०७, ७०६, ७११, ७३१, ७३६, |
|                | ७६५, ७६६, ८०४, ८१८, ८२१, ८२७, |
|                | ८७५, ८७६, ८८६                 |

## ओसवाल [ लघुशाखा ]

### गोत्र

|           |     |     |          |
|-----------|-----|-----|----------|
| भाषी मोती | ... | ... | ६५२      |
| भागड़ा    | ... | ... | ६५४, ६५५ |

## ओसवाल [ वृद्धशाखा ]

|                         |
|-------------------------|
| ५६, ७१, ११३, ११४, १३०,  |
| ५२६, ६१३, ६५६, ६६६, ६७० |

## ओसवाल [ गोत्र ]

|                      |     |                   |
|----------------------|-----|-------------------|
| मादित्यनाग           | ... | ५०, ४७१, ६२५, ७२६ |
| “ [ चोरवेडीया शाखा ] | ... | ४६७               |

| ज्ञाति-गोत्र | लेखांक |
|--------------|--------|
| आयचनाग       | ...    |
| आईचना        | ...    |
| आइंचणी       | ...    |
| आभू स०       | ...    |
| उचितवाल      | ...    |
| फटारिया      | ...    |
| फठउठ         | ...    |
| फंठउतिया     | ...    |
| फठारा        | ...    |
| काकरेचा      | ...    |
| काकरिया      | ...    |
| कातेल        | ...    |
| कावेडीया     | ...    |
| कुहाड        | ...    |
| कुर्कट       | ...    |
| कोठारी       | ...    |
| कोष्ठागार    | ...    |
| खडबड         | ...    |
| गणधर         | ...    |
| गहलडा        | ...    |
| गहिलडा       | ...    |
| गेहलडा       | ...    |
| गाहडिया      | ...    |

~~७६, ५६६~~  
~~५४४, ६६३~~  
~~५६६~~  
~~१३७~~  
 १४, ६३७, ६७४  
~~५६२~~  
 ४२६  
~~१६०~~  
 ७०, ८२४  
 ६७, ६६, २७५, ८८८  
 ६७  
 ७१६  
 २७३, ८२९  
 ६१०  
 १३४, ६७४  
 ६४५  
~~६५१~~  
 ६२१  
 २६०  
 ५८०  
 ५७५  
 ७८२, ६२८

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

|                |     |  |
|----------------|-----|--|
| गांधि          | ... | ५६-६२, ७५, २०८, २४०, २४६-२५५, २५६, ४२५, ६४८, ७५२ |
| गुगलिया        | ... | ५४६, ७५७, ८२०                                    |
| गोखरू          | ... | ८६, ६३, ४८५                                      |
| गोलेच्छा       | ... | १४२, ३४०   |
| असकरिया        | ... | <del>६८</del>                                    |
| चंडलीया        | ... | <del>५९६</del>                                   |
| अरवडिया        | ... | ४४९  |
| चोरवेडिया      | ... | ५५८  |
| चोरडीया        | ... | १८२, ३०१, ५८१                                    |
| अदालिया,       | ... | <del>६२२</del>                                   |
| चोपडा          | ... | ५०६  |
| चोपडा ( गणभर ) | ... | ७७१, ७८५, ७८७                                    |
| अजलानि         | ... | ३१, ४२१, ४३६                                     |
| अन्नवाल        | ... | <del>६७</del>                                    |
| आजहड           | ... | ५३३, ७१२   |
| आव             | ... | <del>३८२</del>                                   |
| अडिया          | ... | <del>३३०, ५००</del>                              |
| आरवडिया        | ... | <del>३३</del>                                    |
| अम्मड          | ... | २२५  |
| जांगडा         | ... | ४८०  |
| आरवडा          | ... | <del>६२३</del>                                   |
| आणेचा          | ... | <del>४</del>                                     |
| एव             | ... | ४६८, ६७८, ७५८                                    |
| डागा           | ... | १२१  |
| डागलिक         | ... | ४१७  |
| ढींक           | ... | ४७   |
| तातहड          | ... | <del>१२८, ४१०, ५३१</del>                         |

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

|          |     |  |  |
|----------|-----|--|--|
| तिलहरा   | ... | ...  | ६२५  |
| तीवट     | ... | ...  | ५५०  |
| दणवट     | ... | ...  | <del>७७६</del>                             |
| दूगड     | ... | ३६, ४४, ५७, ६८, ८५, १४६, १४८, १५०-१६४, १६५, १६६-१६९, १७४, १७७, १७६, १८४, २७४, ३०४, ३०६, ३३६, ३४१, ३५२, ४३४, ४७७, ७३४ |  |
| बुधेडिया | ... | ...  | २२, ६६२                                    |
| दोसी     | ... | ...  | <u>६१७</u> २२०                             |
| धनेरिया  | ... | ...  | ५३९  |
| धाडेवा   | ... | ...  | <del>१५३</del>                             |
| धीर      | ... | ...  | ३०३  |
| धुल      | ... | ...  | <u>७५९</u>                                 |
| नवलखा    | ... | ...  | ९६४, ३४३                                   |
| नाहटा    | ... | ...  | <del>४७३, ४६६</del>                        |
| नाहर     | ... | ...  | <del>५, ४६६, ४६३, ६१५, ६५८, ६६६, ६६३</del> |
| पमार     | ... | ...  | ५००  |
| पामेचा   | ... | ...  | <del>६९६</del>                             |
| पावेचा   | ... | ...  | <del>६९६</del>                             |
| पालडेचा  | ... | ...  | <del>४६७</del>                             |
| पीपाडा   | ... | ...  | <u>२६४, २६५</u>                            |
| पीहरेचा  | ... | ...  | <u>६७२, ६७६</u>                            |
| पोसालेवा | ... | ...  | ६३   |
| बच्छस    | ... | ...  | ५७३  |
| बरडा     | ... | ...  | <del>१२६</del>                             |
| बर्दन    | ... | ...  | <del>६७१</del>                             |
| बरहुडिया | ... | ...  | ६३   |

| ज्ञाति-गोत्र | लिंग | उत्तरांक                                       |
|--------------|------|--|
| बहुरा        | ...  | १०१, ४४८                                       |
| बुहरा        | ...  | ५५६  |
| बाप(क)णा     | ...  | ३८६, ७३८, ७७४, ६२०                             |
| बावेला       | ...  | <del>४२६</del>                                 |
| बांठीया      | ...  | ११८  |
| बांम         | ...  | ५३   |
| बैलाच        | ...  | <del>५६४</del>                                 |
| भणशाली       | ...  | <del>५६२</del>                                 |
| भं०          | ...  | <del>६६१</del>                                 |
| भांडागारिक   | ...  | <del>६६१</del>                                 |
| भंडारी       | ...  | <del>१३, १३०, ५६३, ५६६, ६११,</del><br>३५१, ८५३ |
| भूरि         | ...  | ५०८  |
| भोर          | ...  | १०८  |
| भोडा         | ...  | ४६१  |
| भोगर         | ...  | ८१६  |
| भंडीरा       | ...  | ७०६  |
| भंडीवरा      | ...  | ६०२  |
| मिठडीया      | ...  | ६५६, ६७३                                       |
| मु(म)हणीत्र  | ...  | <del>६७६, ६७६,</del><br><del>६७६, ६७६</del>    |
| भूभाला       | ...  | १७५  |
| भालू         | ...  | १६६, ३०५                                       |
| रायजडारी     | ...  | ८५२  |
| रांका        | ...  | ६६७  |
| रिंगा        | ...  | १३   |
| रूपीया       | ...  | ८, ५६६   |
| रूसड         | ...  | ५५२  |

| ज्ञाति-गोत्र       | लिंग | उत्तरांक  |
|--------------------|------|---|
| लोढ़ा              | ...  | १२२, २१३, २१४, ३०७-३११  |
|                    | ...  | ३२६, ४३३, ४४३, ४७८, ६०७   |
|                    | ...  | ७७३, ७८०, ६२६, ६१०, ६८८   |
| बलद                | ...  | २३  |
| बलहि ( रांफाशाखा ) | ...  | <del>३६</del>   |
| बाहडा              | ...  | ८३०   |
| बहुरा              | ...  | ७३२, ७३३, ५३५, ७६७  |
| बारडेबा            | ...  | ३७  |
| बालट्य             | ...  | ६६४   |
| चिदाणा             | ...  | ६२६   |
| वीराणी             | ...  | ३००, ३१३-३१५, ३३४, ३४८, ३५७,<br>३५३, ३५६, ३६१, ३६६, ३६५, ३६७,<br>३७१, ३७६, ३७५, ३७७, ३७९, ३८१ |
| वेळहस              | ...  | ८८६   |
| वेय,               | ...  | ८६०   |
| वेदमहता            | ...  | ५४२   |
| वोहराफाग           | ...  | ८५५   |
| सर्चीती            | ...  | २४३, २६७  |
| सुचेत              | ...  | ७६१   |
| सुचिंतिब           | ...  | ३०  |
| समदडिया            | ...  | ७८४   |
| संखवाल             | ...  | ४१, ६६६   |
| सुर                | ...  | ३१८   |
| सुराणा             | ...  | २६, ४८, ४१०, ५६५, ७८३   |
| सेठीया             | ...  | ४२, १६४   |
| सेठ ( श्रीहि )     | ...  | २०, २६, २३३, २६८, ४८८   |
| सिंघाडीया          | ...  | १५४   |
| सोभिक              | ...  | ४७६   |
| सोनि               | ...  | ७६०   |

| ज्ञाति-गोत्र                            | लेखांक |
|---|--------|
| श्रीमाल— ३, ६, ९, २४, ५५, ६६, १००, १०४, |        |
| १११, ११६, ११७, १२५, १२७, १३२,           |        |
| १८०, २५७, ३८३, ४०७, ४२२, ४२३,           |        |
| ४२७, ४३०, ४३७, ४५२, ४५४, ४७६,           |        |
| ४८१, ४९४, ४८८, ५०६, ५१०, ५१६,           |        |
| ५३२, ५३६, ५५४, ५६१, ५७२, ५७४,           |        |
| ६०६, ६०८, ६१४, ६३०, ६५३, ६७३,           |        |
| ६७४, ६८२, ६९०, ६९१, ६९३, ६९७,           |        |
| ७४०, ७४१, ७४५, ७५३, ७६८, ७६९,           |        |
| ८२५, ८२७, ८६६, ९००, ९६५                 |        |

श्रीमाल ( लघुशाखा ) ... २५, ६२९

श्रीमाल ( बृहद्शाखा ) ... २६५, ६८५

### श्रीमाल ( गोत्र )

|           |     |          |
|-----------|-----|----------|
| गोबलिबा   | ... | ४१२      |
| वेवरिया   | ... | २८४, ४१३ |
| वंडालेखा  | ... | ८३०      |
| जम्बहरा   | ... | ३६४      |
| जरगड      | ... | १६३      |
| टांक      | ... | १२       |
| ढुडडा     | ... | ३८       |
| डोर       | ... | ४३       |
| दोली      | ... | ३६१, ७६१ |
| घामी      | ... | ६७५      |
| धीधीद     | ... | ५२८      |
| नल्लुरिया | ... | ६२४      |
| पाताणी    | ... | ७५०      |
| पापड      | ... | ७७०      |

| ज्ञाति-गोत्र | लेखांक             |
|--------------|--------------------|
| फोफलीया      | ७३७, ८२३           |
| वदलीया       | २००, २३१, ३२१      |
| थहरा         | ५२१                |
| भांछावत      | ५७७                |
| भांडिया      | ४२, २८९, ७६३       |
| मडवीया       | ४१४                |
| महता         | २१८, २६०           |
| महरोल        | ६६                 |
| माथलपूरा     | ११०                |
| मीठिप्पा     | १८७                |
| बहकटा        | ४६३                |
| साहू         | ७८                 |
| सिंबूड       | ४४७, ५८३, ५२४      |
| श्री श्री    | ११९, २६२, ६६४, ६६६ |

१, १, पल्लयड ( गोत्र ) ... ५५६

| प्रागवाट ( पोरवाट )           | लेखांक |
|-------------------------------|--------|
| २, १५, ४०, ५२, ५४, ५८,        |        |
| ७०, ७२, ९०, ९१, ९४, १०६, १५२, |        |
| १५७, २८०, २८३, ३६२, ३६३, ३८५, |        |
| ३८८, ३९६, ४०५, ४२४, ४४४, ४४६, |        |
| ४५६, ४६३, ४६६, ४८३, ४८४, ४९६, |        |
| ५०४, ५११, ५३५, ५३७, ५३८, ५४५, |        |
| ५४६, ५५३, ५५७, ५६३, ५८५, ५९५, |        |
| ६४७, ६४९, ६५०, ६६०, ६६१, ६६७, |        |
| ६८५, ६८६, ६८८, ७००, ७०४, ७१३, |        |
| ७१६, ७४२, ७५५, ७६२, ७७५, ७७७, |        |
| ७७६, ८३६, ८३९, ८४६, ८५६, ८५९, |        |
| ८५३, ८५४, ८५७, ८६७, ८७१, ८७४, |        |

| ज्ञाति-गोत्र            | लेखांक        | ज्ञाति-गोत्र           | लेखांक   |
|-------------------------|---------------|------------------------|--|
| प्राग्वाट ( वृद्धशाखा ) | १५५, ८५४      | नना                    | ५८६  |
| [ गोत्र ]               |               | नागर                   | ६०९  |
| कोठारी                  | ६४७, ६४८, ६५० | नारसिंह                |  |
| सूलर                    | ४२८           | [ गोत्र ]              |  |
| दोसी                    | ६५१, ६७७      | चोरखेच                 | ७७८  |
| भंडारी                  | ६२१           | नीमा                   | ६६   |
| मुठलिया                 | ७३            | पल्लीवाल               | ६५७  |
| लीवा                    | १२६           | पापडीवाल               | ७६, ३२३, ३२४                                   |
| अग्रवाल [ अग्रोतक ]     |               | मंत्रिदलीय ( महतियाण ) | ४८, २३६, ४८२                                   |
| [ गोत्र ]               |               | [ गोत्र ]              |  |
| गांगलु                  | ३२६           | उसियड                  | १८६  |
| गोयल                    | ४५३           | काणा                   | १०३, १६१, १६२, २१५,<br>२१७, २७०, २८१, ४१८, ४१६ |
| पिपल                    | १४५           | काद्रडा                | १६२  |
| वासिल                   | ३२७           | घेवरिया                | २८४  |
| अत्ताल                  |               | चोपडा                  | १७६, १६०, १८८, २४५, २७१                        |
| [ गोत्र ]               |               | चोपडा ( मंडन )         | १६१  |
| गोपल                    | २७            | चोपडा ( शृङ्गार )      | १८२  |
| कुर                     | ३२५           | जीजीभाण                | १६२  |
| खंडेलवाल                | ४५१           | जाटड                   | २३६, २५६                                       |
| [ गोत्र ]               |               | दान्हडा                | १६   |
| गोधा                    | ४६५           | डुल्लह                 | १६   |
| संडिलवाल                | ३८८           | नान्हडा                | १८२  |
| जेसवाल                  | ३२८, ४७२      | बालिडिवा               | १६७  |
| [ गोत्र ]               |               | भांडिया                | २८६  |
| कष्टहार                 | २२१           | महता                   | २६०  |
| धर्कट                   | ८६२, ८६७, २६६ |                        |  |



| ज्ञाति-गोत्र   | लेखांक                      | ज्ञाति-गोत्र                            | लेखांक        |
|----------------|-----------------------------|---|---------------|
| मुंडतोड        | १७१, १७२                    | परज                                     | ८८९           |
| रोहदिया        | १६०                         | गोत्र ( ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है ) |               |
| वायडा          | २१६                         | उजावल                                   | ८८०           |
| वार्तिदीपा     | १६                          | वसभ                                     | ५४३, ७६७, ८६३ |
| सयला           | १६२                         | भोग्र                                   | ५५५           |
| माल्हण         | ८५                          | काटुड                                   | ७१५           |
| मोट            | ५४०, ८८६                    | गोठी                                    | ५६७           |
| <b>राजपूत</b>  |                             | घोरवडांशु                               | ८०५           |
| चाहमान         | ६४४                         | जलहर                                    | ५७८           |
| बौलुन          | ६४२                         | डोसी                                    | ६२०           |
| प्रतिहार       | ६४५                         | दूताड                                   | ६८१           |
| राठउड          | ७४३                         | घांध                                    | ५८४           |
| सोलंकी         | ६५६                         | फसला                                    | ५६८           |
| <b>लघुशाखा</b> | २६१                         | मिधूज                                   | १६२           |
| <b>बघेरवाल</b> | २२८                         | मुहता                                   | ६४३           |
| [ गोत्र ]      |                             | राउणा वरही                              | ५८६           |
| राय भंडारी     | ४३८                         | रहुराली (!)                             | ५४७           |
| शंखवाल         | ७२७                         | वणागीआ                                  | ५७६           |
| शानापति        | ६२८                         | वपुराणा तुडिला                          | १०२           |
| बंदरेक         | ८४२                         | वाल्लिडिवा                              | १९७           |
| सीढ            | ७६८                         | श्रवाणा                                 | ५८६           |
| <b>हुबड</b>    | ३४, ५०७, ५५१, ५७१, ६६६, ६८६ | पटवड                                    | ७६४           |
| [ गोत्र ]      |                             | बांटरा                                  | ६१६           |
| गंगा           | ५०२                         | संखवालेआ                                | ७६६           |
| मंत्रीश्वर     | १६                          |   |               |
| रजीमाण         | ६५                          |   |               |

## आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।

| संवत् | नाम                | लेखांक      | संवत् | नाम                 | लेखांक |
|-------|--------------------|-------------|-------|---------------------|--------|
|       | <b>अंचल गच्छ ।</b> |             | १४४६  | श्री स्त्रि         | ६३     |
| १४४७  | मेरुतुंग सू०       | ६२८         | १४४६  | कुंथकेसरि सू०       | २८५    |
| १४४६  | "                  | २           | १५५६  | भाववर्धन गणि        | ७६२    |
| १४८१  | जयकीर्त्ति सू०     | ४११         |       | <b>आगम गच्छ ।</b>   |        |
| १४८३  | "                  | ६७३         | १४३८  | जयतिलक सू०          | ७६५    |
| १५०३  | जयकेसरि सू०        | ४१६         | १५०६  | हेमरत्न सू०         | ३६१    |
| १५०७  | "                  | ६७३         | १५१२  | "                   | ७४१    |
| १५०६  | "                  | ५७८         | १५०७  | शीलरत्न सू०         | ४७६    |
| १५२२  | "                  | १३३         | १५१०  | जिनरत्न सू०         | १००    |
| १५२३  | "                  | ४६          | १५१५  | पादप्रम सू०         | ६६०    |
| १५३०  | "                  | ६६४         | १५१७  | देवरत्न सू०         | ५५७    |
| १५३१  | "                  | ६६५         | १५४५  | सोमरत्न सू०         | ४२३    |
| १५३१  | "                  | १०८         | १५७५  | आनंदरत्न सू०        | १११    |
| १५३६  | "                  | ६६६         |       | <b>उपकेश गच्छ ।</b> |        |
| १५५१  | सिद्धान्तसागर सू०  | ११९         | १२५६  | कक सू०              | ७६१    |
| १५६१  | भावसागर सू०        | ६६८         | १३४३  | देवगुप्त सू०        | ६२१    |
| १५६५  | "                  | ५६८         | १४०५  | कक सू०              | ४००    |
| १५७४  | "                  | ५००         | १४४५  | सिद्ध सू०           | ४६०    |
| १५७६  | "                  | २६२         | १४७१  | देवगुप्त सू०        | ७७४    |
| १६७१  | कल्याणसागर सू०     | ३०७-३१२।४३३ | १४८०  | सिद्ध सू०           | ७७     |
| १८५६  | धर्ममूर्त्ति सू०   | ७४३         | १४८५  | "                   | ३८९    |
| १९२१  | रत्नसागर सू०       | ६५२।६५४।६५५ | १४८८  | "                   | ५५०    |
| १४४७  | श्री स्त्रि        | ६२८         | १४६५  | "                   | ५३१    |

| संवत् | नाम                    | लिखांक  | संवत् | नाम                       | लिखांक |
|-------|------------------------|---------|-------|---------------------------|--------|
| १४६७  | देवगुप्त सू०           | २३८     | १५८३  | देवगुप्त सू०              | ६६८    |
| १४६८  | कक सू०                 | २१६।४७१ | १६०३  | कक सू०                    | ७१७    |
| १४११  | "                      | १३      |       | <b>उत्तराध गच्छ ।</b>     |        |
| १५१२  | "                      | ४०१।६२३ | १६८०  | ऋ० ताराचन्द्र             | ४६७    |
| १४१५  | "                      | ५३४     |       | <b>[क] छोलीवाल गच्छ ।</b> |        |
| १५१८  | "                      | ५५८     |       | विजयराज सू०               | ५६४    |
| १४२४  | "                      | ५०।२२६  | १५५४  | <b>कडुआमति गच्छ ।</b>     |        |
| १४४५  | सिद्ध सू०              | ५१      |       | ... ..                    | ८०१    |
| १५२६  | कक सू०                 | ६६४     | १६८३  | <b>कमलकलसा गच्छ ।</b>     |        |
| १५२८  | देवगुप्त सू०           | ६२५     |       | रत्न सू०                  | } ६७०  |
| १५४६  | "                      | ३०      | १७८०  | कमलविजय गणि               |        |
| १४४८  | "                      | ६७६     |       | विजयमहेन्द्र सू०          | } ६७१  |
| १५५६  | "                      | ७१०     | १८६१  | हुंमरविजय गणि             |        |
| १५५८  | "                      | ६६७     |       | <b>कृष्णार्षि गच्छ ।</b>  |        |
| १५५९  | "                      | ५६६     |       | प्रसन्नचंद्र सू०          | ४२६    |
| १५५९  | कक सू०                 | ६७२     | १३७६  | जयशेखर सू०                | ५८६    |
| १५६२  | देवगुप्त सू०           | १२८।४६७ | १५०३  | नयचंद्र सू०               | ६८।७६८ |
| १५६३  | "                      | २०      | १५०६  | <b>कोरंट गच्छ ।</b>       |        |
| १५७६  | सिद्ध सू०              | ७४      | १३४०  | नक्षसू० सं०               | } ११५  |
| १५८५  | "                      | १५६     |       | ककसू० पट्टे               |        |
| १६३४  | देवगुप्त सू०           | ६२८     |       | सर्वदेव सू०               |        |
| १६५६  | सिद्ध सू०              | ८६०     | १४७२  | सार्वदेव सू०              | ७६६    |
| १५०१  | कुंकुम सू०             | ७३०     | १५०६  | "                         | ४१७    |
|       | <b>खिवंदणीक गच्छ ।</b> |         |       | ... ..                    | ३७     |
|       | ( उपकेश )              |         |       | कक सू०                    | ६०३    |
| १५२७  | मर्त्त सू०             | १८      | १५५३  |                           |        |
| १५६६  | कक सू०                 | ६६७     | १५७६  |                           |        |

| संवत् | नाम             | लेखांक             | संवत् | नाम               | लेखांक     |
|-------|-----------------|--------------------|-------|-------------------|------------|
|       | स्वरसर गच्छ ।   |                    | १५३६  | "                 | २११२८८     |
| १४१२  | जिनचंद्र सू०    | २३६                | "     | जिनममुद्र सू०     | ६१७        |
|       | हरिप्रभगणि      |                    | १५३७  | "                 | ७३५        |
|       | मोदमूर्त्तिगणि  |                    | १५४८  | "                 | २२०        |
|       | हर्षमूर्त्तिगणि |                    | १५५१  | "                 | ४१         |
| १४३८  | जिनराज सू०      | २११                | १५५३  | "                 | ४६३        |
| १४४१  | "               | ६१५                | १५५८  | जिनहंस सू०        | १०         |
| १४५६  | "               | ५८३                | १५६०  | "                 | ४४७        |
| १४६६  | जिनवर्द्धन सू०  | २ २                | १५६३  | "                 | २८६        |
| १४७६  | जिनभद्र सू०     | ४६५                | १५६५  | "                 | १८७        |
| १४८४  | "               | ११६                | १५६८  | "                 | ४६६१६३     |
| १४९५  | "               | २७५                | १५७६  | "                 | ४२         |
| १४९७  | "               | ८                  | १५७६  | "                 | ५६५        |
| १५०३  | "               | ६२०                | १६५६  | जिनचन्द्र सू०     | ७८०        |
| १५०४  | "               | ७३१                | १६५७  | "                 | ४३         |
| १५०७  | "               | २१४१४७३१७६७        | १६६१  | "                 | ५२३        |
| १५०६  | "               | ५०६१७३२१७३३        | १६६६  | "                 | ७२३        |
| १५११  | "               | १२१                | १६६८  | "                 | १३५        |
| १५१२  | "               | ४७८                | १६६६  | "                 | ७७३        |
| १५१५  | "               | १२६१७५६            | १६७६  | जिनराज सू०        | ७४७        |
| "     | जिनचन्द्र सू०   | ४७                 | १६७७  | जिनराज सू०        | ७७१७८५१७८७ |
| १५१७  | "               | ५५६                | १६८६  | "                 |            |
| १५१६  | "               | १०३१८६१२१५१२१७१४१६ |       | ड० अमयधर्म        | } २७१      |
| १५२८  | "               | २१८१ ६१०           | १६८८  | "                 |            |
| १५२९  | "               | ७८                 | १६९०  | जिनराज सू०        | } १६०      |
| १५३२  | "               | १०७                |       | ड० कमल लाभ        |            |
| १५३४  | "               | ४४५                |       | पं० लक्ष्मीर्त्ति |            |
| १५३५  | "               | ५६२                |       | पं० राजहंस        |            |

| संवत् | नाम             | लेखांक      | संवत्   | नाम               | लेखांक       |
|-------|-----------------|-------------|---------|-------------------|--------------|
| १८२१  | जिनलाम सू०      | ६००         | १५२७    | "                 | १८५२         |
| १८४४  | जिनचन्द्र सू०   | ४५          | १५२८    | "                 | ६६२          |
|       | वा० अमृतधर्म    |             | १५३१    | "                 | २८४          |
|       | वा० क्षमाकल्याण |             | १५५१    | "                 | १४४          |
| १८४८  | जिनचन्द्र सू०   |             | ६२७।६३३ | १५२४              | श० कमलस्यम   |
| १८४६  | "               | ३५८         | १५२७    | "                 | २५८          |
| १८५६  | "               | १३८।१४४     | १५६२    | जिनतिलक सू० पट्टे | ४१४          |
| १८५५  | जिनहर्ष सू०     | ३३८         |         | जिनराज सू०        |              |
| १८६१  | "               | ६३          |         | श्रीमि:           |              |
| १८७१  | "               | ८७।५२७      | १५६६    | जिनचंद्र सू०      | २६०।५२४      |
| १८७४  | "               | २६१।२६२।५२५ | १५६७    | "                 | ५६७          |
| १८८५  | "               | १६६         | १५७१    | जिनरत्न सू०       | १६२          |
| १८७७  | "               | २२४।३३८।३४० | १६६६    | आचार्य्य सिंह सू० | ७२३          |
| १९००  | जिनसौभाग्य सू०  | १२।३०६      | १६८६    | रत्नतिलक सू०      | १६६।२७२      |
| १९०३  | "               | }           |         | वा० लब्धिलेन गणि  |              |
|       | पं० हीराचंद     |             | ६६६     | १७०७              | कल्याणकीर्ति |
| १९०४  | जिनसौभाग्य सू०  | ५६६         | १७८०    | जिनरंग सू०        | २०५          |
| १९०७  | "               | १४७         | १७६७    | "                 | २०२          |
| १९१०  | "               | ३४७         | "       | वा भुवनचंद्र      | २०३          |
| १९५७  | जिनकीर्ति सू०   | ३८५         |         | जिनकीर्ति सू०     | ६३६          |
| १५०४  | वा० शुभशीलगणि   | १७१।२३६।    | १८०३    | करमचन्द्र         |              |
|       |                 | २५६।२७०     |         | हरखचन्द्र         |              |
| १६११  | धर्मसुन्दरगणि   | ७७०         |         | प्रतापसी          |              |
| १८५७  | उ० हीरधर्मगणि   | ४२५         | १८२१    | महेंद्रसागर सू०   | ६७           |
| १५१५  | जिनसुन्दर सू०   | ४८०         | १८४६    | रूपचिन्मय         | २०६          |
| १५१६  | "               | ४८२         |         | श० रत्नसुन्दरगणि  | ६८           |
| १५१६  | जिनहर्ष सू०     | ४८।१६१।     | १८७६    | कीर्त्युदयगणि     | ३८०          |
|       |                 | २१६।२८१।४१८ | १८७७    |                   |              |

| संवत् | नाम  | लेखांक               | संवत्                | नाम                               | लेखांक            |
|-------|--|----------------------|----------------------|-----------------------------------|-------------------|
| १८८८  | जिनअक्षय सू० पट्टे }<br>जिनचन्द्र सू० }                      | ३४३                  | १५०३                 | जरपत्नीयगच्छ }<br>उदयचन्द्र सू० } | ३६६               |
| १८८९  | जिनमहेंद्र सू० }<br>कुशलचन्द्रगणि }                          | २००१३४५              | १५३२                 | सागरनंद सू०                       | ५९२               |
| १९००  | जितनंदिवर्धन सू० }<br>बा० विनयविजय शिष्य }<br>पं० फीत्युदय } | २४२१-२४३१<br>२६३-२६७ | १४७५<br>१४८५<br>१४८६ | सोमसुंदर सू०<br>"<br>"            | १३१<br>८३६<br>४६६ |
| १९११  | जिनमहेन्द्र सू०  | २४४-२६८।६३४          | १४८६                 | "                                 | ७०८               |
| १९१२  | "  | ३६६                  | १४६६                 | "                                 | ५५३।७०३           |
| "     | सु० मोहनचन्द्र   | ६४६                  | १४६६                 | "                                 | ६७७               |
| १९२६  | जिनकल्याण सू०  | ५२८                  | १४८९                 | रत्नसिंह सू०                      | ६६                |
| १९७२  | जिनरत्न सू०  | ५२६                  | १४६६                 | "                                 | ६७४-६७६           |
|       | चैन्द्र गच्छ ।   |                      | १४८३                 | भुवनसुंदर सू०                     | ५४८               |
| १९३६  | पूर्णमद्र सू०  | ८६६                  | १४८५                 | हेमहंस सू०                        | ३३                |
|       | चंद्रप्रभाचार्य गच्छ ।                                       |                      | १४६०                 | "                                 | ६२२               |
| १९६०  | ... ..   | ४५६                  | १५०७                 | "                                 | ७०४               |
|       | चित्रवाल गच्छ ।  |                      | १५०१                 | मुनिसुन्दर सू०                    | ६४७।६६८           |
| १५०६  | मुनितिलक सू०   | २१३                  | १५०३                 | जयचन्द्र सू०                      | ६२१               |
| १५०८  | "  | २७७                  | १५०४                 | "                                 | ४७५               |
| १५१३  | दोणाकर सू०   | १०१                  | १५०६                 | उदयनंदि सू०                       | ४७७               |
| १५२९  | सोमकीर्ति सू०  | ४३२                  | "                    | रत्नशेखर सू०                      | ४७७               |
| १५४८  | सोमदेव सू०   | ६७५                  | १५१०                 | "                                 | ४।२६।७७५          |
| १६८६  | रत्नचंद्र सू० }<br>बा० तिलकचंद्रमु० }                        | ८३०                  | १५१२                 | "                                 | ४०५               |
|       | चैत्र गच्छ ।   |                      | १५१३                 | "                                 | ८१८               |
| १५३३  | अजितदेव सू०  | ६३५                  | १५१३                 | "                                 | २७६।७४२           |
| १५१८  | गुणाकर सू०   | ९९२                  | १५१५                 | "                                 | ४०।५७३।६२६        |
|       |  |                      | १५१६                 | "                                 | ३९२               |
|       |  |                      | १५१३                 | रत्नसिंह सू०                      | ३४                |

| संवत् | नाम                | लेखांक          | संवत् | नाम             | लेखांक     |
|-------|--------------------|-----------------|-------|-----------------|------------|
| १५१२  | विजयतिलक सू० पद्ये | ७८७             | १५३६  | "               | ४२०        |
|       | विजयधर्म सू०       |                 | १५४६  | "               | ७६६        |
| १५१७  | लक्ष्मीसागर सू०    | २८०।४८३         | १५५१  | "               | ७८७        |
| १५१६  | "                  | ६६३५            | १५४५  | सोमरत्न सू०     | ४६०        |
| १५२१  | "                  | ४४४।५३५         | १५७०  | "               | ४२१        |
| १५२२  | "                  | ५८६             | १५५२  | सोमसुन्दर सू०   | ७७६        |
| १५२३  | "                  | १४              |       | इन्द्रनन्दि सू० |            |
| १५२४  | "                  | १०५।१०६।२८३।५६० |       | कमलकलश सू०      | १५         |
| १५२५  | "                  | ४८४।६२४         | १५५३  | हेमविमल सू०     |            |
| १५२७  | "                  | ३८८।७३६         |       | कमलकलश सू०      | ६४६        |
| १५२६  | "                  | ६६३             | १६०३  | कमलकलश सू०      |            |
| १५३०  | "                  | ७०।४८५।६२४      | १५५६  | हेमविमल सू०     | ५८०        |
| १५३२  | "                  | ७७७             | १५६४  | "               | ११         |
| १५३३  | "                  | ५८।३६६          | १५६६  | "               | २८१        |
| १५३४  | "                  | ३६।५३           | १६७१  | "               | ६४६        |
| १५३५  | "                  | ५७०             | १५७६  | "               | ६६६        |
| १५३६  | "                  | ७३।४४६          |       | पं० अनन्तहंसगणि |            |
| १५३७  | "                  | ४८६             | १५७०  | वनरत्न सू०      | ५४७        |
| १५३६  | "                  | २२२             | १५७६  | सौभाग्यसागर सू० | २६३        |
| १५३७  | हेमसमुद्र सू०      | ७६०             | १५७६  | राजरत्न सू०     | २८४        |
| १५३९  | "                  | ४४३             | १५८२  | वनरत्न सू०      | ६१८        |
| "     | सोमदेव सू०         | ४४४             | १६०३  | विशालसोम सू०    | १५३        |
| "     | हृदयवल्लभ सू०      | ५३६             | "     | विजयदान सू०     | ६४६-६४८    |
| १५३७  | जिनरत्न सू०        | ५३८             | १६१२  | "               | ६५०        |
| १५३२  | "                  | ७५५             | १६११  | हीरविजय सू०     | ७१३        |
| १५२८  | क्षेमसुन्दर सू०    | ७५३             | १६२३  | "               | ६२७        |
| १५३०  | विजयरत्न सू०       | ६५३             | १६२८  | "               | ६६७        |
| १५३२  | हृदयसागर सू०       | ६८२             | १६३०  | "               | २१।८२३।८५५ |

| संवत् | नाम                 | लेखांक          | संवत् | नाम              | लेखांक           |
|-------|---------------------|-----------------|-------|------------------|------------------|
| १६३४  | हीरविजय सू०         | १२४             | १६८१  | जयसागर गणि       | ६०४।६११          |
| १६३८  | "                   | ६०५             | १६८४  | विजयमिंत सू०     | ६०६              |
| १६४४  | "                   | ६२०।६३०         | १६८६  | "                | ८३८।८५६          |
| १६४७  | "                   | ७१४             | १६८७  | "                | ४५५              |
| १६११  | विजयसेन सू० शि०     | }               | १६८८  | "                | ५८२              |
|       | धर्मविजयगणि         |                 | ७१३   | १६६३             | "                |
| १६४३  | विजयसेन सू०         | २२३।५०४         | १६६७  | "                | ११४              |
| १६५२  | "                   | ६८०             | १७०१  | "                | २८५।५०६          |
| १६५३  | "                   | ७८२             | १७६२  | चन्द्रकुशल गणि   | ३३४              |
| १६६७  | "                   | १२०             | १७६५  | विजयरत्न सू०     | ६४३              |
| १६८६  | "                   | ८२६।८२७         | १७७१  | "                | }                |
| १६५३  | विजयसुन्दर गणि      | ७५२             |       | जयविजय गणि       |                  |
| १६५८  | कल्याणविजय गणि      | ११३             | १८०१  | सुमतिचन्द्र गणि  | ६४४              |
| १६६६  | वा० लब्धिसा० उदयसा० | }               | १८०८  | वीरविजय सू०      | १३६              |
|       | सहजसा० जयसा०        |                 | ८७४   | १८४५             | विजयजिनेंद्र सू० |
| १६६८  | विजयसेन सू०         | }               | १८७३  | "                | }                |
|       | विजयदेव सू०         |                 | ७२५   |                  |                  |
| १६७४  | विजयदेव सू०         | ५८१।८५३         | १६०३  | पं० रूपविजय गणि  | ७४४              |
| १६७७  | "                   | ४५२।७५०         | १६४६  | विजयरत्न सू०     | ३५५              |
|       | "                   | ७५५।७८४         |       |                  |                  |
| १६८३  | "                   | ५४२।८०५।६०६     |       |                  |                  |
| १६८४  | "                   | ६०८             |       |                  |                  |
| १६८५  | "                   | ६६४             | १५६६  | इन्द्रनन्दि सू०  | ८४६              |
| १६८६  | "                   | ७८३।८२५।८२६।८३७ | १५७१  | प्रमोदसुन्दर सू० | ८५०।८५१          |
| १६८७  | "                   | ५४७।७५६         | १५९९  | सौभाग्यनन्दि सू० | ५४               |
| १६९४  | "                   | १३०।६६६।६९०     |       |                  |                  |
| १७००  | "                   | ७७२।८२८         |       |                  |                  |
| १७०३  | "                   | ५९४             | १५०५  |                  |                  |

कुतुवपुरा गच्छ ।

[ तपा ]

|                  |         |
|------------------|---------|
| इन्द्रनन्दि सू०  | ८४६     |
| प्रमोदसुन्दर सू० | ८५०।८५१ |
| सौभाग्यनन्दि सू० | ५४      |
| सावकीय गच्छ ।    |         |
| शांति सू०        | ८८७     |



| संवत् | नाम                      | लेखांक | संवत् | नाम                        | लेखांक |
|-------|--------------------------|--------|-------|----------------------------|--------|
|       | <b>त्रिभुविया गच्छ ।</b> |        |       |                            |        |
| १४२०  | धर्मदेव सू० सं०          | ४२७    | १४८३  | सिंहदत्त सू०               | ५२१    |
|       | धर्मरत्न सू०             |        | १५१५  | विनयप्रभ सू०               | ४८१    |
|       | <b>देवानंदिस गच्छ ।</b>  |        | १५१७  | गुणदेव सू०                 | ५१०    |
| १३०३  | सिंहदत्त सू०             | ६८४    | १५२९  | सोमरत्न सू०                | ८१६    |
|       | <b>धर्मघोष गच्छ ।</b>    |        | १५७२  | गुणवर्द्धन सू०             | ६७७    |
| १४०६  | सागरचन्द्र सू०           | ४८६    | १२३५  | शांति सू०                  | ८६२    |
| १४५८  | मलयचन्द्र सू०            | ६०७    | १३२३  | धनेश्वर सू०                | ६०२    |
| १४५९  | "                        | ४१०    | —     | वीरचन्द्र सू०              | ८६६    |
| १४८२  | पद्मशेखर सू०             | ४२८४६६ |       | <b>नाणवाल गच्छ ।</b>       |        |
| १४९२  | "                        | ५५२    | १५३६  | धनेश्वर सू०                | १०९    |
| "     | महेन्द्र सू०             | ५०८    |       | <b>निगमा विभाजक गच्छ ।</b> |        |
| १५०३  | विजयनरेन्द्र सू०         | ५८७    | १५५९  | इन्द्रनदि सू०              | ४०५    |
| १५०५  | साधुरत्न सू०             | १७     |       | <b>पल्लिवाल गच्छ ।</b>     |        |
| १५१७  | "                        | ५      |       | ... ..                     | ५७७    |
| १५८७  | पद्मसिंह सू०             | ४७४    | १५०८  | यश सू०                     | ५३३    |
| १५२६  | महेन्द्र सू०             | ९६३    | १५१३  | नम सू०                     | ५३६    |
| १५२९  | पद्मानन्द सू०            | ७७६    | १५२८  | उज्जोयण सू०                | ६७१    |
| १५३३  | "                        | ७३७    | १५५८  | ... ..                     | ७२४    |
| १५५१  | धुण्यवर्द्धन सू०         | ४६२    | १६६८  | ... ..                     | ७२६    |
| १५५२  | "                        | ११०    | १६४८  |                            |        |
| १५५४  | "                        | ६०२    |       | <b>पवीर्य गच्छ ।</b>       |        |
| १५५६  | मंदिवर्द्धन सू०          | ५६५    | १५०७  | यशोदेव सू०                 | ४१२    |
| १५७०  | उदयप्रभ सू०              | ३८     |       | <b>पार्श्वनाथ गच्छ ।</b>   |        |
| १५८७  | नयचंद्र सू०              | २६     | १७८६  | ... ..                     | ३१६    |
|       | <b>नागेंद्र गच्छ ।</b>   |        | १८२१  | ... ..                     | ८३     |
| १०८८  | ... ..                   | ७६२    | १८३०  | जिनहर्ष सू०                | ५६     |
| १४४६  | रत्नप्रभ सू०             | ६८६    | "     | भातुचन्द्र सू०             | ६०     |

| संवत् | नाम                     | लेखांक | संवत् | नाम                    | लेखांक  |
|-------|-------------------------|--------|-------|------------------------|---------|
|       | <b>पिप्पल गच्छ ।</b>    |        | ११८५  | यशोमद्र सू०            | १०१     |
| १२०८  | विजयसिंह सू०            | ८६६    | १४३६  | पुष्पिमागर सू०         | ५७२     |
| १४६५  | वीरप्रभ सू०             | "      | १४४६  | हेमनिलक सू०            | ८६८     |
| १४६९  | उदयदेव सू०              | ४३०    | १४५६  | उदयानंद सू०            | १५      |
| १५१३  | गुणरत्न सू०             | ६०८    | १५१९  | विमल सू०               | ११७     |
| १५३६  | अमरचन्द्र सू०           | ६      | १५१७  | उदयप्रभ सू०            | ५८८     |
| १७७८  | धर्मप्रभ सू०            | ६६५    | १५१६  | वीर सू०                | १०४१६६३ |
|       | <b>पूर्णिमा गच्छ ।</b>  |        | १५२०  | शीलगुण सू०             | ४२२     |
| १४७६  | जिनवल्लभ सू०            | ३      | १५६६  | गुणसुन्दर सू०          | ४४८     |
| १५११  | जयचंद्र सू०             | ६६२    |       | <b>भावहार गच्छ ।</b>   |         |
| १५१५  | "                       | ६२८    | १४६६  | वीर सू०                | ६१६     |
| "     | महितिलक सू०             | ४:३    | १५३२  | भावदेव सू०             | ११८     |
| १५१६  | साधुरत्न सू०            | ५५४१   |       | <b>भिक्षमाल गच्छ ।</b> |         |
| १५१६  | जयभद्र सू०              | ४३     |       | ...                    | ८१६     |
| १५२२  | विजयचन्द्र सू०          | ७२     | १५    |                        |         |
| १५२८  | "                       | ३५     |       | <b>मलधारि गच्छ ।</b>   |         |
| १५२७  | साधुसुन्दर सू०          | ७६८    | १२५८  | देवनंद सू०             | ८६      |
| १५३२  | "                       | ५६१    | १३७८  | तिलक सू०               | ६८४     |
| १५३१  | पुण्यरत्न सू०           | ६६     | १४८५  | विद्यासागर सू०         | ४०६     |
| १५६३  | ...                     | ५६५    | १५१२  | गुणसुन्दर सू०          | ६०९     |
| १५७७  | मुनिचन्द्र सू०          | १३२    | १५४६  | गुणकीर्ति सू०          | ४१३     |
| १५६८  | विनयचन्द्र सू०          | ६०४    | १५५३  | श्री सू०               | ४६४     |
| १६००  | मुनिरत्न सू०            | ५५     | १५५८  | लक्ष्मीसागर सू०        | ६४८     |
|       | <b>प्रभाकर गच्छ ।</b>   |        | १५७०  | "                      | ५९६     |
| १५७२  | लक्ष्मीसागर सू०         | ७६४    |       | <b>महाहृदय गच्छ ।</b>  |         |
|       | <b>ब्रह्मणीय गच्छ ।</b> |        | १५०७  | नयकीर्ति सू०           | ६२२     |
| ११४४  | ...                     | ८११    | १५५६  | मतिस्तुन्दर सू०        | ४६६     |

| संघत् | नाम                       | लेखांक  | संघत् | नाम                      | लेखांक  |
|-------|---------------------------|---------|-------|--------------------------|---------|
|       | <b>महुकर गच्छ ।</b>       |         |       | <b>विधिपक्ष गच्छ ।</b>   |         |
| १५२७  | धनप्रम सू०                | ६६५     | १५०५  | जयकेशर सू०               | ६५६     |
|       | <b>यशसूरि गच्छ ।</b>      |         |       | <b>वृद्धुपीसल गच्छ ।</b> |         |
| १२४२  | ...                       | ५३०     | १८८१  | आनंदसोम सू०              | ६८५     |
|       | <b>रुद्रपल्लीय गच्छ ।</b> |         |       | <b>वृहद् गच्छ ।</b>      |         |
| १४५४  | देवसुन्दर सू०             | ४६१     | १२१५  | पं० पद्मचन्द्र गणि       | ८३३।८३४ |
| १५०१  | सोमसुन्दर सू०             | ६६०     | १२६०  | शांतिप्रम सू०            | ७०२     |
| १५१६  | "                         | १२२     | १३१६  | जयमङ्गल सू०              | ६४३।६४४ |
| १५२५  | "                         | ७३४     | १४३३  | विनयचंद्र सू०            | ८५८     |
| १५३२  | गुणसुन्दर सू०             | ५७६     | १४३८२ | अमरप्रम सू०              | ३६      |
| १५६६  | च० गुणप्रम                | ५०१     | १४८६  | प्रम सू०                 | २७४     |
| १६०५  | भावतिलक सू०               | ४६८     | १४६३  | हेमचन्द्र सू०            | ६१६     |
|       | <b>कुंपक गच्छ ।</b>       |         | १५०८  | महेंद्र सू०              | ६८१     |
| १६२५  | ड० सागरचंद्र गणि          | १४८।१५० | १५११  | रत्नाकर सू०              | २३      |
| १६३१  | भजयराज सू०                | १८४।२०७ | १५१८  | महेन्द्र सू०             | ५५६     |
| १६५५  | "                         | २३५     |       | <b>सरवाल गच्छ ।</b>      |         |
| १६३३  | अमृतचंद्र सू०             | १६८।१६८ | १११०  | ...                      | १       |
|       | <b>विजय गच्छ ।</b>        |         |       | <b>संहरक गच्छ ।</b>      |         |
| १७१८  | सुमतिसागर सू०             | ७३८     | १२.८  | ...                      | ८३८     |
| १६३१  | शांतिसागर सू०             | १६७।३४६ | १३५०  | सुमति सूरि               | ५१६     |
|       | ३५१।३५४।३५६।३६०।३६२       |         | १३७६  | "                        | ४१५     |
|       | ३६४।३६६।३६८।३७०।३७२       |         | १४५०  | शांति सू०                | ७५७     |
|       | ३७६।३७८।३८०।३८२।१०००      |         | १४६६  | सुमति सू०                | ७५८     |
|       | <b>विद्याधर गच्छ ।</b>    |         | १४७२  | शांति सू०                | ४६४     |
| १४५६  | सद्यदेव सू०               | ८८६     | १४८३  | "                        | ४६८     |
| १५३४  | हेमप्रम सू०               | ७६८     | १४८६  | "                        | ५४६     |

| संवत् | नाम                       | लेखांक   | [जिनके गच्छोंके नाम नहीं लिखे हैं] |                     |          |
|-------|---------------------------|----------|------------------------------------|---------------------|----------|
| संवत् | नाम                       | नं०      | संवत्                              | नाम                 | नं०      |
| १५०६  | "                         | १५१,१२७८ | ६६६                                | धलभद्र सू०          | ८८८      |
| १५१३  | ईश्वर सू०                 | ७६४      | १०११                               | देवदत्त सू०         | १३४      |
| १५३२  | सालि ( शांति ? ) सू०      | २८०      | १०५३                               | शांतिभद्र सू०       | ८६८      |
| १५३४  | शांति सू०                 | ७५१      | ११४४                               | येन्द्रदेव सू०      | ६१६      |
| १५४५  | "                         | ८२४      | ११४६                               | जिनचन्द्र सू०       | ८८१      |
| १५५७  | "                         | ५६४      | ११५०                               | महेश्वराचार्य       | ३८७      |
| १५६३  | "                         | ६६२      | १२०३                               | महंत सू०            | ८८५      |
| १५६५  | "                         | ५६६      | १२३०                               | भानन्द सू०          | ८७२, ८७३ |
| १५७२  | "                         | ६११      | १२३१                               | नेमिचन्द्र सू०      | ६१२      |
| १५९६  | साल सू०                   | १७०      | १२३४                               | देव सू०             | ७२८      |
| १५९७  | ईश्वर सू०                 | ८५२      | १२३६                               | बुद्धिसागर          | ६०६      |
| १६०३  | शांति सू०                 | ६७८      | १२५१                               | सुमति सू०           | ८७६      |
| १६४१  | उ० नयसुन्दर प०            | ७        | १२५७                               | महेष्ठीराचार्य      | ४०८      |
| १७२८  | देवसुन्दर सूरि            | ७१५      | १२६८                               | रामचन्द्राचार्य     | ८६६      |
| "     | जिनसुंदर सू०              | ७१६      | १२९६                               | पूर्णचन्द्रोपाध्याय | ८६३      |
|       | <b>सागर गच्छ ।</b>        |          | १३१४                               | चन्द्र सू०          | ६८६      |
| १८२०  | अमृतचन्द्र सू०            | ३०४      | १३१८                               | भावदेव सू०          | ५७८      |
| १६०३  | शांतिसागर सू०             | ५६१७     | १३६८                               | धर्मदेव सू०         | ६८३      |
| १६३५  | "                         | ५२६      | १३७३                               | मणिमद्र             | ६८७      |
|       | <b>सिद्धान्तिस गच्छ ।</b> |          | १३७५                               | हेमप्रभ सू०         | ६१       |
| १५६५  | देवसुन्दर सू०             | ५६७      | १३७६                               | महेन्द्र सूरि       | ५४५      |
|       | <b>हुंघड गच्छ ।</b>       |          | १३८७                               | महातिलक सू०         | ६८८      |
| १५३०  | सिंघदत्त सू०              | ६५       | १४२२                               | सूप्रभ सू०          | ८२६      |
|       | उ० शीलकुंजर ग०            |          | १४५३                               | उदयानन्द सू०        | ६१४      |
|       |                           |          | १४३३                               | शुणभद्र सू०         | ४५६      |
|       |                           |          | १४३८                               | जिनराज सू०          | २११      |
|       |                           |          | १४६३                               | जयप्रभ सू०          | ६९०      |

| संवत् | नाम               | नं०   | संवत् | नाम                 | नं० |
|-------|-------------------|-------|-------|---------------------|-----|
| १४७१  | विजयप्रभ सू०      | ६६    | १५३४  | श्री सू०            | ८२२ |
| १४८०  | विद्यासागर सू०    | ५८४   | १५४०  | साधुरत्न सू०        | ७४५ |
| १४८१  | सोमसुन्दर सू०     | ५४६   | १५४७  | श्री सू०            | ५६३ |
| १४८१  | पद्मशेखर सू०      | ५४७   | १५४८  | म० हेमचन्द्र सू०    | ४६१ |
| १४८२  | सुविप्रभ सू०      | } ४६७ | १५५६  | श्री सू०            | १२७ |
|       | वीरभद्र सू०       |       | १५६२  | साधुसुन्दर सू०      | ४८८ |
| १४८६  | हेमहंस सू०        | ६५८   | १५६३  | श्री सू०            | २५  |
| १४८६  | नरसिंह सू०        | ६९१   | १५८०  | सुमतिरत्न सू०       | ७४७ |
| १४८६  | रत्नप्रभ सू०      | ४७०   | १५८६  | सुविहित सू०         | ४८७ |
| १४९०  | हेमहंस सू०        | ४२९   | १६०५  | जिनभद्र सू०         | ५१२ |
| १४९९  | नयचन्द्र सू०      | ६८८   | १६१५  | तेजरत्न सू०         | १६  |
| १५०१  | श्री सू०          | ५८५   | १६४५  | कनकविजय ग०          | १८१ |
| १५०७  | श्री सू०          | ५३२   | १७००  | शुभकीर्ति           | २७  |
| १५०३  | नयचन्द्र सू०      | ६७    | १७०२  | जिनचन्द्र सू०       | १६८ |
| १५१३  | श्री सू०          | ३८३   | १७१०  | विजयानन्द सू०       | ७५  |
| १५१४  | सर्वानन्द सू०     | १०२   | १७२१  | म० हीरविजय सू०      | ८५४ |
| १५१४  | रत्नशेखर सू०      | ६४    | १७६६  | कुराविजय            | ८५५ |
| १५१६  | वा० मोदराज गणि    | ६३१   | १७७१  | विजयशुद्धि सू०      | ३६३ |
| १५१७  | दयारत्न           | ६१३   | १७८०  | कर्पूर विजय ग०      | ८१  |
| १५१८  | पद्मानन्द सू०     | १७५   | १८४१  | श्रीसुन्दर सू०      | ६१३ |
| १५१९  | उदयवल्लभ सू०      | ६६१   | १८४८  | अमृतधर्म            | २४६ |
| १५२०  | म० विजयकीर्ति सू० | ७४६   | १८४८  | अमृतधर्म वाचनाचार्य | ३०५ |
| १५२१  | सुविहित सू०       | ५७४   | १८८३  | विजयजिनेन्द्र सू०   | ७६६ |
| १५२६  | साधुसुन्दर सू०    | १२५   | १८८७  | वा० चारित्रनंदि गणि | ३४१ |
| १५२७  | श्री सू०          | १५२   | १८८८  | जिनचन्द्र सू०       | ३४२ |
| १५२७  | भाजदेव सू०        | ५६१   | १८९७  | वा० चारित्रनन्दन ग० | ४३५ |
|       |                   |       | "     | "                   | ४३६ |

| संवत् | नाम              | लेखांक  | संवत् | नाम                             | लेखांक |
|-------|------------------|---------|-------|---------------------------------|--------|
|       | जिनमहेंद्र सू०   | ४४०     |       | <b>मूलसंघ [ सरस्वती गच्छ ]</b>  |        |
| ११९०  | "                | १६३।१६६ | १५२३  | म० विद्यानन्द                   | ६८०    |
| १६२०  | भसृतचन्द्र सू०   | ५७      | १५२४  | म० विमलकीर्ति                   | ५८०    |
| "     | वा० सदालाभ       | ४४      | १५२५  | विमलेन्द्रकीर्ति                | ६६६    |
| १६२४  | सागरचन्द्र ग०    | १७६     | १६०४  | म० देवेन्द्रकीर्ति              | ३२५    |
| "     | उ० सदालाभ ग०     | १७७     | १६०८  | म० शुभचन्द्र                    | ५०२    |
| १६३०  | सागरचन्द्र ग०    | १७४     | १६३८  | म० मेरुकीर्ति                   | २२१    |
| १६३५  | मुनिपयजय         | १८२।१८३ | १६६०  | विईकीर्ति                       | ४२१    |
| १६३६  | जिनमुक्ति सू०    | } २३३   | १६६६  | ...                             | १५८    |
|       | दालचंद गणि       |         | १७७०  | ...                             | ...    |
| १६५६  | जिनचन्द्र सू०    | १६३     | १७११  | ...                             | ६४०    |
|       | <b>मूलसंघ ।</b>  |         | १७४६  | ...                             | ६४२    |
| १२३६  | गुणमद्र सू०      | ३८८     | १६५०  | कनककीर्ति                       | २३४    |
| १२४६  | जिनचंद्र देव म०  | ३२३     |       | <b>मूलसंघ-नन्दिसंघ ।</b>        |        |
| १५०३  | देवकीर्ति        | २७६     | १४६०  | म० सकलकीर्ति                    | ५५१    |
| १५०४  | जिनचन्द्र सू०    | ४७२     |       | <b>मूलसंघ-काष्ठासंघ ।</b>       |        |
| १५३५  | विद्यानन्द       | २८६     | १७३४  | त्रिभुवनकीर्ति                  | ६४१    |
| "     | म० ज्ञानभूषण     | ४८७     |       | <b>काष्ठासंघ ।</b>              |        |
| "     | "                | ५९३     | १३    | ...                             | ५७१    |
| १५३८  | ...              | ...     | १५३   | <b>काष्ठासंघ [ माथुर गच्छ ]</b> |        |
| "     | ...              | ...     | २८८   | म० रूपचन्द्र                    | ३३६    |
| १५४८  | म० जिनचन्द्र देव | ३२४     | १७३२  | जगत्कीर्ति म०                   | १४५    |
| १५४६  | म० जिनचन्द्र देव | ७६      | १८८१  | राजेन्द्रकीर्ति देव             | ३२७    |
| १५५६  | ...              | ...     | १६१०  |                                 |        |
| १६२७  | मुमतिकीर्ति सू०  | ६३१     |       |                                 |        |
| १६८३  | म० रत्नचन्द्र    | } १५६   |       |                                 |        |
|       | जयकीर्ति उ०      |         |       |                                 |        |